सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 112, नई दिल्ली, मंगलवार 01 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर मेहनत को आदत बना लिया जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

03 मेहनत और समर्पण से ही मिलती है सफलता : अरुण बख्शी

06 अस्पतालों से परे: बायोमेडिकल वेस्ट के अन्य स्रोत

08 27 जुलाई को चलेगी स्वतंत्र भारत गौरव ट्रेन

उम्र पूरी कर चुके वाहनों पर 1 जुलाई से प्रतिबंध, घर बैठे कराएं स्क्रैप; जानें क्या है आसान प्रोसेस

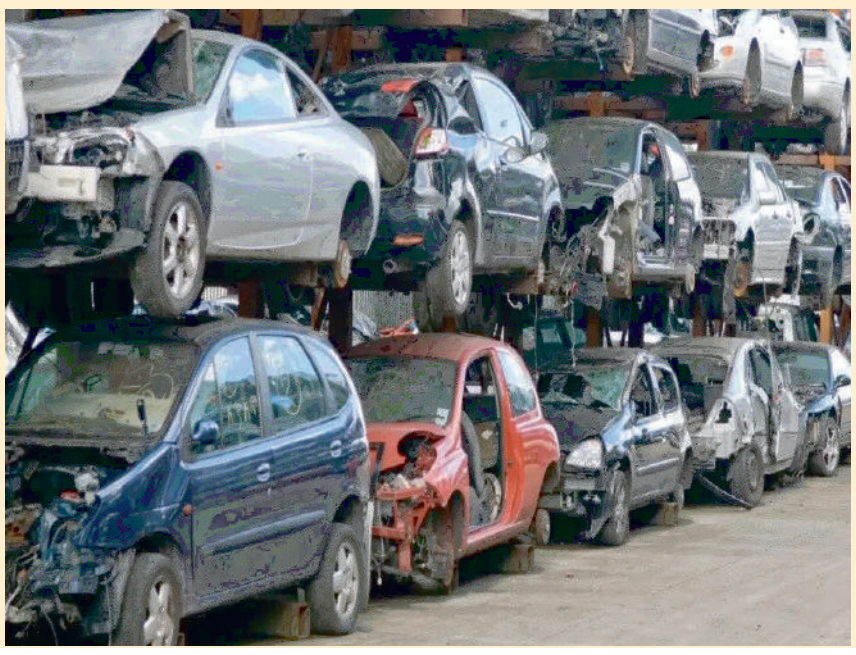

संजय बाटला

अगर आपकी गाड़ी पुरानी हो चुकी है तो उसे घर बैठे स्क्रैप करा सकते हैं। केंद्र सरकार द्वारा अधिकृत आरवीएसएफ यूनिट आपकी मदद करेंगी जिनकी सूची वेबसाइट पर उपलब्ध है। दिल्ली में प्रदूषण के कारण लाइसेंस रद्द कर दिए गए हैं इसलिए हरियाणा और उत्तर प्रदेश में पंजीकृत कंपनियां ही यह काम कर रही हैं। आप चाहें तो दूसरे राज्यों में भी पंजीकरण करा सकते हैं।

नई दिल्ली। अगर आपका वाहन उम्र पूरी कर चुका है तो आप को हम एक बार फिर बता रहे हैं कि ऐसे वाहनों को घर बैठे ही स्क्रैप करा सकते हैं। इसके लिए आपको एनसीआर के शहरों में मौजूद पंजीकृत वाहन स्क्रैपिंग सुविधा (आरवीएसएफ) की मदद लेनी होगी। केंद्र सरकार द्वारा अधिकृत 13 आरवीएसएफ यूनिट वाहनों को स्क्रैप कर रही हैं। इसके लिए https://vscrap.parivahan.gov.in/vehiclescrap/vahan/welcome.xhtml वेबसाइट पर ऑनलाइन वाहन स्क्रैप करवाने के लिए बुकिंग करवाई जा सकती है।

अपने वाहन की फोटो भेजकर भी आप उसके रेट लगवा सकते हैं। दरअसल केंद्र सरकार द्वारा स्क्रैप किए जाने वाले हर वाहन के रेट निर्धारित किए गए हैं। उसी के तहत सरकार द्वारा अधिक्रत ये कंपनियां वाहन खरीदती हैं।आप को बता दें कि सरकार की वेबसाइट पर पूरे देश के स्क्रैप डीलरों की सूची दी गई है। हालांकि कुछ लोग यह आरोप भी लगा रहे हैं कि इन कंपनियों के रेट बाजार भाव से कम हैं।

दरअसल प्रदूषण की समस्या को देखते हुए इस काम के लिए दिल्ली में लाइसेंस नहीं दिया गया है। दिल्ली में यह काम कर रहीं आठ कंपनियों के करीब चार साल पहले लाइसेंस निरस्त कर दिए गए थे। अब दिल्ली की एक भी कंपनी इस काम में नहीं है। प्रदूषण के चलते पर्यावरण विभाग ऐसी वर्कशाप को अनुमति नहीं देता है, जबकि नए नियम के अनुसार जिस राज्य में स्क्रैप डीलर का लाइसेंस है उसी राज्य में उसका वर्कशाप भी होनी अनिवार्य है।

ऐसे में हरियाणा और उत्तर प्रदेश में पंजीकृत कंपनियां हैं।इन कंपनियों के कार्यालय दिल्ली में हैं और उनके मोबाइन नंबर भी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। फोन पर सूचना देकर भी कंपनियों को बुलाया जा सकता है।विभाग के अनुसार वेबसाइट पर जाकर आवेदन करने से आरवीएसएफ की लिस्ट सामने आ जाएगी और वाहन का फोटो भेजकर रेट तय किए जा सकते हैं। डीलर आवेदक के घर से कार ले जाएंगे।

दूसरे राज्यों में भी करा सकते हैं पंजीकृत

उम्र पूरी कर चुके वाहनों के लिए दूसरा विकल्प यह भी मौजूद है कि लोग अपने ऐसे वाहन को दूसरे राज्यों के उन शहरों में भी पंजीकृत करा सकते हैं जहां ऐसे वाहनों को चलाए जाने की अनुमति है।परिवहन विभाग के एक अधिकारी ने कहा कि लोग आवेदन करें विभाग ऐसे वाहनों को एनओसी देने के लिए तैयार है।

ऐसे में हरियाणा और उत्तर प्रदेश में पंजीकृत कंपनियां हैं।इन कंपनियों के कार्यालय दिल्ली में हैं और उनके मोबाइन नंबर भी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। फोन पर सूचना देकर भी कंपनियों को बुलाया जा सकता है।विभाग के अनुसार वेबसाइट पर जाकर आवेदन करने से आरवीएसएफ की लिस्ट सामने आ जाएगी और वाहन का फोटो भेजकर रेट तय किए जा सकते हैं। डीलर आवेदक के घर से कार ले जाएंगे।

दूसरे राज्यों में भी करा सकते हैं पंजीकृत

उम्र पूरी कर चुके वाहनों के लिए दूसरा विकल्प यह भी मौजूद है कि लोग अपने ऐसे वाहन को दूसरे राज्यों के उन शहरों में भी पंजीकृत करा सकते हैं जहां ऐसे वाहनों को चलाए जाने की अनुमति है।परिवहन विभाग के एक अधिकारी ने कहा कि लोग आवेदन करें विभाग ऐसे वाहनों को एनओसी देने के लिए तैयार है।

दिल्ली पुलिस की ताबड़तोड़ कार्रवाई, इस साल 18 हजार से अधिक गाड़ियों को किया जब्त; ANPR कैमरे लगाए गए

दिल्ली में 1 जुलाई से पुराने वाहनों को पेट्रोल पंप पर ईंधन नहीं मिलेगा क्योंकि सरकार ने सभी पेट्रोल पंपों पर ऑटोमैटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन कैमरे लगाए हैं। यातायात पुलिस ने भी पुरानी गाड़ियों की धरपकड़ तेज कर दी है और इस साल 19 जून तक 18 हजार से ज्यादा गाड़ियां जब्त की हैं। दिल्ली में प्रदूषण को कम करने के लिए दिल्ली पुलिस लगातार प्रयासरत है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली में 1 जुलाई से उम्र दराज गाड़ियों को पेट्रोल पंप पर ईंधन नहीं देने के आदेश जारी किए गए हैं। सरकार की ओर से सभी पेट्रोल पंप पर आटोमैटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन (एएनपीआर) कैमरे लगाए गए हैं, जो इन वाहनों की पहचान करेंगे।

इसके अलावा यातायात पुलिस ने भी 10 से 15 साल पुरानी गाड़ियों की धरपकड़ तेज कर दी है। यही वजह है कि यातायात पुलिस ने इस वर्ष 19 जून तक 18 हजार से अधिक उम्र दराज गाड़ियों को जब्त किया है। आंकड़ों के हिसाब से देखें तो 10 से 15 साल पुरानी हो चुकी 100 गाड़ियों को हर दिन जब्त किया गया।

लगभग 18 हजार 343 गाड़ियों को जब्त कर चुकी

यातायात पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक, दिल्ली यातायात पुलिस 2023 से लगातार उम्र दराज गाड़ियों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए उन्हें जब्त कर रही है। 2023 के मुकाबले बीते वर्ष में यातायात पुलिस ने लगभग 6 महीने में 22 प्रतिशत अधिक पुरानी गाड़ियों को जब्त किया। इस वर्ष भी पुलिस की ओर से कार्रवाई का सिलसिला जारी है और 19 जून तक उम्र दराज हो चुकीं लगभग 18 हजार 343 गाड़ियों को जब्त कर चुकी है।

यातायात पुलिस के एडिशनल कमिश्नर दिनेश कुमार गुप्ता के मुताबिक, 2023 में 19 जून तक उम्र पूरी कर चुकीं करीब 528 गाड़ियों को जब्त किया गया था। इसके बाद

बीते वर्ष में समान अवधि में उम्र दराज गाड़ियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की गई और 11 हजार 916 गाड़ियों को जब्त किया गया।

पुलिसकर्मी ऐसी गाड़ियों पर खास नजर रखते हैं

उन्होंने बताया कि यातायात पुलिस की लगातार यह कोशिश रहती है कि दिल्ली में प्रदूषण फैलाने वाली गाड़ियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाए। पुलिसकर्मी ऐसी गाड़ियों पर खास नजर रखते हैं जो उम्र पूरी होने बाद भी दिल्ली की सड़कों पर दौड़ रही हों। इसके अलावा आला अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वह अपने अपने जोन में अपने स्टाफ की मदद से ऐसी गाड़ियों पर नजर रख कार्रवाई करें।

वर्ष	कार्रवाई
2023	528
2024	11,916
2025	18,343

(आंकड़े 19 जून तक के हैं)

दिल्ली में 61 लाख उम्र दराज वाहन

केंद्रीय वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) के आंकड़ों के अनुसार, इस समय दिल्ली में 61 लाख पुराने वाहन हैं, जिनमें 41 लाख दोपहिया वाहन शामिल हैं। वहीं एनसीआर क्षेत्र में यह संख्या 44 लाख के करीब है।

950 करोड़ से चमकेंगी दिल्ली की सड़कें, 415 कि.मी. रोड का होगा कायाकल्प

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली सरकार ने केंद्र सरकार से सड़कों के पुनर्निर्माण के लिए 950 करोड़ रुपये की मांग की है। 415 किलोमीटर लंबी सड़कें जर्जर हालत में हैं जिससे यातायात में परेशानी हो रही है। सरकार ने केंद्रीय सड़क निधि से सहायता की उम्मीद जताई है। इस वित्तीय वर्ष में 500 किलोमीटर सड़कों की मरम्मत का लक्ष्य है। 2026 तक कार्य पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार को विभिन्न सड़कों के पुनर्निर्माण के लिए 950 करोड़ रुपये की जरूरत है। इस संबंध में दिल्ली सरकार ने केंद्र को प्रस्ताव भेजा है। दिल्ली सरकार के एक अधिकारी ने बताया कि 415 किलोमीटर लंबी सड़कें सात-आठ वर्षों से जर्जर हैं। गड्ढे और टूटी परतों की वजह से वाहन चालकों को जाम से जूझना पड़ता है।

उन्होंने कहा कि आप सरकार ने कभी केंद्र की सहायता का लाभ नहीं उठाया, जबकि केंद्रीय सड़क निधि जैसी योजनाएं हैं। इसी निधि से सड़कों को ठीक किया जाएगा। उन्होंने बताया कि दिल्ली में नई सरकार बनने के बाद से अब तक 150 किलोमीटर लंबी सड़कों की मरम्मत की जा चुकी है। करीब 100 किलोमीटर लंबी सड़क पर काम जारी है, जो जल्द पूरा होगा।

इन सड़कों की मरम्मत से सफर होगा आसान

इस वित्तीय वर्ष में सरकार कम से कम 500 किलोमीटर लंबी सड़कों की मरम्मत का लक्ष्य लेकर चल रही है। जिन सड़कों को प्रस्ताव में शामिल किया गया है, उनमें रिंग रोड, आउटर रिंग रोड, मथुरा रोड, महिपालपुर-गुरुग्राम रोड, महरौली बदरपुर रोड, नजफगढ़ ढांसा रोड व नजफगढ़ ककरौला रोड और फ्लाईओवर शामिल हैं।

सड़क मरम्मत के साथ-साथ पैदल यात्रियों के लिए फुटपाथ और नालों का निर्माण भी उसी परियोजना के तहत होगा। निर्माण कार्य ई-निविदा के जरिए होगा और 2026 तक कार्य पूरा करने का लक्ष्य है। दिल्ली सरकार को उम्मीद है कि केंद्र से इस बार आर्थिक सहयोग मिलेगा, जिससे काम तेजी के साथ होगा।

दिल्ली सरकार का मानना है कि राजधानी की सड़कें सिर्फ आने-जाने का माध्यम नहीं बल्कि एक शहर की पहचान होती हैं। अच्छी सड़कें न सिर्फ यात्रा को आसान बनाती हैं बल्कि अर्थव्यवस्था, व्यापार और नागरिकों के जीवन स्तर को भी ऊपर उठाती हैं। यही वजह है कि इस योजना में तकनीकी गुणवत्ता और समय सीमा का विशेष ध्यान रखा जा रहा है. विभाग हर चरण की निगरानी करेगा और निर्माण सामग्री की गुणवत्ता पर भी खास फोकस होगा।

इस वित्तीय वर्ष में सरकार कम से कम 500 किलोमीटर लंबी सड़कों की मरम्मत का लक्ष्य लेकर चल रही है। जिन सड़कों को प्रस्ताव में शामिल किया गया है, उनमें रिंग रोड, आउटर रिंग रोड, मथुरा रोड, महिपालपुर-गुरुग्राम रोड, महरौली बदरपुर रोड, नजफगढ़ ढांसा रोड व नजफगढ़ ककरौला रोड और फ्लाईओवर शामिल हैं।

सड़क मरम्मत के साथ-साथ पैदल यात्रियों के लिए फुटपाथ और नालों का निर्माण भी उसी परियोजना के तहत होगा। निर्माण कार्य ई-निविदा के जरिए होगा और 2026 तक कार्य पूरा करने का लक्ष्य है। दिल्ली सरकार को उम्मीद है कि केंद्र से इस बार आर्थिक सहयोग मिलेगा, जिससे काम तेजी के साथ होगा।

दिल्ली सरकार का मानना है कि राजधानी की सड़कें सिर्फ आने-जाने का माध्यम नहीं बल्कि एक शहर की पहचान होती हैं। अच्छी सड़कें न सिर्फ यात्रा को आसान बनाती हैं बल्कि अर्थव्यवस्था, व्यापार और नागरिकों के जीवन स्तर को भी ऊपर उठाती हैं। यही वजह है कि इस योजना में तकनीकी गुणवत्ता और समय सीमा का विशेष ध्यान रखा जा रहा है. विभाग हर चरण की निगरानी करेगा और निर्माण सामग्री की गुणवत्ता पर भी खास फोकस होगा।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

10 महीने में भी पार्किंग संचालन के लिए एजेंसी नहीं चुन पाई एनडीएमसी, राजस्व का हो रहा भारी नुकसान

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) को पार्किंग संचालन के लिए एजेंसी नहीं मिल रही जिससे राजस्व का नुकसान हो रहा है। अगस्त 2024 से एनडीएमसी स्वयं पार्किंग चला रही है लेकिन कर्मचारियों की कमी और अनुभव की कमी के कारण नागरिकों को परेशानी हो रही है। टेंडर की शर्तों के अनुसार कोई भी कंपनी खरी नहीं उतरी। अब नए सिरे से टेंडर प्रक्रिया शुरू होगी।

नई दिल्ली। दस माह बीत जाने के बाद भी नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) अपनी 155 पार्किंग स्थलों के संचालन के लिए निजी एजेंसी का चयन नहीं कर पाया है। जिसकी वजह से निगम को राजस्व का नुकसान तो हो ही रहा है बल्कि नागरिक भी परेशान हैं।

एनडीएमसी द्वारा निजी एजेंसी के जरिये पार्किंग का संचालन किया जा रहा था, लेकिन अगस्त 2024 में उसके कार्यावधि खत्म हो गई। चिंताजनक बात यह है कि एनडीएमसी ने जो टेंडर की शर्तें बनाई हैं उस पर कोई भी कंपनी खरी नहीं उतर रही है। जिसकी वजह से नए सिरे से निविदा आमंत्रित करने की तैयारी कर रही है।

एनडीएमसी की ओर से अधिकारिक तौर पर पक्ष नहीं आया, लेकिन नाम न उजागर करने की शर्त पर एक अधिकारी ने बताया कि हमने पार्किंग संचालन के लिए टेंडर आमंत्रित किए थे, लेकिन दो ही फर्म इसमें भाग ले सकी लेकिन तकनीक और फाइनेंशनल बिड में यह कंपनियां खरी नहीं उतर पाई।

नए सिरे से शुरू होगी टेंडर की प्रक्रिया

एनडीएमसी को प्राइवेट लिमिटेड कंपनी को पार्किंग संचालन का कार्य देना चाहती है जबकि जो फर्म आई थी वह प्रोप्राइटरशिप में थी। इसलिए एनडीएमसी नए सिरे से टेंडर की प्रक्रिया को शुरू करेगी। साथ ही पूर्व के अनुभवों के आधार पर निविदा की शर्तों में बदलाव भी कर सकती है।

उल्लेखनीय है कि एनडीएमसी को पहले पार्किंग जब निजी कंपनी के हवाले चलती थी तो सवा करोड़ रुपये तक का राजस्व आता था लेकिन उसमें अपने कर्मचारी नहीं लगाने पड़ते थे।

अब एनडीएमसी अपने कर्मचारियों के चलते पार्किंग का संचालन कर रहा तो राजस्व भी पहले मुकाबले सही नहीं आ रहा है और कर्मचारियों का वेतन भी इसी कार्य में जा रहा है। जबकि यह कर्मचारी दूसरे विभागों के हैं जहां से स्थानांतरित करके पार्किंग में तैनात किए गए हैं।

एनडीएमसी के पास 155 पार्किंग स्थल हैं। इसमें 10322 कारों और 4713 दो पहिया व 123 बसों की पार्किंग की सूविधा उपलब्ध हैं।

नागरिकों को हो रही है परेशानी

एनडीएमसी अगस्त 2024 से अपनी सभी पार्किंग का संचालन स्वयं कर रही है लेकिन इसमें जो कर्मचारी लगाए हैं वह पार्किंग विभाग के नहीं है। जिसकी वजह से पार्किंग में नागरिकों को दिक्कत होती है। पार्किंग में वाहन आड़े तिरछे खड़े रहते हैं।

इतना ही नहीं पार्किंग में मौजूद एनडीएमसी कर्मचारी को पहचानना भी मुश्किल होता है क्योंकि कोई भी ड्रेस कोड एनडीएमसी की तरफ से नहीं दिया गया है। कनाट प्लेस में मौजूद एक पार्किंग संचालक ने बताया कि वह बिजली विभाग में कार्यरत थे, लेकिन उनको यहां पर तैनात कर दिया गया है।

हालांकि उन्हें चार पहिया वाहन चलाना नहीं आता है। ऐसे में जो वाहन चालक वाहन पार्किंग में लेकर आते हैं वह अपनी मर्जी से जहां-तहां पार्क कर देते हैं। इससे वाहनों के फंसने और जाम लगने की स्थिति भी उत्पन्न हो जाती है।

एनडीएमसी के द्वारा तैनात कर्मियों की वजह से यहां पर पार्किंग संचालन व्यवस्था ध्वस्त हो गई है। जो लोग तैनात है उन्हें पार्किंग चलाने का कोई अनुभव नहीं है कई लोगों को कार चलानी तक आती नहीं है इसकी वजह से यहां आने वाले ग्राहकों को परेशानी होती है। -

विक्रम बधवार, महासचिव, नई दिल्ली ट्रेडर्स एसोसिएशन

11 खाद्य पदार्थ जो आपकी पर्सनल लाइफ को खत्म कर सकते हैं...

बेहतर यौन और प्रजनन स्वास्थ्य के लिए उन खाद्य पदार्थों से दूर रहें जो आपको सुस्त महसूस कराते हैं और आपकी कामेच्छा को खत्म करते है

सोडा...

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ (एनआईएच) ने अभी एक अध्ययन जारी किया है जो सोडा को अवसाद से जोड़ता है। ₹ओह, लेकिन मैं डाइट सोडा पीता हूँ,₹ आप कहते हैं। कृत्रिम मिठास वाले लोगों के लिए जोखिम और भी अधिक है।

क्या आपने कभी उस उदास आदमी के बारे में सुना है जिसके पास एक घोड़े की कामेच्छा थी?

हाँ, हमारे पास भी नहीं है।

द न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन में प्रकाशित 21,000 से अधिक व्यक्तियों से जुड़े एक अन्य अध्ययन में, यह निष्कर्ष निकाला गया कि चीनी-मीठे पेय पदार्थों का सेवन उन जीनों में हस्तक्षेप कर सकता है जो वजन को प्रभावित करते हैं जिससे व्यक्ति के मधुमेह का खतरा बढ़ जाता है। निर्जलीकरण, और हड्डियों का नुकसान इस पेय के बहुत अधिक पीने के नकारात्मक परिणाम आते हैं

कृत्रिम मिठाइयाँ

आधुनिक खाद्य आपूर्ति की शुरुआत के बाद से एस्पार्टेम के उपयोगकर्ताओं से स्वास्थ्य संबंधी शिकायतों की एक बहुतायत की सूचना मिली है।

यदि आप वजन घटाने के लिए प्रयास कर रहे हैं और आहार उत्पादों (सोडा और मिठाई) का चयन कर रहे हैं, संभावना है कि आप इस पदार्थ का सेवन कर रहे हैं। फिस्के कहते हैं, ₹एस्पेरटम सेरोटोनिन को रोक सकता है और सिरदर्द, अवसाद, चिड़चिड़ापन, चिंता हमलों, अनिद्रा का कारण बन सकता है। सेरोटोनिन को ₹फील गुड₹ हार्मोन माना जाता है और इसकी पर्याप्त आपूर्ति के बिना, मूड और कामेच्छा प्रभावित हो सकती है।₹ यह सिद्ध हो चुका है कि एस्पार्टेम न्यूरोट्रांसमीटर डोपामाइन को प्रभावित कर सकता है, जो सामान्य यौन व्यवहार के लिए उचित मात्रा में आवश्यक है। इसके बजाय कम मात्रा में प्राकृतिक मिठास से चिपके रहें - बस अधिक लिप्त न हों!

डिब्बाबंद सूप

सोडियम, घटिया मांस उत्पादों और मुट्ठी भर कृत्रिम योजकों से भरपूर, डिब्बाबंद सूप केवल आपके आपातकालीन किट के लिए आरक्षित होने चाहिए। अत्यधिक आहार में सोडियम और कम पोटेशियम के सेवन से उच्च रक्तचाप (या उच्च रक्तचाप) हो सकता है जिसके परिणामस्वरूप यौन अंगों सहित शरीर के कुछ हिस्सों में रक्त का प्रवाह कम हो सकता है।

पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए, कामोत्तेजना के समय, यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त रक्त प्रवाह आवश्यक है कि यौन अंग सेक्स के दौरान ठीक से और बेहतर तरीके से काम कर सकें। अत्यधिक सोडियम पर वापस कटौती करें और खरोंच से एक स्वस्थ सूप बनाएं।

कॉफ़ी...

आदतन कॉफी पीने वालों को अपने अधिवृक्क ग्रंथियों को नुकसान पहुंचाने का खतरा होता है, जो कुछ तनाव हार्मोन के उत्पादन के लिए जिम्मेदार होते हैं। फिस्के कहते हैं, ₹समय के साथ, अगर एड्रेनल सामान्य कामकाज में गिरावट आती है, तो शरीर में अन्य हार्मोन, जैसे सेक्स और थायराइड हार्मोन भी प्रभावित हो सकते हैं।₹ तो इसे ज़्यादा मत करो - इसके बजाय अपने दूसरे कप को हर्बल चाय में बदलने पर विचार करें।

एम.एस.जी (मोनोसोडियम ग्लूटामेट)

मोनोसोडियम ग्लूटामेट या एमएसजी, पैकेज्ड खाद्य पदार्थों में और रेस्तरां में एक निश्चित स्वाद और स्वाद प्रोफ़ाइल प्रदान करने के लिए खाद्य योज्य के रूप में उपयोग किया जाता है। हालांकि यह कुछ नमकीन खाद्य पदार्थों में एक वांछनीय स्वाद के लिए योगदान दे सकता है, यह कुछ अवांछनीय स्वास्थ्य प्रभावों के कारण भी जाना जाता है। फिस्के कहते हैं, ₹एमएसजी के सेवन से सिरदर्द, श्वसन संबंधी समस्याएं, अवसाद और संज्ञानात्मक मुद्दे और हृदय संबंधी चिंताएं हो सकती हैं।₹ खराब मस्तिष्क स्वास्थ्य और अवसाद कामेच्छा और समग्र यौन संतुष्टि में गिरावट का कारण बन सकता है। सतर्क रहें -- लेबल और संरक्षक रेस्तरां पढ़ें जो इस हानिकारक स्वाद बढ़ाने वाले का उपयोग नहीं करते हैं।

प्रसंस्कृत - सोया फूड्स

जबकि पूरे, असंसाधित सोयाबीन और यहां तक कि किण्वित सोया (जैसे नाटो, मिसो और टेम्पेह) में कुछ स्वास्थ्य गुण होते हैं, कई सोया उत्पादों को अत्यधिक संसाधित किया जाता है, जिससे उनके लाभकारी यौगिकों को दूर कर दिया जाता है और केवल प्रोटीन छोड़ दिया जाता है। फिस्के कहते हैं, ₹सोया में फाइटोएस्ट्रोजन यौगिक (स्वाभाविक रूप से पाए जाने वाले पौधे पदार्थ जो हार्मोन एस्ट्रोजन की नकल करते हैं) होते हैं जो संभावित रूप से सामान्य अंतःस्रावी कार्य को बाधित कर सकते हैं, जिससे पुरुषों और महिलाओं दोनों में हार्मोन संतुलन प्रभावित होता है।₹ हार्मोनल व्यवधान= कम कामेच्छा, और सामान्य थकान।

आलू के चिप्स और पटाखे

आज भी अधिक प्राकृतिक, ₹स्वस्थ₹ विकल्पों की पेशकश के साथ, इनमें से कई स्नैक्स खराब तेलों में गहरे तले हुए हैं जो संभावित रूप से कार्सिनोजेनिक यौगिक पैदा कर सकते हैं।

फिस्के कहते हैं, ₹यदि यह चिप्स और पटाखे में उपयोग किए जाने वाले ट्रांस-वसा नहीं हैं, तो अन्य अत्यधिक बासी और सस्ते तेलों का उपयोग किया जाता है, और मामले को बदतर बनाने के लिए, उन्हें विनाशकारी तापमान पर गर्म किया जाता है। उच्च गर्मी के साथ खराब वसा का यह संयोजन मानव शरीर के ऊतकों और कोशिकाओं को ऑक्सीडेटिव क्षति पहुंचाएगा, ₹हार्मोन विनियमन (सेक्स हार्मोन सहित), त्वचा के स्वास्थ्य और वजन के रखरखाव में हस्तक्षेप।

पनीर...

ज्यादातर व्यावसायिक रूप से खरीदे गए चीज गाय के दूध से आते हैं जिन्हें एंटीबायोटिक दवाओं और अन्य विकास हार्मोन के साथ इलाज किया जाता है। ₹डेयरी उत्पादों की अधिक खपत हमारे शरीर में इन विषाक्त पदार्थों (हार्मोन) के संपर्क में वृद्धि करेगी, हमारे शरीर में सेक्स हार्मोन (एस्ट्रोजन, प्रोजेस्टेरोन और टेस्टोस्टेरोन) सहित हार्मोन के प्राकृतिक उत्पादन में हस्तक्षेप करेगी। फिस्के कहते हैं, ज़ेनोएस्ट्रोजेन (पर्यावरण और भोजन से ₹खराब₹ एस्ट्रोजेन) का बहुत अधिक संचय यौन रोग और मनोदशा के मुद्दों में योगदान कर सकता है। यदि आप अपनी डेयरी से अलग नहीं हो सकते हैं, तो कम से कम ऐसा पनीर चुनना सुनिश्चित करें जो एंटीबायोटिक या हार्मोन के साथ इलाज किए गए गाय के दूध से न हो।

अल्कोहल...

जबकि शराब मनोवैज्ञानिक अवरोधों को कम कर सकती है और सेक्स की इच्छा को बढ़ा सकती है, क्योंकि शराब एक अवसाद के रूप में कार्य करती है, यह शारीरिक लक्षणों को रोक सकती है और इच्छा की उपस्थिति के बावजूद, यौन गतिविधि के लिए शरीर की क्षमता में बाधा उत्पन्न कर सकती है,₹ नैदानिक मनोवैज्ञानिक डॉ। जूली मुलानी क्रॉनिक कहते हैं शराब का सेवन पुरुषों के लिए विशेष रूप से हानिकारक हो सकता है क्योंकि यह टेस्टोस्टेरोन उत्पादन को कम करता है। ऐसा मत सोचो कि यह सब एक आदमी की बात है। फिस्के कहते हैं, ₹उचित मात्रा में महिलाओं और पुरुषों दोनों में टेस्टोस्टेरोन एक स्वस्थ कामेच्छा का समर्थन करने में मदद करता है।₹ तो आप शायद किसी पर प्रहार करने की हिम्मत है लेकिन ... और कोई कार्रवाई नहीं होगी।

पिज़्ज़ा...

यह सुविधाजनक आराम भोजन इंसुलिन वृद्धि को बढ़ावा देता है। फिस्के कहते हैं, ₹अत्यधिक इंसुलिन डिम्बग्रंथि समारोह को खराब कर सकता है जिससे प्रजनन संबंधी समस्याएं और कठिनाई हो सकती है.. गर्भ धारण करने में।₹ यदि आप अपने भविष्य में एक परिवार देखते हैं, तो पाई बंद कर दें। इसी तरह, गर्भ धारण करने की कोशिश करने वालों के लिए भी खराब तेल खराब हो सकता है। आहार वसा कई रूपों में आते हैं और कुछ फायदेमंद होते हैं, यदि संभव हो तो दूसरों से बचा जाना चाहिए। "खराब गुणवत्ता वाले तेल जैसे कैनोला और अन्य प्रसंस्कृत वनस्पति तेल ऑक्सीकरण के लिए प्रवण होते हैं, जिससे शरीर में मुक्त कण होते हैं। इन वसा को समाप्त करके ऑक्सीडेटिव तनाव को कम करना भी एक महिला की प्रजनन प्रणाली की रक्षा करने और गर्भाधान क्षमता बढ़ाने में महत्वपूर्ण है,₹ फिस्के कहते हैं। नारियल तेल या घी जैसे अधिक स्थिर तेलों के साथ खाना बनाना चुनें और सलाद ड्रेसिंग के लिए अतिरिक्त कुंवारी जैतून के तेल के साथ चिपकाएं।

संस्कृत : कुछ रोचक तथ्य

संस्कृत के बारे में ये 20 तथ्य जान कर आपको भारतीय होने पर गर्व होगा। आज हम आपको संस्कृत के बारे में कुछ ऐसे तथ्य बता रहे हैं, जो किसी भी भारतीय का सर गर्व से ऊंचा कर देंगे;;

1. संस्कृत को सभी भाषाओं की जननी माना जाता है।
2. संस्कृत उत्तराखंड की आधिकारिक भाषा है।
3. अरब लोगो की दखलंदाजी से पहले संस्कृत भारत की राष्ट्रीय भाषा थी।
4. NASA के मुताबिक, संस्कृत धरती पर बोली जाने वाली सबसे स्पष्ट भाषा है।
5. संस्कृत में दुनिया की किसी भी भाषा से ज्यादा शब्द है। वर्तमान में संस्कृत के शब्दकोष में 102 अरब 78 करोड़ 50 लाख शब्द है।
6. संस्कृत किसी भी विषय के लिए एक अद्भुत खजाना है। जैसे हाथी के लिए ही संस्कृत में 100 से ज्यादा शब्द है।
7. NASA के पास संस्कृत में ताड़पत्रो पर लिखी 60,000 पांडुलिपियां है जिन पर नासा रिसर्च कर रहा है।
8. फ़ोर्बस मैगज़ीन ने जुलाई,1987 में संस्कृत को Computer Software के लिए सबसे बेहतर भाषा माना था।
9. किसी और भाषा के मुकाबले संस्कृत में सबसे कम शब्दो में वाक्य पूरा हो जाता है।
10. संस्कृत दुनिया की अकेली ऐसी भाषा है जिसे बोलने में जीभ की सभी मांसपेशियो का इस्तेमाल होता है।
11. अमेरिकन हिंदु युनिवर्सिटी के अनुसार संस्कृत में बात करने वाला मनुष्य बीपी, मधुमेह, कोलेस्ट्रॉल आदि रोग से मुक्त हो जाएगा। संस्कृत में बात करने से मानव शरीरका तंत्रिका तंत्र सदा सक्रिय रहता है जिससे कि व्यक्ति का शरीर सकारात्मक आवेश (PositiveCharges) के साथ सक्रिय हो जाता है।
12. संस्कृत स्पीच थेरेपी में भी मददगार है यह एकाग्रता को बढ़ाती है।
13. कर्नाटक के मुत्तुर गांव के लोग केवल संस्कृत में ही बात करते है।
14. सुधर्मा संस्कृत का पहला अखबार था, जो 1970 में शुरू हुआ था। आज भी इसका ऑनलाइन संस्करण उपलब्ध है।
15. जर्मनी में बड़ी संख्या में संस्कृतभाषियो की मांग है। जर्मनी की 14 यूनिवर्सिटीज़ में संस्कृत पढ़ाई जाती है।
16. नासा के वैज्ञानिकों के अनुसार जब वो अंतरिक्ष ट्रैवलर्स को मैसेज भेजते थे तो उनके वाक्य उलट हो जाते थे। इस वजह से मैसेज का अर्थ ही बदल जाता था। उन्होंने कई भाषाओं का प्रयोग किया लेकिन हर बार यही समस्या आई। आखिर में उन्होंने संस्कृत में मैसेज भेजा क्योंकि संस्कृत के वाक्य उल्टे हो जाने पर भी अपना अर्थ नही बदलते हैं। जैसे

अहम्विद्यालयं गच्छामि।
विद्यालयं गच्छामि अहम्।
गच्छामिअहम्विद्यालयं।
उक्त तीनो के अर्थ में कोई अंतर नहीं है।

17. आपको जानकर हैरानी होगी कि कंप्यूटर द्वारा गणित के सवालो को हल करने वाली विधि यानि एल्गोरिथम्स (Algorithms) संस्कृत में बने है ना कि अंग्रेजी में।
18. नासा के वैज्ञानिको द्वारा बनाए जा रहे 6th और 7th जेनरेशन सुपर कंप्यूटर्स पर आधारित होंगे जो 2034 तक बनकर तैयार हो जाएंगे।
19. संस्कृत सीखने से दिमाग तेज हो जाता है और याद करने की शक्ति बढ़ जाती है। इसलिए लन्दन और आयरलैंड के कई स्कूलो में संस्कृत को कंपलसरी सब्जेक्ट बना दिया है।
20. इस समय दुनिया के 17 से ज्यादा देशो की कम से कम एक यूनिवर्सिटी में तकनीकी शिक्षा के कोर्सेस में संस्कृत पढ़ाई जाती है।

संस्कृत के बारे में ये 20 तथ्य जान कर आपको भारतीय होने पर गर्व होगा।

क्या पिरामिड वास्तव में कैलाश पर्वत से प्रेरित हैं?

कुछ शोधकर्ताओं का मानना है कि मिस्र के महान पिरामिड हिमालय के पवित्र शिखर कैलाश पर्वत से प्रेरित हो सकते हैं। जब आप प्राचीन वास्तुकला को आध्यात्मिक प्रतीकवाद से जोड़ते हैं तो रहस्य और गहरा हो जाता है।कैलाश पर्वत कोई साधारण पर्वत नहीं है, इसे हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म में अक्ष मुंडी या ब्रह्मांडीय केंद्र माना जाता है। इसके प्राकृतिक रूप से पिरामिड जैसे आकार ने ऐसे सिद्धांत गढ़े हैं जो बताते हैं कि इसने दुनिया भर में प्राचीन पिरामिड डिजाइनों को प्रभावित किया है।

दिलचस्प बात यह है कि कैलाश पर्वत के चारों मुख, गीज़ा के पिरामिडों की तरह, मुख्य दिशाओं के साथ एकदम संरेखित हैं। विभिन्न सभ्यताओं में ऐसा सटीक संरेखण सवाल उठाता है: संयोग या प्राचीन ज्ञान?कई प्राचीन संस्कृतियों में पिरामिडों को आध्यात्मिक प्रवेश द्वार के रूप में देखा जाता था। इसी तरह, कैलाश पर्वत को महादेव का निवास माना जाता है, एक दिव्य क्षेत्र जहाँ सांसारिकता दिव्यता से मिलती है।

तिब्बती ग्रंथों में कैलाश पर्वत को ₹स्वर्ग की सीढ़ी₹ कहा गया है। मिस्र की मान्यता के अनुसार, पिरामिडों को फिरौन के लिए परलोक में जाने का मार्ग भी माना जाता था। अलग-अलग भूमि, एक ही प्रतीकवाद।

कैलाश पर्वत और उत्तरी ध्रुव के बीच की दूरी 6,666 किमी है, तथा गीज़ा के पिरामिड ठीक 4,420 किमी दूर हैं; कुछ लोगों का मानना है कि इन संख्याओं का पवित्र ज्यामितीय महत्व है।

महादेव का त्रिशूल तीन मूलभूत शक्तियों, सृजन, संरक्षण और विनाश का प्रतीक है। दिलचस्प बात यह है कि पिरामिड की ज्यामिति पृथ्वी (आधार) और आकाश (शीर्ष) के मिलन का भी प्रतिनिधित्व करती है, जो ब्रह्मांडीय शक्तियों का संतुलन है।

महादेव की तीसरी आँख आंतरिक दृष्टि और उत्कृष्टता का प्रतीक है। प्राचीन मिस्र के लोग तीसरी आँख को दिव्य ज्ञान के रूप में भी जोड़ते थे, जो उच्च जागरूकता और ब्रह्मांड से जुड़ाव का संकेत देता है।

यहां तक कि पिरामिड का आकार भी महादेव के ब्रह्मांडीय नृत्य (तांडव) को दर्शाता है, जो सृजन और विनाश का गतिशील संतुलन है। यह प्राचीन वास्तुकला महादेव की सार्वभौमिक शक्ति का दोहन और प्रतिबिम्बन करने का एक प्रयास है।

कब होगा आपका विवाह, कैसा रहेगा वैवाहिक जीवन?

आपकी हथेली खोलेगी सारे राज

हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार हथेली में कई ऐसी रेखाएं होती है जो आपके पूरे जीवन का हाल बता देती हैं। ऐसी ही एक रेखा होती है विवाह रेखा। यह रेखा न केवल आपके वैवाहिक जीवन के बारे में बताती है बल्कि आपके जीवन के प्रेम संबंध आदि के बारें में भी बताती है। आज के समय में कई लोग अपने प्रेम में सफल होते हैं तो कुछ को प्रेम के मामलों में असफलता हाथ लगती है। आज के समय में हर किसी के पास ये इतना समय नहीं होता कि वो ज्योतिषी के पास जाकर अपने बारे में जान सकें। इसलिए आज हम आपको इन्हीं सब रेखाओं के बारे में बतायेंगे।

हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार हथेली में कई ऐसी रेखाएं होती है जो आपके पूरे जीवन का हाल बता देती हैं। ऐसी ही एक रेखा होती है विवाह रेखा। यह रेखा न केवल आपके वैवाहिक जीवन के बारे में बताती है बल्कि आपके जीवन के प्रेम संबंध आदि के बारें में भी बताती है। आज के समय में कई लोग अपने प्रेम में सफल होते हैं तो कुछ को प्रेम के मामलों में असफलता हाथ लगती है। आज के समय में हर किसी के पास ये इतना समय नहीं होता कि वो ज्योतिषी के पास जाकर अपने बारे में जान सकें। इसलिए आज हम आपको इन्ही सब रेखाओं के बारे में बतायेंगे। हथेली में कहां होती है विवाह रेखा हथेली में कनिष्ठिका उंगुली (सबसे छोटी उंगली) के नीचे और हृदय रेखा के ऊपर तथा बुध पर्वत पर हथेली के बाहर से आनेवाली रेखा विवाह रेखा कहलाती है। कनिष्ठिका उंगली के नीचे वाले भाग को बुध पर्वत कहा जाता है। यह रेखा एक या एक से अधिक भी हो सकती है। रेखा बहुत ही प्रसिद्ध रेखा है अक्सर देखा जाता है कि कुछ लोग में एक से अधिक रेखा को देखकर कहते है कि आपकी दो शादी होगी या आपके एक से अधिक प्रेम संबंध होंगे।

हथेली में प्रेम की रेखा अगर आपके हाथ में एक से अधिक विवाह रेखांए हैं तो यह आपके एक से अधिक प्रेम संबंध के बारें में बताता है। यदि आपकी विवाह रेखा हृदय रेखा के नजदीक से जा रही है तो आप बीस साल की उम्र में ही प्रेम के चक्कर में पड़ जाएंगे।और यदि विवाह रेखा छोटी उंगली तथा हृदय रेखा के मध्य में हो तो बाइस वर्ष अथवा इसके बाद प्रेम का सम्बन्ध का आगमन समझना चाहिए। हथेली में कैसी होनी चाहिए विवाह रेखा हस्तरेखा का एक साधारण सा नियम है कि जो भी रेखा हथेली में बिलकुल स्पष्ट, बारीक, गहराई लिए हुए, तथा सुन्दर हो तो वह अ'छी मानी जाती है। ऐसी रेखा वैवाहिक जीवन में शुभता का संकेत है इसका मतलब आपका वैवाहिक जीवन में कोई भी समस्या नहीं है। यह इस बात की और भी इशारा करता है कि आप और आपके जीवन साथी में काफी प्रेम है।

वहीं दूसरी ओर यही रेखा हथेली में यह रेखा स्पष्ट न हो, टूटी हुई हो, द्वीप बना है, जाला हो तो ऐसी रेखा अ'छी नहीं मानी जाती। ऐसी रेखा आपके जीवन में दाम्पत्य सुखों की कमी को दर्शाती है। इससे यह भी पता चलता है कि आप और आपके साथी के बीच प्रेम की कमी है और आप दोनों को एक दूसरें से सामंजस्य बैठाने में काफी दिक्कतें आ रही है।

विवाह रेखा और वैवाहिक जीवन

1. यदि किसी स्त्री के हाथ में विवाह रेखा के प्रारम्भ में कोई द्वीप का चिह्न बन रहा हो तो उस स्त्री कि शादी में धोखा होने की संभावनाएं रहती हैं। इसके साथ ही यह द्वीप इस बात की ओर भी इशारा करती है कि आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

2. यदि किसी व्यक्ति के हाथ में विवाह रेखा हृदय रेखा को काटते हुए नीचे की ओर चली जाए तो यह अ'छा नहीं माना जाती। ऐसी रेखा जीवन साथी के जीवन में खतरे को बताती है।

&. यदि किसी जातक की हथेली में विवाह रेखा सूर्य पर्वत की ओर जा रही है या वहां तक पहुंच चुकी है तो यह उस बात का संकेत करता है कि उसका जीवन साथी अवश्य ही समृद्ध और सम्पन्न परिवार से होगा या सरकारी नौकरी में होगा।

4. यदि बुध पर्वत से आने वाली कोई रेखा विवाह रेखा को काट दे तो व्यक्ति का दाम्पत्य जीवन में अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

5. यदि किसी पुरुष के बाएं हाथ में दो विवाह रेखा है और दाएं हाथ में एक विवाह रेखा है तो ऐसे लोगों की पत्नी सर्वगुणसम्पन्न होती है तथा इन लोगों की पत्नी पति का बहुत अधिक ध्यान रखने वाली एवं अधिक प्रेम करने वाली होती है और पतिव्रता होती है।

श्री राधा जी के इन 32 नाम

इनका स्मरण अवश्य करना चाहिए। श्री राधा जी के यह नाम रिश्तों को मिठास,ताजगी से भर देते हैं।

राधा रानी के 32 नाम

1. मृदुल भाषिणी राधा !
2. सौंदर्य राषिणी राधा !
3. परम् पुनीता राधा !
4. नित्य नवनीता राधा !
5. रास विलासिनी राधा !
6. दिव्य सुवासिनी राधा !
7. नवल किशोरी राधा !
8. अति ही भोरी राधा !
9. कंचनवर्णी राधा !
10. नित्य सुखकरणी राधा !
11. सुभग भामिनी राधा !
12. जगत स्वामिनी राधा !
13. कृष्ण आनन्दिनी राधा !
14. आनंद कन्दिनी राधा !
15. प्रेम मूर्ति राधा !
16. रस आपूर्ति राधा !
17. नवल ब्रजेश्वरी राधा !
18: नित्य रासेश्वरी राधा !
19. कोमल अंगिनी राधा !
20. कृष्ण संगिनी राधा !
21. कृपा वर्षिणी राधा !
22: परम् हर्षिणी राधा !
23. सिंधु स्वरूपा राधा !
24. परम् अनूपा राधा !
25. परम् हितकारी राधा !
26. कृष्ण सुखकारी राधा !
27. निकुंज स्वामिनी राधा !
28. नवल भामिनी राधा !
29. रास रासेश्वरी राधा !
30. स्वयं परमेश्वरी राधा !
31. सकल गुणीता राधा !
32. रसिकिनी पुनीता राधा !

उल्टी यात्रा

2025 से पीछे चलकर 1960- 1970 के दशक अर्थात बचपन की तरफ़ जो 50 /60 को पार कर गये हैं या करीब हैं उनके लिए है यह खास

मेरा मानना है कि दुनिया में जितना बदलाव हमारी पीढ़ी ने देखा है हमारे बाद की किसी पीढ़ी को ₹शायद ही ₹ इतने बदलाव देख पाना संभव हो।

1. हम वो आखिरी पीढ़ी हैं जिसने बैलगाड़ी से लेकर सुपर सोनिक जेट देखे हैं। बैरंग ख़त से लेकर लाइव चैटिंग तक देखा है और ₹वर्चुअल मीटिंग जैसी₹ असंभव लगने वाली बहुत सी बातों को सम्भव होते हुए देखा है।

2. हम वो पीढ़ी हैं जिन्होंने कई-कई बार मिटटी के घरों में बैठ कर परियों और राजाओं की कहानियां सुनीं हैं। ज़मीन पर बैठकर खाना खाया है। प्लेट में डाल डाल कर चाय पी है।

3. हम वो ₹लोग₹ हैं जिन्होंने बचपन में मोहल्ले के मैदानों में अपने दोस्तों के साथ पम्परागत खेल, गिल्ली-डंडा, छुपा-छिपी, खो-खो, कबड्डी, कंचे जैसे खेल, खेले हैं।

4. हम आखरी पीढ़ी के वो लोग हैं जिन्होंने चांदनी रात में डीबरी, लालटेन या बल्ब की पीली रोशनी में होम वर्क किया है और दिन के उजाले में चादर के अंदर छिपा कर नावेल पढ़े हैं।

5. हम वही पीढ़ी के लोग हैं जिन्होंने अपनों के लिए अपने जज़बात खतों में आदान प्रदान किये हैं और उन ख़तो के पहुंचने और जवाब के वापस आने में महीनों तक इंतजार किया है।

6. हम उसी आखरी पीढ़ी के लोग हैं जिन्होंने कूलर, एसी या हीटर के बिना ही बचपन गुज़ारा है। और बिजली के बिना भी गुज़ारा किया है।

7. हम वो आखरी लोग हैं जो अक्सर अपने छोटे बालों में सरसों का ज्यादा तेल लगा कर स्कूल और शादियों में जाया करते थे।

8. हम वो आखरी पीढ़ी के लोग हैं जिन्होंने स्याही वाली

दवात या पेन से कॉपी किताबें, कपडे और हाथ काले-नीले किये है। तख़्ती पर सेठे की क़लम से लिखा है और तख़्ती धोई है।

9. हम वो आखरी लोग हैं जिन्होंने टीचर्स से मार खाई है और घर में शिकायत करने पर फिर मार खाई है।

10. हम वो आखरी लोग हैं जो मोहल्ले के बुज़ुर्गों को दूर से देख कर नुक्कड़ से भाग कर घर आ जाया करते थे। और समाज के बड़े बूढ़ों की इज़्ज़त डरने की हद तक करते थे।

11. हम वो आखरी लोग हैं जिन्होंने अपने स्कूल के सफ़ेद केनवास शूज़ पर खड़िया का पेस्ट लगा कर चमकाया है!

12. हम वो आखरी लोग हैं जिन्होंने गुड़ की चाय पी है। काफी समय तक सुबह काला या लाल दंत मंजन या सफेद टूथ पाउडर इस्तेमाल किया है और कभी कभी तो तेल-नमक से या लकड़ी के कोयले से दांत साफ किए हैं।

13. हम निश्चित ही वो लोग हैं जिन्होंने चांदनी रातों में, रेडियो पर BBC की ख़बरें, विविध भारती, आल इंडिया रेडियो, बिनाका गीत माला और हवा महल जैसे प्रोग्राम पूरी शिद्दत से सुने हैं।

14. हम वो आखरी लोग हैं जब हम सब शाम होते ही छत पर पानी का छिड़काव किया करते थे। उसके बाद सफ़ेद चादरें बिछा कर सोते थे। एक स्टैंड वाला पंखा सब को हवा देने के लिए हुआ करता था। सुबह सूरज निकलने के बाद भी ढीठ बने सोते रहते थे। वो सब दौर बीत गया। चादरें अब नहीं बिछा करतीं। डब्बों जैसे कमरों में कूलर, एसी के सामने रात होती है, दिन गुज़रते हैं।

15. हम वो आखरी पीढ़ी के लोग हैं जिन्होने वो खूबसूरत रिश्ते और उनकी मिठास बांटने वाले लोग देखे हैं, जो लगातार कम होते चले गए। अब तो लोग जितना पढ़ लिख रहे हैं, उतना ही खुदगर्ज़ी, बेमुरव्वती, अनिश्चितता, अकेलेपन, व निराशा में खोते जा रहे हैं।

16. और हम वो खुशनसीब लोग हैं, जिन्होंने रिश्तों की मिठास महसूस की है... !

17. और हम इस दुनियाँ के वो लोग भी हैं जिन्होंने एक ऐसा ₹अविश्वसनीय सा₹ लगने वाला नजारा देखा है। आज के इस करोना काल में परिवारिक रिश्तेदारों (बहुत से पति-पत्नी, बाप - बेटा, भाई - बहन आदि) को एक दूसरे को छूने से डरते हुए भी देखा है।पारिवारिक रिश्तेदारों की तो बात ही क्या करे खुद आदमी को अपने ही हाथ से अपनी ही नाक और मुंह को छूने से डरते हुए भी देखा है। ₹अर्थी₹ को बिना चार कंधों के श्मशान घाट पर जाते हुए भी देखा है। ₹पार्थिव शरीर₹ को दूर से ही ₹अग्नि दाग₹ लगाते हुए भी देखा है।

18. हम आज के भारत की एकमात्र वह पीढी हैं जिसने अपने ₹ माँ-बाप ₹की बात भी मानी और ₹ बच्चों ₹ की भी मान रहे है।

शादी में (buffet) खाने में वो आनंद नहीं जो पंगत में आता था जैसे

1. सब्जी देने वाले को गाइड करना, हिला के दे या तरी तरी देना!
2. उँगलियों के इशारे से 2 लड्डू और गुलाब जामुन, काजू कतली लेना
3. पूडी छाँट छाँट के और गरम गरम लेना !
4. पीछे वाली पंगत में झांक के देखना क्या क्या आ गया, अपने इधर क्या बाकी है और जो बाकी है उसके लिए आवाज लगाना
5. पास वाले रिश्तेदार के पत्तल में जबरदस्ती पूडी रखवाना!
6. रायते वाले को दूर से आता देखकर फटाफट दोने का रायता पीना।
7. पहले वाली पंगत कितनी देर में उठेगी उसके हिसाब से बैठने की पोजीशन बनाना।
8. और आखिर में पानी वाले को खोजना।

जीवन का सर्वस्व सार है विवेकशीलता। भले विचारशील हों, मन की शांति मात्र विद्वान होने से किसी को नहीं मिलती, यह तो सदाचारी/बोधवान/पवित्राचरण होने से मिलती है।

भीतर यथार्थ विवेक जागने से शांति मिलती है। दूसरों से अपनी तुलना की चेष्टा न करें। अपने विषय में दूसरों की धारणाएं जानने में अपने मन/विचार को दूषित न करें। दूसरों की धारणा का क्या मूल्य है? यहां अच्छे लोगों को बुरा और बुरे लोगों को अच्छा प्रचारित करने/मानने से हमें कोई आत्मबल नहीं मिलता तो हमारी दूसरों पर की गई विवेचना/धारणा भी वास्तविक नहीं हो सकती। इसलिए हमारी दूसरों के लिए और दूसरों की अपनी-अपनी अवधारणाओं का भी हमारे लिए कोई मूल्य नहीं होता। हमें अपने को शुद्ध रखना है। यह कोई समझदारी की बात नहीं है कि कुछ लोग हमें बुरा कह दिये और हम दुखी हो गये और कुछ लोग हमें अच्छा कह दिये और हम सुखी हो गये, इससे बड़ा अविवेक और क्या हो सकता है? इसका मतलब हम अपने आप को परख नहीं पाये हैं। हम अपने विषय में अज्ञानी हैं। यदि हम स्वयं के विषय में समझ रखतें हैं तो दुखी नहीं होंगे। जिस प्रकार संसार के जितने महापुरुष हुए हैं वह दुखी नहीं हुए। उन्हें लोगों ने गालियां दीं, अपमानित किया और उनके संबंध में कल्पित घटनाओं को जोड़-जोड़ कर उन्हें बदनाम करने की चेष्टा भी की, लेकिन महापुरुष ऐसी स्थिति में भी मुस्कुराते रहे। यह हमारे भीतर की कमजोरी है, जो हम बाहर की चीजों/वातावरण/घटनाओं/संबंधों को लेकर द्वंद्वग्रसित होते हैं। हमें चाहिए कि हम अपने आप में आश्वस्त रहें और दूसरों के प्रति विश्वास रखें। यदि दूसरा कोई गलत हो तो वह अपने लिए गलत होगा, लेकिन हमें अपने आप के विषय में आश्वस्त रहना है और अपना कल्याण साधना है।

दिल्ली के व्यापारियों के लिए खुशखबरी ! लाइसेंस में छूट को लेकर गृह मंत्रालय ने भी जारी की अधिसूचना

दिल्ली के व्यापारियों के लिए राहत की खबर है। गृह मंत्रालय ने लाइसेंस नियमों में छूट की अधिसूचना जारी कर दी है। अब स्विमिंग पूल होटल रेस्टोरेंट और मनोरंजन पार्कों को दिल्ली पुलिस से लाइसेंस लेने की ज़रूरत नहीं होगी। उपराज्यपाल के आदेश पर गृह मंत्री अमित शाह ने तेजी से कार्रवाई की। इस फैसले से व्यवसाय करना आसान होगा और लालफीताशाही कम होगी।

परिवहनविशेष न्यूज

नई दिल्ली। लाइसेंस में छूट को लेकर गृह मंत्रालय ने भी सोमवार को अधिसूचना जारी कर दी है। इससे व्यापारियों को लाभ मिलेगा। गृह मंत्री अमित शाह के निर्देश पर गृह मंत्रालय ने उपराज्यपाल वीके सक्सेना द्वारा 19 जून को जारी किए गए आदेशों को अधिसूचित कर दिया है, जिसके तहत स्विमिंग पूल, भोजनालय, होटल, मोटल, गेस्ट हाउस, डिस्कोथेक, वीडियो गेम पार्लर, मनोरंजन पार्क और ऑडिटोरियम को दिल्ली पुलिस द्वारा लाइसेंस की आवश्यकता से छूट दी गई है।

पुलिस ने उपराज्यपाल द्वारा जारी किए गए आदेशों को गृह मंत्रालय को अधिसूचित करने के लिए भेजा था। गृह मंत्री के हस्तक्षेप से शीघ्र अधिसूचित कर दिया गया।

पुलिस लाइसेंस की आवश्यकता पूरी तरह समाप्त

प्रधानमंत्री द्वारा परिकल्पित व्यापार करने में आसानी और अधिकतम शासन, न्यूनतम सरकार सुनिश्चित करने के उद्देश्य से यह सुधार उपाय, 1980 के दशक में लागू किए गए विनियामक लाइसेंसिंग व्यवस्था के करीब साढ़े चार दशक बाद आया है। सक्सेना की पहल पर अक्टूबर, 2023 में ईटिंग हाउस, होटल, मोटल, गेस्ट हाउस, डिस्कोथेक, वीडियो गेम पार्लर, मनोरंजन पार्क और आडिटोरियम के संबंध में लाइसेंसिंग आवश्यकताओं को आंशिक रूप से उदार बनाया गया था, लेकिन नवीनतम अधिसूचना में उपर्युक्त व्यवसायों के लिए पुलिस लाइसेंस की आवश्यकता को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया है।

अधिसूचना लालफीताशाही को कम करेंगी

यह निर्णय मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता द्वारा प्रधानमंत्री, गृह मंत्री और उपराज्यपाल से मौजूदा लाइसेंसिंग व्यवस्था के कारण शहर में व्यवसायी व उद्यमियों के सामने आने वाली समस्याओं का समाधान करने के अनुरोध के बाद आया है। यह अधिसूचना लालफीताशाही को कम करेंगी, व्यवसायों को सक्षम करेंगी और उत्पीड़न को कम करेंगी, इसका व्यापक प्रभाव पड़ेगा, जिससे उद्यमियों के लिए व्यवसाय करना आसान हो जाएगा।

प्रधानमंत्री द्वारा परिकल्पित व्यापार करने में आसानी और अधिकतम शासन, न्यूनतम सरकार सुनिश्चित करने के उद्देश्य से यह सुधार उपाय, 1980 के दशक में लागू किए गए विनियामक लाइसेंसिंग व्यवस्था के करीब साढ़े चार दशक बाद आया है। सक्सेना की पहल पर अक्टूबर, 2023 में ईटिंग हाउस, होटल, मोटल, गेस्ट हाउस, डिस्कोथेक, वीडियो गेम पार्लर, मनोरंजन पार्क और आडिटोरियम के संबंध में लाइसेंसिंग आवश्यकताओं को आंशिक रूप से उदार बनाया गया था, लेकिन नवीनतम अधिसूचना में उपर्युक्त व्यवसायों के लिए पुलिस लाइसेंस की आवश्यकता को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया है।

अधिसूचना लालफीताशाही को कम करेंगी

यह निर्णय मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता द्वारा प्रधानमंत्री, गृह मंत्री और उपराज्यपाल से मौजूदा लाइसेंसिंग व्यवस्था के कारण शहर में व्यवसायी व उद्यमियों के सामने आने वाली समस्याओं का समाधान करने के अनुरोध के बाद आया है। यह अधिसूचना लालफीताशाही को कम करेंगी, व्यवसायों को सक्षम करेंगी और उत्पीड़न को कम करेंगी, इसका व्यापक प्रभाव पड़ेगा, जिससे उद्यमियों के लिए व्यवसाय करना आसान हो जाएगा।

बीजेपी सरकार ने मिडिल क्लास का क्या हाल कर दिया, फीस वृद्धि को लेकर धक्के खा रहे पैरेंट्स - सौरभ भारद्वाज

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली के प्राइवेट स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों के पेरेंट्स फीस वृद्धि पर लगाम लगाने की मांग को लेकर धक्के खाने को मजबूर हैं। पेरेंट्स बीजेपी की दिल्ली सरकार से राहत पाने की उम्मीद किए बैठे हैं लेकिन उन्हें हर जगह से सिर्फ मायूसी मिल रही है। सोमवार को फीस वृद्धि पर रोक लगाने की मांग को लेकर पेरेंट्स सीएम रेखा गुप्ता से मिलने पहुंचे लेकिन पुलिस ने उन्हें गेट पर ही रोक लिया। आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने सीएम रेखा गुप्ता से मिलने पहुंचे पेरेंट्स की एक वीडियो एक्स पर साझा करते हुए कहा कि भाजपा सरकार ने मिडिल क्लास का क्या हाल कर दिया है। प्राइवेट स्कूल मालिकों से मिलीभगत साफ़ है।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि दिल्ली के प्राइवेट स्कूलों के मालिकों और भाजपा सरकार के बीच मिलीभगत साफ़ है, तभी प्राइवेट स्कूल मनमाने तरीके से फीस बढ़ाए जा रहे हैं और सीएम रेखा गुप्ता पेरेंट्स से मिलने को तैयार नहीं हैं। उन्होंने कहा कि अभिभावक परेशान हैं लेकिन सरकार अभिभावकों हित में कुछ भी नहीं कर रही है। इससे शिक्षा माफियाओं और सरकार की गठजोड़ साफ दिखाई दे रहा है।

उधर, आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता और दिल्ली विधानसभा की नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने एक्स पर कहा कि निजी स्कूल शैक्षणिक सत्र के बीच में ही फीस बढ़ा रहे हैं। इससे यह साफ है कि भाजपा की रेखा गुप्ता सरकार ने निजी स्कूलों को फीस बढ़ाने की हरी झंडी दे दी है। वरना ऐसे स्कूलों के खिलाफ कोई कार्रवाई क्यों नहीं की जा रही?

सोशल मीडिया पर अभिभावक गुहार लगा रहे हैं। प्राइवेट स्कूलों की तरफ से उनके पास फीस वृद्धि को लेकर मेल भेजा गया है। उस मेल में यह भी लिखा गया है कि स्कूल फीस वृद्धि के बारे सभी संबधित अधिकारियों और विभागों को पता है। दिल्ली आतिशी ने अभिभावकों को भेजे गए मेल को एक्स पर साझा किया है। उन्होंने कहा कि शिक्षा माफियाओं और भाजपा सरकार की मिलीभगत साफ दिख रही है। इसलिए मनमाना फीस बढ़ा रहे प्राइवेट स्कूलों पर कार्रवाई नहीं हो रही है।

आतिशी ने कहा कि भाजपा की ट्रिपल इंजन की सरकार ने दावा किया था कि दिल्ली में इन प्राइवेट स्कूलों की मनमानी नहीं चलने देंगे। अध्यादेश लेकर आएंगे लेकिन जिस तरह से दिल्ली की ट्रिपल इंजन की सरकार ने अध्यादेश को दिल्ली वालों से छुपा कर रखा है, इससे साफ है कि भाजपा और इन प्राइवेट स्कूलों की मिलीभगत जरूर है।

फन वे लर्निंग एनजीओ की डायरेक्टर गुरजीत कौर ने कुंडली के स्लम एरिया में कंप्यूटर क्लास आयोजित करवाई। कुंडली के ईडब्ल्यूएस (आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग) बच्चों को, जिन्होंने सही उत्तर दिए, उन्हें उपहार भी दिए गए।

मेहनत और समर्पण से ही मिलती है सफलता : एक्टर अरुण बख्शी

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली एक बार फिर एक गौरवपूर्ण और बहुप्रतीक्षित आयोजन की साक्षी बनी, जहां फेस ग्रुप द्वारा आयोजित फेस राष्ट्रीय गौरव अवार्ड 2025 और सौंदर्य प्रतियोगिता 'फेस ऑफ़ इंडिया' सीजन 14 का भव्य आयोजन ली एलिगेंट होटल में संपन्न हुआ।इस 24वें वार्षिक उत्सव में 16 राज्यों के चुनिंदा समाज सेवियों और विशिष्ट अतिथियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के प्रमुख प्रायोजक थे एफएमएस इंफ्राटेक, और आयोजन की अध्यक्षता फेस ग्रुप के चेयरमैन डॉ. मुश्ताक़ अंसारी ने की।

कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई बॉलीवुड अभिनेता व गायक अरुण बख्शी, अभिनेता कुलदीप सरीन, अंतरराष्ट्रीय शायर पॉपुलर मेरठी, सुप्रसिद्ध कवयित्री अना देहलवी, गायक प्रेम भाटिया तथा बॉलीवुड अभिनेत्री आन पाराशर ने, जिनकी उपस्थिति दर्शकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रही।

इस मौके पर पद्मश्री जितेन्द्र सिंह शंटी, विधायक चौधरी जुबैर अहमद, दिल्ली नगर निगम शाहदरा ज़ोन के डिप्टी चेयरमैन राजू सचदेवा, हाशमी ग्रुप ऑफ कंपनीज़ के डायरेक्टर डॉ. हकीम अयाज़ हाशमी एडवोकेट, हमदर्द नेशनल फाउंडेशन के ओएसडी शौकत एच. एच. मुफ़्ती, चिश्तिया सूफ़ी फाउंडेशन अजमेर शरीफ़ के डायरेक्टर सैयद यासिर गुरदेज़ी, मलिक म्यूज़िक इवेंट्स के डायरेक्टर संजय मलिक, ऑल इंडिया सैफ़ी कौंसिल के राष्ट्रीय अध्यक्ष चाँद मोहम्मद सैफ़ी, दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष मोहम्मद उमर सैफ़ी, सर्वोस्टेप पावर के डायरेक्टर हाजी मोहम्मद आलम, सोनम बेकर्स के डायरेक्टर हाजी रियाज़ुद्दीन अंसारी और डॉलफिन फुटवियर के डायरेक्टर सैयद फ़रहत अली भी विशिष्ट अतिथियों के रूप में मंच की शोभा बने।

मंच का संचालन मनभावन अंदाज़ में शायर दानिश अय्यूबी और उज़मा अंसारी ने किया। आयोजन का प्रबंधन फेस ग्रुप के मैनेजर डॉ. बिलाल अंसारी के नेतृत्व में किया गया।

समारोह में 16 राज्यों से चयनित 18 विशिष्ट व्यक्तित्वों को फेस राष्ट्रीय गौरव अवार्ड 2025 से सम्मानित किया गया, जबकि 65 से अधिक अतिथियों को गेस्ट ऑफ ऑनर के सम्मान से नवाज़ा गया।

'फेस ऑफ इंडिया' ब्यूटी कांटेस्ट में लक्ष्मी भार्गव को विजेता घोषित किया गया, जबकि ख़ुशी गर्ग प्रथम रनरअप और ख़ुशी अग्रवाल द्वितीय रनरअप रहीं। इस अवसर पर अरुण बख्शी ने अपने वक्तव्य में कहा, फ़ील्ड चाहे कोई भी हो, सफलता मेहनत और समर्पण से ही प्राप्त होती है। फेस ग्रुप सिर्फ़ उभरते कलाकारों को मंच नहीं देता, बल्कि समाज निर्माण में योगदान देने वाले समाजसेवियों को सम्मानित कर एक मिसाल कायम करता है।

दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ साहिब सिंह वर्मा की पुण्यतिथि पर दिल्ली भाजपा अध्यक्ष एवं अन्य नेताओं ने स्वाभिमान स्थल पर श्रद्धांजली अर्पित की

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली । दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. साहिब सिंह वर्मा की पुण्यतिथि पर आज दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा, दिल्ली सरकार में मंत्री प्रवेश साहिब सिंह, सांसद मनोज तिवारी, योगेन्द्र चंदोलिया एवं बांसुरी स्वराज सहित भाजपा के कई विधायक एवं प्रदेश पदाधिकारियों ने स्वाभिमान स्थल जाकर हवन किया एवं उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा कि डॉ साहिब सिंह वर्मा जी द्वारा दिल्ली देहात में किया विकास और उनके शासनकाल में हुआ दिल्ली का समग्र विकास अद्वितीय हैं जिनको हम कभी भूल नहीं सकते हैं। उनके कुशल नेतृत्व और उनके आदर्श हम सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।

डा. साहिब सिंह वर्मा के अधूरे कार्यों और दिल्ली के विकास को लेकर जो उनके सपने थे उसे दिल्ली भाजपा सरकार पूरा करने का काम शुरु कर चुकी है।

सचदेवा ने कहा कि डॉ साहिब सिंह वर्मा जी ऐसे मुख्यमंत्री थे जो हफ्ते में दो-तीन बार सुबह-सुबह ही दौरे पर निकल जाते थे और लोगों के बीच जाकर उनकी समस्याओं को सुनते थे। यही कारण है कि वह आज भी दिल्ली के लोगों के मन में रचे-बसे हुए हैं।

पूर्व मुख्यमंत्री डॉ साहिब सिंह वर्मा को याद करते हुए दिल्ली सरकार में मंत्री एवं उनके बेटे प्रवेश साहिब सिंह ने कहा कि वह मेरे पिता ही नहीं गुरु भी थे। उनके द्वारा किये कार्य एवं लिये राजनीतिक एवं प्रशासनिक निर्णय आज भी हमें प्रेरणा देते हैं। गरीब, दलित, पिछड़े और किसानों के लिए मसीहा समान डॉ. साहिब सिंह वर्मा की सादगी की मिसालें आज भी दी जाती हैं।

उन्होंने कहा कि दिल्ली देहात के लिए हो या फिर गरीबों के लिए हर वर्ग के लिए उन्होंने काम किया और यही कारण है कि दिल्ली में देहात हो, शालीमार बाग हो या फिर बाहरी दिल्ली दोनों विधानसभा या लोकसभा सदन में अपनी सेवा दी और दिल्ली की भलाई के लिए कार्य किया।

'परंपरा और प्रकृति का संगम' वस्मोल ने रथ यात्रा को सम्मान देते हुए लॉन्च किया हिना क्रीम हेयर कलर

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। भारत के सबसे भरोसेमंद हेयर कलर ब्रांडों में से एक वस्मोल, जो पिछले 60 वर्षों से भारतीय उपभोक्ताओं के बीच अपनी विशेष जगह बनाए हुए है, ने वस्मोल हिना क्रीम हेयर कलर के लॉन्च के साथ एक नया शक्तिशाली अध्याय शुरू किया। यह एक आधुनिक, अमोनिया-फ्री, क्रीम हेयर कलर है, जिसकी जड़ें प्राकृतिक हिना की सदाबहार परंपरा से जुड़ी हैं।

लॉन्च की घोषणा भुवनेश्वर के द मेफेयर लगून में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से की गई, जिसमें प्रमुख मीडिया प्रतिनिधियों, ब्रांड के वरिष्ठ अधिकारियों और पद्मश्री सुदर्शन पटनायक ने शिरकत की। सुदर्शन पटनायक ने ब्रांड के नए अभियान और मूल्यों को दर्शाने वाली एक शानदार रेत की प्रतिमा का अनावरण किया।

जगन्नाथ रथ यात्रा के पवित्र मौके पर शुरू हुए इस कैंपेन की थीम है #RootedInVasmolHenna। यह सुंदरता का जश्न मनाती है, जो परंपरा और अपनी पहचान दोनों का सम्मान करती है। कैंपेन का सबसे खास हिस्सा 22 जून को सुदर्शन पटनायक की बनाई गई शानदार रेत की मूर्ति है। इसमें एक महिला को दो रूपों में दिखाया गया है - हेयर कलर से पहले और बाद में। एक तरफ बालों की सफेदी झलकती है, जबकि दूसरी ओर वस्मोल हिना क्रीम के इस्तेमाल के बाद बाल प्राकृतिक रूप से काले, स्वस्थ और चमकदार दिखते हैं। इस कलाकृति के केंद्र में वस्मोल हिना क्रीम हेयर कलर का पैक है और उसके ऊपर तीन रथों की आकृति रथ यात्रा की आध्यात्मिक भावना को दर्शाती है। यह परंपरा और बदलाव को एक सूत्र में पिरोती है।

वस्मोल की पेरेंट कंपनी, एचआरआईपीएल के मैनेजिंग डायरेक्टर और सीईओ श्री धीरज अरोड़ा ने ब्रांड के विजन के बारे में बताते हुए कहा, "वस्मोल बीते छह दशकों से भारतीय परिवारों का हिस्सा रहा है - न सिर्फ़ आदतों में, बल्कि भावनाओं में भी। हमारा नया प्रोडक्ट वस्मोल हिना क्रीम हेयर कलर परंपरा और आधुनिकता का सुंदर संगम है। यह उत्पाद हमारे उपभोक्ताओं को एक ऐसी देखभाल प्रदान करता है जो उनकी जड़ों से जुड़ी भी है और आज की जीवनशैली के अनुकूल भी है। हमें गर्व है कि अब हर महिला आत्मविश्वास से कह सकती है - 'सुरक्षित रहे मेरे बाल, वस्मोल हिना क्रीम हेयर कलर का कमाल।''

एचआरआईपीएल की सीनियर वाइस प्रेसिडेंट – मार्केटिंग, सुश्री प्रियंका पुरी ने कहा, "यह कैंपेन आत्म-अभिव्यक्ति, परंपरा और पीढ़ियों से चली आ रही सुंदरता की भावनात्मक भाषा से जुड़ता है। #RootedInVasmolHenna के ज़रिए हम सिर्फ़ एक हेयर कलर नहीं, बल्कि उन रिवाज़ों का सम्मान कर रहे हैं जो आज की भारतीय महिला के लिए एक नए रूप में सामने आ रहे हैं। हमारा यह लॉन्च इस सफर का अगला कदम है, जिसमें परंपरा की देखभाल और आधुनिकता की सुविधा एक साथ मिलती है। अब हर महिला कह सकती है: सुरक्षित रहें मेरे बाल, वस्मोल हिना क्रीम हेयर कलर का कमाल, जो दर्शन से पहले और बाद तक सुंदरता बनाए रखता है। पद्म श्री सुदर्शन पटनायक के साथ हमारा रथ यात्रा अभियान सिर्फ एक कैंपेन नहीं, बल्कि भक्ति, आत्मविश्वास और गहरे जुड़ाव की भावना है। यह हर उस महिला से बात करता है जिन्हें अपनी जड़ों से ताकत मिलती है और जो गर्व के साथ वर्तमान को अपनाती है।"

कार्यक्रम में उपस्थित पद्मश्री सुदर्शन पटनायक ने कहा, "रेत एक ऐसा शक्तिशाली माध्यम है जो मिट्टी से निकली कहानियों को आत्मा तक पहुंचा देता है। वस्मोल जैसे ब्रांड के साथ जुड़ना, जो विरासत और सौंदर्य के गहरे भाव से जुड़ा है, मेरे लिए एक विशेष अनुभव रहा। यह कलाकृति परंपरा को सम्मान देने के साथ-साथ यह भी दर्शाती है कि कैसे ये परंपराएं आज की दुनिया में नये रूप में जीवित हैं।"

जैसे-जैसे रथ यात्रा आगे बढ़ती है, वस्मोल भी हर पीढ़ी में विश्वास, परवाह और सुरक्षित हेयर कलर की विरासत को आगे बढ़ाते हुए नए मुकाम हासिल कर रहा है।

कानपुर रथ यात्रा - - - धार्मिक और भक्त कौन , सीएम, डीजीपी, पुलिस कमिश्नर या महंत समर्थक

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां जगन्नाथ रथ यात्रा के दौरान बादशाही नाका थानाध्यक्ष द्वारा कथित रूप से महंत को गाली देने और बाद में इसी मुद्दे को लेकर थाना प्रभारी को सस्पेंड करने के बाद ही रथ यात्रा निकालने के मुद्दे ने धार्मिक आस्था और भगवान पर विश्वास तथा उनके भक्त होने को लेकर को कई सवालों को आध्यात्मिक चर्चा का भी विषय बना दिया है। ऐसा इसलिए क्योंकि आध्यात्मिक दृष्टिकोण के मुताबिक भगवान का वास्तविक भक्त और धार्मिक वह व्यक्ति होता है जो अपने स्वार्थ पूर्ण अहम को संतुष्ट करने वाला कार्य बाद में और भगवान की पूजा, उपासना ,आराधना, वंदना या फिर यात्रा आदि से जुड़े कर्तव्य का निर्वहन सबसे पहले करता है। यानी वास्तविक धार्मिक और भगवान का भक्त वह कदापि नहीं, जो भगवान का कार्य करने से पहले अपने स्वार्थ पूर्ति वाला काम करता है ,जिसके लिए भगवान से बड़ा उसका अभिमान और उसका कार्य होता है। वह कार्य जिसके जरिए अपने प्रभाव और अपने वर्चस्व को लोगों के बीच हर हाल में बनाए रखना चाहता है।

कुछ ऐसी ही सत्यता वाला प्रकरण यहां की जगन्नाथ रथ यात्रा का भी है। जिसमें पहले भगवान का कार्य नहीं वर्चस्व और अपना प्रभाव दिखाने से संदर्भित अपनी स्वार्थ पूर्ति वाला काम पहले किया गया।

इस कथन का संबंध बादशाही नाका थानाध्यक्ष द्वारा कथित रूप से महंत को गाली देने और इसी बात को लेकर थानाध्यक्ष को सस्पेंड कर देने के बाद ही जगन्नाथ रथ यात्रा निकाले जाने से है। यहीं पर सवाल उठाया जा रहा है कि अगर महंत और उनके समर्थक वास्तव में भगवान जगन्नाथ के वास्तविक भक्त या फिर उन पर आस्था रखने वाले वास्तविक धार्मिक लोग थे तो फिर उन्होंने थानाध्यक्ष को सस्पेंड कराने के बाद ही यात्रा क्यों निकाली ? मतलब भगवान जगन्नाथ की यात्रा निकालने वाले धार्मिक कार्य से थाना प्रभारी को सस्पेंड कराने वाला कार्य बड़ा कैसे हो गया ? अगर यह सच नहीं तो थानाध्यक्ष को सस्पेंड करने वाला कार्य पहले और भगवान जगन्नाथ का कार्य बाद में क्यों किया ? अगर यह वर्चस्व और प्रभाव साबित करने वाला स्वार्थ नहीं था तो थाना प्रभारी को सस्पेंड कराने के लिए भगवान जगन्नाथ की यात्रा को माध्यम क्यों बनाया ?

यह कार्य जगन्नाथ यात्रा को संपादित करने के बाद क्यों नहीं किया जा सकता था ?

यह सब सवाल इसलिए क्योंकि आध्यात्मिक दृष्टिकोण के मुताबिक भगवान का वास्तविक भक्त और धार्मिक वह व्यक्ति होता है जो अपने स्वार्थ पूर्ण अहम को संतुष्ट करने वाला कार्य बाद में और भगवान की पूजा, उपासना ,आराधना, वंदना या फिर यात्रा आदि का सबसे पहले करता है। यानी वास्तविक धार्मिक और भगवान का भक्त वह कदापि नहीं, जो भगवान का कार्य करने से पहले अपने स्वार्थ पूर्ति वाला काम करता है।

रही महंत को गाली देने के बदले थाना प्रभारी को सस्पेंड कराने की बात तो महंत का आरोप हर दृष्टिकोण से झूठ की सीमाएं तोड़ने वाला है या नहीं ? महंत बैठक में थे या नहीं ? गाली गलोज करना तो दूर क्या उनकी आरोपित थाना प्रभारी से मुलाकात भी हुई थी या नहीं ? क्या सीसीटीवी फुटेज से भी थानाध्यक्ष द्वारा महंत को गाली देने की बात प्रमाणित होती है ? क्या निलंबित किये गये थानाध्यक्ष लगाए गए आरोपों के संदर्भ में बिल्कुल निर्दोष है या फिर दोषी ? या फिर अपना वर्चस्व और प्रभाव दिखाने की तमन्ना पूरी करने की नापाक कोशिशें पुलिस को फर्जी आरोपों का शिकार बनाने से बाज नहीं आ रही हैं ? इन सवालों का जवाब तो जांच के बाद ही पता चल पाएगा। फिलहाल थाना प्रभारी बादशाही नाका के निलंबन वाली मांग को जिस तरह से जगन्नाथ रथ यात्रा में बाधक नहीं बनने दिया गया। मतलब ऐसा नहीं किया गया कि जांच में सभी आरोपों में दोषी पाए जाने पर ही थानाध्यक्ष को निलंबित किया गया। जांच बाद में और थानाध्यक्ष को निलंबित करके भगवान जगन्नाथ की यात्रा को संपादित करने का कार्य पहले किया गया। इसीलिए भगवान के वास्तविक भक्त और वास्तविक धार्मिक मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, डीजीपी राजीव कृष्ण और यहां के पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार हैं। या फिर वह लोग, जिन्होंने भगवान जगन्नाथ की यात्रा तब तक नहीं निकलने दी, जब तक बगैर जांच के ही थाना प्रभारी को सस्पेंड नहीं कर दिया गया। इसका सटीक जवाब वह सभी जानते हैं , जिन्हें आध्यात्मिकता, धार्मिकता और भक्ति मार्ग की समझ बहुत गहराई से है।

श्रीकृष्ण कृपा धाम में द्वि दिवसीय व्यास पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा) महोत्सव 02 व 03 जुलाई को : (डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

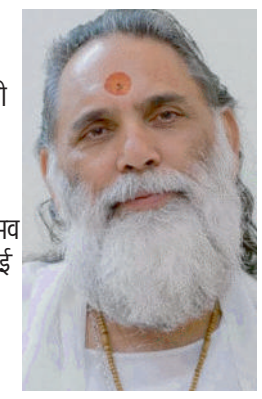

वृन्दावन। परिक्रमा मार्ग स्थित श्रीकृष्ण कृपा धाम में महामंडलेश्वर, गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज के पावन सानिध्य में द्विदिवसीय व्यास पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा) महोत्सव 02 से 03 जुलाई 2025 पर्यन्त अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया जाएगा।

श्रीकृष्ण कृपा धाम के मीडिया प्रभारी डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि महोत्सव के अंतर्गत 02 जुलाई को अपराह्न 03 बजे से सायं 07 बजे तक एवं 03 जुलाई को प्रात: 07 बजे से 11 बजे तक देश-विदेश से आए असंख्य भक्त-श्रद्धालु सदगुरुदेव भगवान का पूजन-अर्चन कर उनसे आशीर्वाद लेंगे।साथ ही महाराजश्री गुरु दीक्षा भी देंगे।

हैदराबाद टैंकर विस्फोट: हैदराबाद में सिगाची केमिकल्स में सोमवार को एक रासायनिक टैंकर विस्फोट में कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई। तेलंगाना केमिकल टैंकर विस्फोट: हैदराबाद में सिगाची केमिकल्स में सोमवार को एक केमिकल टैंकर विस्फोट में कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई। घटना के बारे में अधिक जानकारी तुरंत उपलब्ध नहीं कराई जा सकी। सिगाची इंडस्ट्रीज ने हाल ही में हैदराबाद में एक नया अनुसंधान एवं विकास केंद्र खोला था।

मानसून की चेतावनी मिलने के बाद भी जल भराव वाले स्थानों की जालियों की सफ़ाई मरम्मत सड़कों के गड्ढे रोशनी का इंतजाम पिछले कई महीनों से संबंधित विभागों को सूचना देने के साथ साथ पत्रकारों द्वारा भी जानकारी साझा करते रहे हैं इसके बावजूद भी संबंधित विभागों द्वारा एक दूसरे विभागों की कमी तथा जिम्मेदारी से पल्ला झाड़े रखते हैं अगर नगर निगम बी एंड आर एन एच ए आई इत्यादि वालों की तरफ से अगर बजट एवं अन्य किसी प्रकार की रुकावट आ रही है तो उस बात को आम तौर पर सार्वजनिक रूप से शेयर करनी चाहिए ताकि भविष्य में जन सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए सामाजिक धार्मिक एवं शैक्षणिक संस्थाओ की मदद ले सकते हैं

निवेदक सड़क सुरक्षा संगठन सोनीपत हरियाणा द्वारा

देशभक्ति केवल मंचों और फिल्मों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसके साथ व्यवहारिक प्रतिबद्धता भी होनी चाहिए : समाजसेवी पंकज जैन

जो देश के दुश्मनों के साथ संबंध रखते हैं, वे सच्चे देशभक्त नहीं हो सकते -- समाजसेवी पंकज जैन

आगरा, संजय साग़र सिंह। मशहूर समाजसेवी और राष्ट्रहित में अपनी बेबाक राय रखने के लिए चर्चित समाजसेवी पंकज जैन ने हाल ही में एक गायक और अभिनेता पर तीखा प्रहार किया है। हालांकि उन्होंने नाम नहीं लिया, लेकिन उनके बयान से स्पष्ट है कि उनका निशाना लोकप्रिय कलाकार दिलजीत दोसांझ की ओर था, जिन्होंने हाल ही में पाकिस्तानी अभिनेत्री हानिया आमिर के साथ काम किया है।

समाजसेवी पंकज जैन ने एक भावनात्मक और आक्रोश से भरा संदेश साझा करते हुए कहा, देशभक्ति केवल मंचों और फिल्मों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसके साथ व्यवहारिक प्रतिबद्धता भी होनी चाहिए। "जो देश के दुश्मनों के साथ संबंध रखते हैं, वे सच्चे देशभक्त नहीं हो सकते, वो एक नकली सिंगर है। अगर नहीं है, तो उसने उस पाकिस्तानी अभिनेत्री के साथ काम क्यों किया? जो उस आतंकी दुश्मन देश से ताल्लुक रखती है, जिसने हमारे मासूम नागरिकों को धोखे से मारा है।₹

उन्होंने आगे कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच वर्तमान संबंध तनावपूर्ण हैं, ऐसे में किसी भारतीय कलाकार का इस प्रकार का सहयोग न केवल 'गैर-जिम्मेदाराना' है, बल्कि यह देश और देशवासियों के साथ 'धोखा' भी है। ऐसे दोगले लोगो के करण ही हमारे देश की गरिमा दांव पर लगी है, सुना है कि उसे बॉर्डर 2 जैसी देशभक्ति फिल्म में लिया गया है। यह अत्यंत निंदनीय है कि ऐसे दोगले चेहरे राष्ट्रवादी सिनेमा का हिस्सा बनें।"

श्री जैन ने सवाल उठाया कि क्या भारत केवल उन दोगले लोगों के लिए कमाई का जरिया बनकर रह गया है, जिन्हें देशभक्ति से कोई सरोकार नहीं है। उन्होंने कहा, ₹इन दोगलें कलाकारों को भारत-पाक युद्ध हो या देश की सुरक्षा किसी बात की कोई परवाह नहीं। देश के खिलाफ बोलने वालों के साथ खड़े होकर ये लोग प्रेम और कला के नाम पर राष्ट्रहित को ठेस पहुँचा रहे हैं।"

उन्होंने इस बात पर भी रोष जताया और तीखे शब्दों में कहा कि भारत में रहकर और यही से मोटी कमाई करके जिन दोगलें कलाकारों ने पाकिस्तान के आतंकी रवैये पर चुप्पी साधी है, और उसके विपरीत 'प्रेम' और 'सांस्कृतिक सहयोग' की दोगली बातें कर रहे हैं। ₹अगर सेना बॉर्डर से हट जाए, तो इन कलाकारों को 'प्रेम' की असली भाषा समझ आ जाएगी।

पंकज जैन ने अंत में दो टूक कहा कि हमारे दोगले बॉलीवुड के लिए पैसे बहुत बड़ी चीज़ है। इनके लिए इज़्ज़त कभी भी महत्व नहीं रखती। इन दोगले महा लालची और महा बेशर्मो के हिसाब से इज़्जत तो आती जाती रहती है। इन जैसे दोगलों के लिए आज़ भी राष्ट्र और राष्ट्रहित से बड़ा पैसा हैं, लेक़नि हम भारतीय पहलगाम आतंकी हमले को कभी नहीं भूल सकते, जो आतंकी पाकिस्तान की सेना की साजिश थी। इसलिए इस सभी दोगलों की फिल्मों और विज्ञापनों का बहिष्कार करें। जय हिन्द।

रक्तदान करना जरूरी, यह फैक्टरी में नहीं बन सकता: डॉ एम पी सिंह

अपने लिए तो सभी जीते हैं असली जीवन तो समाज हित में ही मानव कल्याण है डॉ हृदयेश कुमार

फरीदाबाद में अंतरास्ट्रीय ट्रस्ट द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया। ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ एम पी सिंह ने लोगों को रक्तदान के महत्व के बारे में बताया और इसे जीवन में एक आदत बनाने की प्रेरणा दी। तिरखा कॉलोनी शिव मंदिर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ एम पी सिंह ने रक्तदान के लिए लोगों को प्रेरित करते हुए कहा कि लोगों को रक्तदान जरूर करना चाहिए, क्योंकि यह फैक्टरी में नहीं बनता है। हम सभी को अपने जीवन में रक्तदान को अपनी आदत बनाना चाहिए। इस अवसर पर ट्रस्ट के संस्थापक डॉ हृदयेश कुमार

ने कहा कि मानव के जीवन में दान को बहुत महत्व दिया गया है, इसमें भी रक्तदान को सर्वोच्च माना गया है। इस दान से किसी को जीवन मिलता है ये सर्वोपरि है

रक्तदान करने वाला न केवल पीड़ित की जीवन बचाता है, बल्कि उसके परिवार का भी संरक्षण करता है। इस नाते वह पूरे परिवार का संरक्षक हो जाता है। उन्होंने कहा कि चिकित्सक बताते हैं कि दान किया गया रक्त बहुत थोड़े समय में दोबारा बन जाता है। यह शरीर का ऑटोमेटिक सिस्टम है। उन्होंने कहा कि सभी स्वस्थ लोगों को अपने जीवन में रक्तदान अवश्य करना चाहिए, क्योंकि कई बार रक्त की कमी से अनेक जानें असमय चली जाती हैं। हम सभी को रक्त देने की आदत होगी तो कभी हमारे अपनों को भी रक्त के संकट का सामना नहीं करना पड़ेगा।

रक्तदान करने के कई फायदे हैं। यह न केवल दूसरों के जीवन को बचाने में मदद करता है, बल्कि यह आपके अपने स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद हो सकता है।

रक्तदान से शरीर में आयरन का स्तर संतुलित रहता है, जिससे हृदय रोग का खतरा कम होता है.।

रक्तदान के बाद, शरीर नए रक्त कोशिकाओं का उत्पादन करता है, जिससे मेटाबॉलिज्म बेहतर होता है।

एक बार रक्तदान करने से लगभग 650 कैलोरी बर्न होती हैं।

रक्तदान से पहले स्वास्थ्य जांच की जाती है, जिससे संभावित बीमारियों का पता चल सकता है।

कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि नियमित रूप से रक्तदान करने से कुछ प्रकार के कैंसर का खतरा कम हो सकता है।

रक्तदान दूसरों की मदद करने का एक तरीका है, जिससे भावनात्मक स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है।

रक्तदान करके आप किसी की जान बचा सकते हैं। यह आपातकालीन स्थितियों, सर्जरी, और विभिन्न बीमारियों के इलाज में मदद करता है।

रक्तदान एक सामाजिक जिम्मेदारी है जो समुदाय को मजबूत करती है।

रक्तदान से पहले, एक स्वास्थ्य जांच करवाना ज़रूरी है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि आप रक्तदान के लिए स्वस्थ हैं।

रक्तदान के बाद, पर्याप्त आराम करें और खूब पानी पिएं।

यदि आपको कोई स्वास्थ्य समस्या है, तो रक्तदान करने से पहले डॉक्टर से सलाह लें।

इस अवसर पर सुबोध कुमार साह, शिव शंकर राय, सतपाल सिंह, बेबी देवी सुष्मिता भौमिक, गौरी शंकर प्रिया, मनीषा देवी, विमलेश देवी, नीरज कुमार और राहुल व अन्य कॉलोनी वासी मौजूद रहे।

न विना परवादेन रमते दुर्जनोजनः। काकः सर्वरसान भुक्ते विनामध्यम न तृप्यति।। आओ निंदा त्यागने का संकल्प लें

हम खुद का आंकलन दूसरे से श्रेष्ठ करने की चूक से बचें स्वयं को छोटा कहलाने वाला व्यक्ति सबसे श्रेष्ठ गुणवान होता है - एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

सृष्टि में खूबसूरत मानवीय जीव की रचना कर रचनाकर्ता नें उसमें गुण और अवगुण रूपी दो गुलदस्ते भी जोड़े हैं और उनका चयन करने के लिए 84 लाख़ योनियों में सर्वश्रेष्ठ बुद्धि का सृजन मानवीय योनि में कर अपने भले बुरे सोचनें का हक उसी को दिया है, परंतु हम अपनीं जीवन यात्रा में देखते हैं कि मानवीय जीव अवगुण रूपी गुलदस्ते का चुनाव खुद कर उसमें ढल जाता है और अंत में दोष सृष्टि रचनाकर्ता को ही देता है कि मेरे जीवन को नरक बना दिया जबकि गलती मानवीय जीव की ही है कि उसने ही अपनी बुद्धि से उस अवगुण रूपी गुलदस्ते को चुना !मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि कहावत ₹जब हम एक उंगली उठाते हैं, तो तीन उंगलियां हमारी ओर इशारा करती हैं₹ अक्सर आत्म-चिंतन और जवाबदेही के विचार से जुड़ी होती है। यह वाक्यांश बताता है कि जब हम किसी और पर आरोप लगाते हैं या दोष देते हैं, तो हमको उस स्थिति में अपनी गलतियों या योगदानों पर भी विचार करना चाहिए।हालांकि इस कहावत की सटीक उत्पत्ति स्पष्ट नहीं है, लेकिन यह विभिन्न सांस्कृतिक और दार्शनिक परंपराओं में पाए जाने वाले विषयों को समाहित करती है।यह प्रक्षेपण के बारे में मनोविज्ञान की अवधारणाओं के साथ संरेखित है, जहां व्यक्ति अपने अवांछनीय गुणों या व्यवहारों को दूसरों पर आरोपित करते हैं।

उंगलियों की छवि यह दर्शाती है कि आलोचना अक्सर आलोचना के विषय की तुलना में आलोचक के बारे में अधिक दर्शाती है।इस वाक्यांश की खूबसूरती यह है कि यह किसी और को दोष देने के बजाय आत्मनिरीक्षण करने पर मजबूर करता है।यूं तो अवगुणों को सैकड़ों शब्दों, बुराइयों से पुकारा जाता है जिसमें आज हम निंदा बुराई, दूसरों पर उंगली उठाना इस अवगुण की चर्चा कर करेंगे आओ निंदा रूपी अवगुण त्यागने का संकल्प लें।हम खुद का आंकलन दूसरे से श्रेष्ठ करने की चूक से बचें स्वयं को छोटा कहलाने वाला व्यक्ति सबसे श्रेष्ठ गुणवान होता है।

साथियों बात अगर हम निंदा की करें तो किसी ने खूब ही कहा है कि, संसार में प्रत्येक जीव की रचना ईश्वर अल्लाह ने किसी उद्देश्य से की है। हमें ईश्वर अल्लाह की किसी भी रचना का मखौल उड़ाने का अधिकार नहीं है।इसलिए किसी की निंदा करना साक्षात परमात्मा की निंदा करने के समान है।किसी की आलोचना से आप खुद के अहंकार को कुछ समय के लिए तो संतुष्ट कर सकते हैं किन्तु किसी की काबिलियत, नेकी, अच्छाई और सच्चाई की संपदा को नष्ट नहीं कर सकते। जो सूर्य की तरह प्रखर है, उस पर निंदा के कितने ही काले बादल छा जाएं किन्तु उसकी प्रखरता, तेजस्विता और ऊष्णता में कमी नहीं आ सकती।

साथियों बात अगर हम खुद का आंकलन दूसरों से सर्वश्रेष्ठ करने की करें तो, अपनी प्रशंसा तथा दूसरों की निंदा असत्य के समान है। जैसे हमारी आंखें चंद्रमा के कलंक तो देख लेती हैं, किंतु अपने काजल को नहीं देख पातीं। उसी प्रकार हम दूसरों के दोषों को देखते हैं, हालांकि खुद अनेक दोषों से भरे हैं। दूसरों में जो दोष दिखाई देते हैं, सचमुच उनका कारण हमारे अपने चित्त की दूषित वृत्तियां ही है। दूसरों की निंदा किसी भी दृष्टि से हितकर नहीं होती। इस संबंध में एक कवि ने लिखा भी है कि हमें परखने का तरीका नहीं है। कोई वरना दुश्मन किसी का नहीं है। निंदक को यह याद रखना चाहिए कि दुनिया तुझे हजारों आंखों से देखेगी, जबकि तू दुनिया को दो ही आंखों से देख सकेगा।

साथियों बात अगर हम दूसरों पर एक उंगली उठाने की करें तो, जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे के दोषों पर उंगली उठाता है, तो उसे याद रखना चाहिए कि पीछे की और मुड़ी उसकी तीन उंगलियां पहले उसी की ओर संकेत कर रही होती हैं। निंदा- चुगली व्यर्थ ही है। इससे परस्पर वैमनस्य, कटुता और संघर्ष बढ़ते हैं। इसीलिए कहा है कि दूसरों के कृत्याकृत्यों को न देखो, केवल अपने ही कृत्यों का अवलोकन करो। यूं तो लोग चुप रहने वाले की निंदा करते हैं। बहुत बोलने वाले की निंदा करते हैं, मातृ भाषी की निंदा करते हैं, संसार में ऐसा कोई नहीं है, जिसकी निंदा न होती हो, इसीलिए कहा है- जैसी जाकी बुद्धि है, तैसी कहै बनाय। ताको बुरा न मानिए, लेन कहां यूं जाए।' केवल दूसरों द्वारा अपनी निंदा सुनकर मनुष्य अपने को निंदित न समझें, वह अपने आप को स्वयं ही जाने, क्योंकि लोक तो निरंकुश है, जो चाहता है सो कह देता है। द्वेषी गुणं न पश्यति, दोषी गुणों को नहीं देखता।

साथियों बात अगर हम पर निंदा में आनंद की करेंतो परनिंदा में प्रारंभ में काफी आनंद मिलता है लेकिन बाद में निंदा करने से मन में अशांति व्याप्त होती है और हम हमारा जीवन दुःखों से भर लेते हैं। प्रत्येक मनुष्य का अपना अलग दृष्टिकोण एवं स्वभाव होता है। दूसरों के विषय में कोई अपनी कुछ भी धारणा बना सकता है। हर मनुष्य का अपनी जीभ पर अधिकार है और निंदा करने से किसी को रोकना संभव नहीं है। न विना परवादेन रमते दुर्जनोजनः काकःसर्वरसान भुक्ते विनामध्यम न तृप्यति।। अर्थ-लोगों की निंदा (बुराई) किये बिना दुष्ट (बुरे) व्यक्तियों को आनंद नहीं आता। जैसे कौवा सब रसों का भोग करता है परंतु गंदगी के बिना उसकी संतुष्टि नहीं होती, लोग अलग-अलग कारणों से निंदा रस का पान करते हैं। कुछ सिर्फ अपना समय काटने के लिए किसी की निंदा में लगे रहते हैं तो कुछ खुद को किसी से बेहतर साबित करने के लिए निंदा को अपना नित्य का नियम बना लेते हैं। निंदकों को संतुष्ट करना संभव नहीं है।

साथियों बात अगर हम निंदा पर वैश्विक विचारों की करें तो, महात्मा गांधी ने भी कहा है कि दूसरों के दोष देखने की बजाय हम उनके गुणों को ग्रहण करें। दूसरों की निंदा अश्रेयस्कारी है। निंदा करने व सुनने में व्यक्ति प्रायः आनंद लेता है। जबकि निंदा सुनना व निंदा करना, दोनों ही विषय है। इसीलिए हमारे महापुरुषों ने तो कहा है ' सपनेहां नहिं देखा परदोषा !अर्थात्स्वप्न में भी पराये दोषों को न देखना। भगवान बुद्ध ने कहा है, जो दूसरों के अवगुणों की चर्चा करता है, वह अपने अवगुण प्रकट करता है। भगवान महावीर ने भी कहा है कि किसी की निंदा करना पीठ का मांस खाने के बराबर है। विधाता प्रायः सभी गुणों को किसी एक व्यक्ति या एक स्थान पर नहीं देता है। ईसा मसीह ने कहा था ,लोग दूसरों की आंखों का तिनका तो देखते हैं, पर अपनी आंख के शहतीर को नहीं देखते। हेनरी फोर्ड ने कहा कि मैं हमेशा दूसरों के दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करता हूं। हमारी सद्भावना या दुर्भावना ही किसी को मित्र या शत्रु मानने के लिए बाध्य करती है।सद्भावना अनुकूल स्थिति के कारण होती है और दुर्भावना प्रतिकूल स्थिति के कारण होती है। लोगों के छिपे हुए ऐब जाहिर मत करो। इससे उसकी इज्जत तो जरूर घट जाएगी, मगर तेरा तो ऐतबार ही उठ जाएगा।

साथियों बात अगर हम दूसरों के दोष ढूंढना, निंदा करना मानवीय स्वभाव की करें तो, दूसरों की निंदा करना। सदैव दूसरों में दोष ढूंढते रहना मानवीय स्वभाव का एक बड़ा अवगुण है। दूसरों में दोष निकालना और खुद को श्रेष्ठ बताना कुछ लोगों का स्वभाव होता है। इस तरह के लोग हमें कहीं भी आसानी से मिल जाएंगे। प्रतिवाद में व्यर्थ समय गंवाने से बेहतर है अपने मनोबल को और भी अधिक बढ़ाकर जीवन में प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते रहें। ऐसा करने से एक दिन आपकी स्थिति काफी मजबूत हो जाएगी और आपके निंदकों को सिवाय निराशा के कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। इसलिए सब तरफ गुण ही ढूंढने की आदत डालो। देखो कितना आनंद आता है। दुनिया में पूर्ण कौन है हरेक में कुछ न कुछ त्रुटियां रहती हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि न विना परवादेन रमते दुर्जनोजनः। काकःसर्वरसान भुक्ते विनामध्यम न तृप्यति।।आओ निंदा त्यागने का संकल्प लें हम एक उंगली दूसरों पर उठाते हैं तो तीन उंगलियां हमारे तरफ उठती है इसको रेखांकित करना ज़रूरी है हम खुद का आंकलन दूसरे से सर्वश्रेष्ठ करने की चूक से बचें, स्वयं का छोटा कहलानें वाले व्यक्ति सर्वश्रेष्ठ गुणवान होतें है।

कहानी

पार्वती के मन में शिव के प्रति आकर्षण के भाव जागते ही जा रहे थे वह हर हालत के अंदर शिव को अपने जीवन का साथी बनना चाहती थी इसके लिए वह सब कुछ करने के लिए तैयार हो जाती है,

शिव को वर के रूप में प्राप्त करने के लिए वह घोर तपस्या करना प्रारंभ कर देती हजारों वर्ष तपस्या करते हुए उसकी संपन्न हो जाते हैं पर उसका संकल्प बल है वह कम होने का नाम नहीं दे रहा था,

पार्वती की तपस्या से कहा जाता है शिव का आसान कंपायमान हो जाता है पार्वती की परीक्षा के लिए वह सप्त ऋषियों को रवाना कर देता है तुम्हारे को हर हालत में पार्वती को विचलित करके ही रहना है, , सप्तर्षियों ने शिव के अवगुणों का बखान करना प्रारंभ कर दिया सैंकड़ों, सैंकड़ों प्रकार की अवगुण प्रस्तुत करना प्रारंभ कर देते हैं पार्वती अपने संकल्प से विचलित होने का नाम नहीं लेती है,

, स्वयं शिव पार्वती की परीक्षा लेने के लिए अपनी तैयारी करना प्रारंभ कर देते हैं उसकी परीक्षा लेने के पश्चात उसको वरदान भी प्रदान कर देते हैं,

, जहां पार्वती तपस्या कर रही थी वहां पर अचानक उसके कानों में एक स्वर गूंजे मन होता है मेरे को बचाओ मेरे को बचाओ,

, अपना ध्यान, तप को तिलांजलि देकर जिधर से आवाज आ रही थी उधर की और तत्काल अपने चरणों को गतिशील बनना प्रारंभ कर देती है,

, पर्वत के नीचे तालाब वहां पर एक बहुत बड़ा मगरमच्छ है वह एक बालक को पड़कर तालाब के भीतर खींच कर ले जाने का प्रयास कर रहा था वह बालक अपने बचाव के लिए चिल्ला रहा था,

, बालक की नजर जब पार्वती पर केंद्रित होती है बालक बहुत ही ज्यादा जोर से चिल्लाना प्रारंभ कर देता है इस संसार में ना तो मेरी मां है और ना ही मेरा बाप है नहीं मेरा कोई मित्र है और ना ही कोई मेरा भाई बंधु है आप ही मेरे लिए सब कुछ है अब आप ही मेरी रक्षा कर सकती हो मेरे को बचाओ,

, पार्वती के मन में दया का संचार होना प्रारंभ हो जाता है अपने हाथ को ऊपर उठाते हुए कहा है मगरमच्छ इस बालक को क्यों परेशान कर रहा है क्यों मार रहा है इस बालक को छोड़ दें,

, मगरमच्छ ने कहे देवी मैंने अपने मन में संकल्प कर रखा है दिन के छठे प्रहार के समय जो भी व्यक्ति यहां पर आता है उसका भोजन करके मैं अपनी क्षुधा को शांत करता हूं मैं अपने नियम को कैसे छोड़ सकता हूं,

, पार्वती तत्काल अपने दोनों हाथ जोड़ लेती है अनुनय भी नहीं करना प्रारंभ कर देती है तुम मेरे करने से बालक को छोड़ दो जो भी तेरे को चाहिए मैं तेरे को देने के लिए तैयार हूं इस बालक के बदले में,

, मगरमच्छ ने कहा देवी में इस बाल को छोड़ने के लिए तैयार हूं पर जो मैं आपसे मांगूंगा वह आपको देना ही पड़ेगा आपने जो हजारों वर्षों तक तपस्या करके महादेव से जो वरदान प्राप्त किया है यदि वह मेरे को आप प्रदान कर देते हो तो मैं इस बालक को छोड़ सकता हूं,

, पार्वती ने तत्काल कहा में अपनी तपस्या का शिव के द्वारा प्रदत वरदान का में त्याग करती हूं तुम केवल इस बालक को छोड़ दो,

, देवी पार्वती एक बार अपने जुवान से बोलने से पहले 100 बार सोने का प्रयास करो हजारों वर्षों तक अपने कठोर तब किया है ऐसा तब मनुष्य के लिए नहीं देवताओं के लिए भी बहुत ही कठिन होता है उसे सारे फल का त्याग बालक को बचाने के लिए क्यों कर रही हो,

, पति तत्काल अपनी मुट्ठी को बंद कर लेती है मेरा यज्ञ निश्चय है मैं तुम्हें अपने तब का फल प्रदान करती हूं तो इसको नया जीवन प्रदान कर दे,

, पार्वती की आंखें फटी की फटी रह जाती है मगरमच्छ का सारा शरीर है वह चमकना प्रारंभ कर देता है हे माता पार्वती तुम्हारे तप के प्रभाव से मेरा शरीर है वह तेजस्वी बन गया है पर मेरे समझ में नहीं आ रहा है तुमने अपने हजारों वर्ष के तब की जो पूंजी चीज बालक को बचाने में क्यों व्यर्थ गुमा दी मैं तुम्हारे को अपनी गलती सुधारने का एक मौका भी प्रदान कर सकता हूं,

, पार्वती ने मुस्कुराते हुए कहा मगरमच्छ तपस्या तो में पुनः प्रारंभ कर सकती हूं पर क्या इस बालक का जीवन वापस मिल सकता है क्या इतना सुनते ही वह बालक और मगरमच्छ दोनों ही अदृश्य हो जाती है पार्वती देखती रह जाती है यह क्या हो गया,

, पार्वती पहाड़ पर पहुंच कर पुणे तपस्या करना प्रारंभ करने का संकल्प करती है इस समय शिव प्रकट होती है अब तेरे को तपस्या करने की जरूरत नहीं है केवल मैं तुम्हारी परीक्षा करने के लिए ही आया था यह सारा आडंबर मैं ही रचा था तेरे मन के अंदर कितनी दया है करुणा है इसको मैं देखना चाहता था तेरी करुणा और दया दोनों मेरे को आकर्षित कर रही है इसलिए मैं तुम्हारे साथ में शादी करने के लिए तैयार हूं,

, पार्वती महादेव का शब्द सुनते ही तत्काल हाथ जोड़कर नाथ मस्तक हो जाती है करुणा और दया की ताकत अपने आप ही सबको अपनी ओर आकर्षित करना प्रारंभ कर देती है।

दोस्त और दोस्ती

दोस्त का कोई नहीं होता
और दोस्ती का कोई नहीं होता
मन मिल जाने की बात है सारी
कब क्यूँ कहाँ का कोई नहीं होता !!

बिन कहे देख पाता है
परेशानी दिल की
रिश्तों जैसा इसमें कोई नहीं होता!

साथ निभाने की कोई
सीमा नहीं होती
छोड़ जाने का कोई नहीं होता !

साथ देते हैं दोस्त
आखिरी सांस तक
क्योंकि दोस्ती का कोई नहीं होता !

दोस्त हैं ऑक्सीजन
ज़न्दिगी की
परन्तु इस गैस का कोई नहीं होता !

पहचान लें जो आँख के ऑसू
बारिशों में भी वो दोस्त है कोई
नहीं होता !

खींच लेते हैं दोस्त
हर परेशानी की चादर
इन जैसा कोई नहीं होता !

लाइफ लाइन हैं
दोस्त ज़न्दिगी की
और दोस्ती का कोई नहीं होता !!!!
मेरा यारा सबसे प्यारा

क्या आप, अपने गोत्र की असली शक्ति को जानते हैं ?

यह कोई, परंपरा नहीं,
कोई अंधविश्वास नहीं,
यह आपका प्राचीन कोड है।
यह पूरा लेख पढ़िए —
मानो आपका अतीत इसी पर टिका हो।
1. गोत्र आपका उपनाम नहीं है। यह आपकी आध्यात्मिक डीएनए है।
पता है सबसे अजीब क्या है?
अधिकतर लोग जानते ही नहीं कि वे किस गोत्र से हैं,
हमें लगता है कि यह बस एक लाइन है जो पंडितजी पूजा में कहते हैं। लेकिन यह सिर्फ इतना नहीं है।
आपका गोत्र दर्शाता है, आप किस ऋषि की मानसिक ऊर्जा से जुड़े हुए हैं।
खून से नहीं, बल्कि विचार, ऊर्जा, तरंग और ज्ञान से।
हर हिंदू आध्यात्मिक रूप से एक ऋषि से जुड़ा होता है।
वो ऋषि आपके बौद्धिक पूर्वज हैं, उनकी सोच, ऊर्जा, और चेतना आज भी आपमें बह रही है।
२. गोत्र का अर्थ जाति नहीं होता, आज लोग इसे गड़बड़ा देते हैं।
गोत्र ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नहीं दर्शाता। यह जातियों से पहले, उपनामों से पहले, राजाओं से भी पहले अस्तित्व में था।
यह सबसे प्राचीन पहचान का तरीका था — ज्ञान पर आधारित, शक्ति पर नहीं।
हर किसी का गोत्र होता था।
ऋषि अपने शिष्यों को गोत्र देते थे जब वे उनकी शिक्षाओं को ईमानदारी से अपनाते थे।
इसलिए, गोत्र कोई लेबल नहीं — यह आध्यात्मिक विरासत की मुहर है।
३. हर गोत्र एक ऋषि से जुड़ा होता है — एक "सुपरमाइंड" से,
मान लीजिए आप वशिष्ठ गोत्र से हैं — तो आप वशिष्ठ ऋषि से जुड़े हैं, वही जिन्होंने श्रीराम और दशरथ को मार्गदर्शन दिया था।
भृगु गोत्र?
आप उस ऋषि से जुड़े हैं जिन्होंने वेदों का हिस्सा लिखा और योद्धाओं को प्रशिक्षण दिया।
कुल 49 मुख्य गोत्र हैं — हर एक ऋषि से जुड़ा, जो ज्योतिषी, वैद्य, योद्धा, मंत्रद्रष्टा या प्रकृति वैज्ञानिक थे।
4. क्यों बुजुर्ग एक ही गोत्र में विवाह मना करते थे? यह बात स्कूल में नहीं सिखाई जाती।
प्राचीन भारत में गोत्र एक जेनेटिक ट्रैकर था।
यह पितृवंश से चलता है — यानी पुत्र ऋषि की लाइन आगे बढ़ाते हैं।
इसलिए अगर एक ही गोत्र के दो लोग विवाह करें, तो वे आनुवंशिक रूप से भाई-बहन जैसे होंगे।
इससे संतान में मानसिक और शारीरिक विकार आ सकते हैं।
गोत्र व्यवस्था = प्राचीन भारतीय डीएनए विज्ञान और यह हम, हजारों साल पहले जानते थे — जब पश्चिमी विज्ञान को जेनेटिक्स का भी अंदाजा नहीं था।
5. गोत्र = आपका मानसिक प्रोग्रामिंग दर्शाता है, चलो इसे व्यक्तिगत बनाते हैं।
कुछ लोग गहरे विचारक होते हैं।
कुछ में गहरी आध्यात्मिक भूख होती है।
कुछ को प्रकृति में शांति मिलती है।
कुछ नेता या सत्य के खोजी होते हैं।
क्यों?
क्योंकि आपके गोत्र के ऋषि का मन आज भी आपके अंदर गूंजता है।
अगर आपका गोत्र किसी योद्धा ऋषि का है — आपको साहस महसूस होगा।
अगर वह किसी वैद्य ऋषि से है — तो आयुर्वेद या चिकित्सा में रुचि हो सकती है।
यह संयोग नहीं — यह गहराई से जुड़ा प्रोग्राम है।
6. पहले गोत्र के आधार पर शिक्षा दी जाती थी, प्राचीन गुरुकुलों में सबको एक जैसा नहीं सिखाया जाता था।
गुरु का पहला प्रश्न होता था...
"बेटा, तुम्हारा गोत्र क्या है?"
क्यों?
क्योंकि इससे गुरु समझ जाते थे कि छात्र कैसे सीखता है, कौन सी विद्या उसके लिए, उपयुक्त है।
अत्रि गोत्र वाला छात्र, ध्यान और मंत्रों में प्रशिक्षित होता।
कश्यप गोत्र वाला, आयुर्वेद में गहराई से जाता।
गोत्र सिर्फ पहचान नहीं, जीवनपथ था।
7. ब्रिटिशों ने इसका मज़ाक उड़ाया, बॉलीवुड ने हंसी बनाई, और हमने इसे भुला दिया,
जब ब्रिटिश भारत आए, उन्होंने इसे अंधविश्वास कहा।
फिर फिल्मों में, मज़ाक बना।
"पंडितजी फिर से गोत्र पूछ रहे हैं!"
जैसे यह कोई बेमतलब रस्म हो।
धीरे-धीरे हमने अपने बुज़ुर्गों से पूछना छोड़ दिया।
अपने बच्चों को बताना छोड़ दिया।
100 साल में 10,000 साल पुरानी व्यवस्था लुप्त हो रही है।
उसे किसी ने खत्म नहीं किया। हमने ही उसे मरने दिया।
8. अगर आप अपना गोत्र नहीं जानते, तो आपने...
एक नक्शा खो दिया है, कल्पना कीजिए कि आप किसी प्राचीन राजघराने से हों पर, अपना उपनाम तक नहीं जानते।
आपका गोत्र... आपकी आत्मा का GPS है।
सही मंत्र...
सही साधना... सही विवाह...
सही मार्गदर्शन...
इसके बिना हम अपने ही धर्म में अंधे होकर चल रहे हैं।
9. गोत्र की पुकार सिर्फ रस्म नहीं होती, जब पंडित पूजा में आपका गोत्र बोलते हैं, तो वे सिर्फ औपचारिकता नहीं निभा रहे।
वे आपको, आपकी ऋषि ऊर्जा से, दोबारा जोड़ रहे होते हैं।
यह एक पवित्र संवाद होता है।
"मैं, भारद्वाज ऋषि की संतान, अपने आत्मिक वंशजों की उपस्थिति में यह संकल्प करता हूँ।"
यह सुंदर है। पवित्र है। सच्चा है।
10. इसे फिर से जीवित करो — इसके लुप्त होने से पहले अपने माता-पिता से पूछो।
दादी-दादा से पूछो।
शोध करो, पर इसे जाने मत दो।
इसे लिखो, अपनी संतानों को बताओ, गर्व से कहो...
आप सिर्फ 1990 या २000 में जन्मे इंसान नहीं हैं।
आप एक ऐसी ज्योति के वाहक हैं जो हजारों साल पहले किसी ऋषि ने जलाई थी।
11. आपका गोत्र = आत्मा का पासवर्ड है,
आज हम वाई-फाई पासवर्ड, नेटफ्लिक्स लॉगिन याद रखते हैं...
पर, अपने गोत्र को भूल जाते हैं।
वो एक शब्द... आपके भीतर की...
चेतना, आदतें, पूर्व कर्म आध्यात्मिक शक्तियां... सब खोल सकता है।
यह लेबल नहीं — यह चाबी है।
१२. महिलाएं विवाह के बाद गोत्र "खोती" नहीं हैं, लोग सोचते हैं कि... विवाह के बाद स्त्री का गोत्र बदल जाता है। पर सनातन धर्म सूक्ष्म है, श्राद्ध आदि में स्त्री का गोत्र पिता से लिया जाता है।
क्योंकि गोत्र पुरुष रेखा से चलता है (Y-क्रोमोज़ोम से)। स्त्री ऊर्जा को वहन करती है, लेकिन आनुवंशिक रूप से उसे आगे नहीं बढ़ाती।
इसलिए स्त्री का गोत्र समाप्त नहीं होता वह उसमें, मौन रूप से जीवित रहता है।
13. भगवानों ने भी गोत्र का पालन किया रामायण में श्रीराम और सीता के विवाह में भी गोत्र जांचा गया...
राम: इक्ष्वाकु वंश, वशिष्ठ गोत्र,
सीता: जनक की पुत्री, कश्यप गोत्र,
यहां तक कि दिव्यता ने भी धर्म का पालन किया।

सभी के लिए ये उपयोगी

लाभ..

1..सभी तरह की कमजोरी दूर करता है..
2..कैल्शियम की कमी को दूर करता है.
3..शरीर मे बहुत जल्दी ताकत देता है.
4..जिन्हे अपने शरीर मे कमजोरी महसूस होती है और ज्यादा देर खडे रहने पर चक्कर आना सर घूमना होता है उनके लिए बहुत अच्छा रिजल्ट देता है..
5.. दर्द मे आराम देता है..घुटने दर्द etc..
6 बॉडी मे नई ताकत देता है शरीर को बलवान बनता है.

सामग्री..

बदाम 100 ग्राम
काजू 100 ग्राम
अखरोट 100 ग्राम
मखाना 100 ग्राम
मगज तरबूज या खरबुजा या दोनों 100 ग्राम
नारियल (खोपा) 100 ग्राम
चिरोंजी 100 ग्राम

सभी 100 ग्राम साबुत लाकर जैसे बदाम अखरोट घर पर निकाल कर पीस लीजिए और पाउडर बना कर रख लीजिए.

तरीका उपयोग करने का..

250 ग्राम दूध को गर्म कीजिये और एक बड़ा चम्मच इस पाउडर का डालकर दूध मे इसको हल्की आंच पर उबालते रहो और चम्मच से इस पाउडर को घुमाते रहो..

अब इसमें एक चुटकी दालचीनी पाउडर डाल लीजिए..

ज़ब दूध 250 ग्राम से 125 ग्राम रह जाये तब इसे गिलास मे डाल लीजिए...

और 5 से 7 ग्राम शहद मिक्स करके पी लीजिए गुनगुना होने पर..

अपको बहुत ताकत महसूस होंगी शरीर मे.. बॉडी एक्टिव रहेगी..कमजोरी पहले दिन से दूर होंगी..

एक माह तक उपयोग कीजिये.

पुरे दिन मे कभी भी ये ले सकते हो..आप.. .

इसके साथ डेली त्रिफला पाउडर लेते रहो एक चम्मच गर्म पानी से या पपीता खाये दिन मे 250 ग्राम नमक लगा कर जिससे पेट साफ रहे..

नोट.. खट्टी चीजे नहीं खाये + तेज मिर्ची मसाले परहेज कीजिये.

ये उपाय.. जिन्हे नहीं करना है..

1..जिनको एलर्जी हो वो ना कीजिये ये उपयोग..

2 बवासीर वाले पेशेंट नहीं कीजिये ये उपयोग.

3 प्रेग्नेंट लेडीज़ नहीं करे ये उपयोग..

कारण

क्युकी ये तासीर मे गर्म होता है.. इसलिए... गर्मी मे एक दिन छोड़ कर लेते रहे..

सर्दी मे रोज लीजिए.. इस पाउडर को.

बाकि सबके लिए उपयोगी है लगातार कीजिये..

बहुत अच्छे रिजल्ट आएंगे..

नित्य हूँ निरन्तर हूँ
शान्ति रूप मैं शंकर हूँ
भक्त हूँ भगवान हूँ
शक्तिपती शक्तिमान हूँ
जगत का आधार हूँ
निराकार मैं साकार हूँ
जीवन उमंग का गान हूँ
रूद्र हूँ महाकाल हूँ
मृत्यु रूप विकराल हूँ
नित्य हूँ निरन्तर हूँ
शान्ति रूप मैं शंकर हूँ...
ॐ नमः शिवाय ।।
देवो के देव महादेव आपके सभी मनोरथ पूर्ण करें ।

यदि हम जल को हाथ की मुट्ठी में कस के पकड़ेंगे तो वो छूट के निकल जाएगा, हमें चाहिए कि उसे बहने दे, जल स्वयं अपना मार्ग बना लेगा।ठीक वैसे ही जीवन की जटिलताएं जब समझ में नहीं आतीं हों, तो जो कुछ भी जीवन में घटित हो रहा है, उसे शांत भाव से तटस्थ होके देखना आरम्भ कर दें, कोई प्रतिक्रिया न करे, समय आने पर जीवन भी अपना सही मार्ग बना लेता है। लेकिन याद रहे कि इस प्रकृति के बीच में अपनी धारणा को स्थापित न करें। यदि हम आलसी प्रकृति के हैं तो यही कहेंगे हैं कि हमारे करने से क्या होगा? और हम कुछ न करने को महत्व देते हैं। इसके विपरीत यदि हम बहुत महत्वाकांक्षी हैं तो कहतें हैं कि किये बिना कैसे होगा? और कुछ न कुछ करतें ही रहतें हैं। इन दोनों स्थितियों में हम अतियों में डोलने लगतें हैं। यह अस्तित्व हमें कुछ करने की प्रेरणा भी देता है और सब किये को समर्पित करने का संदेश भी देता है। तो करें जैसा प्रकृति/अस्तित्व/परमात्म की प्रेरणा हो और उससे विरक्त भी रहें कि यह सब उसी की प्रेरणा से हो रहा है 'मैं तो केवल माध्यम भर हूं।' तो यह जीवन/संसार बहुत सरल/सहज हो जाता है।

अथ संघ सरेंडर गाथा : आँखों देखा इमरजेंसी अध्याय

(बादल सरोज)

संघ के संग सरेंडर की संलग्नता सनातन है, इतनी सतत और सुदीर्घ है कि हिंदी के व्याकरण में एक अक्षर से शुरू होने वाले शब्दों के अलंकारों में एक नया अलंकार सृजित कर सकती है। यह सरेंडर दक्षता 25 जून 1975 से 21 मार्च 1977 तक के कुख्यात आपातकाल में पूरे परवान पर थी। तत्कालीन सरसंघचालक बाला साहब देवरस की इंदिरा गांधी को लिखी कातर-स्तुति से भरी बिना शर्त समर्पण की चिट्ठियों के बारे में ₹विरोध का पाखंड : 1975 की इमरजेंसी के साथ खड़ा था संघ और जनसंघ₹ में विस्तार से लिखा जा चुका है।

सत्ता के चरणों में पूरी कातरता के साथ इनका शीर्ष इस हद तक लम्बायमान था कि लिखा-पढ़ी में चारण और भाट बना हुआ था -- 'याचना' जैसे शब्दों का इस्तेमाल कर रहा था। जब बुर्ज पर विराजमान खलीफा की हिलायमानता इस हद तक कम्पायमान थी, तो नीचे की भुरभुरी ईंटों की चलायमानता कैसी रही होगी, इसे समझा जा सकता है। मीसा में पूरे आपातकाल ग्वालियर जेल में रहने के चलते इन पंक्तियों ने लेखक ने इस कुनबे की हताशा, निराशा, कायरता की सरेंडर गाथा के इमरजेंसी अध्याय को अपनी आँखों से देखा है। इन्हें बैरक नंबर 10 बटा 4 सेन्ट्रल जेल ग्वालियर के नाम से संस्मरणों के रूप में दर्ज भी किया है। इनमें से दो-तीन वाकयों का संपादित रूप यहाँ प्रस्तुत हैं।

माफीनामों से ओवरफ्लो हुआ पोस्ट-कनस्तर

जेल से डाक भेजने के लिए परम्परागत लाल डिब्बा नहीं था -- उसकी जगह एक कनस्तर -- टिन की एक पतली चादर का 2 बाय 3 अनुपात का डब्बा इस्तेमाल होता था। यह कैंपस के लिए नियुक्त हेयर ड्रेसर की अठपहलू कटिंग ₹शॉप₹ की खिड़की पर रखा रहता था। रोज सुबह खाली होने जाता था -- तुरतई लौट आता था। कनस्तर की नजदीकतम अंगरेजी ₹कन्टेनर₹ है, जो उस छवि के बिम्ब को अभिव्यक्त करने के लिए नाकाफी है, जो कनस्तर सुनते ही दिमाग में उभरता है। बहरहाल अचानक एक दिन देखा कि कनस्तर एक की जगह दो कर दिए गए हैं। पूछा-ताछी की तो पता चला कि चिट्ठियाँ इतनी ज्यादा तादाद में लिखी जाने लगी थी कि बेचारा एक कनस्तर ओवरफ्लो होने लगा था।

जेल नियमों के हिसाब से हर मीसा बंदी को एक सप्ताह में दो पोस्टकार्ड मिला करते थे, उस हिसाब से भी डिब्बे के ओवरफ्लो होने की कोई गुंजाइश नहीं थी। डाक मुंशी से पूछा, तो उन्होंने मजे लेते हुए बताया। बोले -- ₹रोज इंदिरा गांधी और संजय गांधी के लिए लम्बी-लम्बी चिट्ठियां भेज रहे हैं तुमाए जे नेता। दिन में दो-दो बार भेज रहे हैं माफीनामा।₹

हमारी बैरक नम्बर 10/4 फर्स्ट फ्लोर की बैरक थी। ठीक हमारी खिड़की के सामने से नीचे दिखाई देते थे कनस्तर-पोस्टबॉक्स!! देख-रेख शुरू की -- पाया कि रात 11 बजे फलाने जी चले आ रहे हैं, तो साढ़े ग्यारह बजे ढिकाने जी। लाइन लगाकर इत्ते माफी नामे अर्पित हो रहे हैं कि लाज से झुके जा रहे हैं कनस्तर जी।

कुल मिलाकर ये कि हम सीपीएम वालों, जिनमे 5 किशोर से युवा होते भी शामिल थे (कामरेड शैलेन्द्र शैली पूरे 18 वर्ष के भी नहीं हुए थे, बाकी 4 भी 19 से 21 वर्ष के बीच के थे), उन्हें तथा कुछ समाजवादियों और एक दो सर्वोदयियों को छोड़ कर पूरी जेल में ऐसा एक भी नहीं बचा था, जिसने इस शरणागत होने के राजदार और माफीनामों के मेघदूत कनस्तर की गटर में बारम्बार डुबकी न लगाई हो। पूरी जनसंघ-आरएसएस बरास्ते कनस्तर इंदिरा गांधी और संजय गांधी की शरणागत हुयी पड़ी थी।

हम युवाओं को चुहल का नया मसला मिल गया था। एक दिन बातों-बातों में हवा फैला दी कि इंदिरा गांधी या संजय गांधी को चिट्ठी भेजने से क्या होगा? न उन तक पहुंचेगी, न वे पढ़ेंगे। भेजना है, तो डॉ धर्मवीर (तबके जिला कांग्रेस के नेता और उन दिनों की गुंडा-वाहिनी सेठी ब्रिगेड के संरक्षक, जो बाद में भाजपा के विधायक भी हुये) परिहार (युवा कांग्रेसी, जिनकी हैसियत उस जमाने में ग्वालियर के संजय गांधी जैसी थी) या विजय चोपड़ा (लोकल जगदीश टायटलर) को भेजो। उनकी सिफारिश ही चलेगी। घबराए हुए संघी कुनबे में यह गप्प ऐसी हिट हुयी कि पता लगा कि उनके नाम से भी पत्र जाना शुरू हो गए!!

चिट्ठी-सरेंडर सावरकर साहब के जमाने से चल रहा है। उन्होंने मलिका-ए-बर्तानिया के हुजूर में 5 लिखी थीं और उनमें किये गए स्वतन्त्रता संग्राम में फिर कभी हिस्सा न लेने के वचन को निबाहा। 1948 के प्रतिबंध में भी संघ ने चिट्ठी-सरेंडर आजमाया। इमरजेंसी कैसे छूट जाती। आगे भी जरूरत पड़ी, तो अमल में लाया जाएगा।

वो यादगार खौफनाक रात, रुदन की चीत्कार आंसुओं की बरसात

कुछ भ्रष्टाचार, कुछ जेल प्रशासन की निरंकुशता के चलते लंबित समस्यायें ढेर सारी हो गयी थीं। कुछ तनाव नए आये एक खुर्राट जेलर के अंग्रेजों के जमाने की जेलरी दिखाने की वजह से पसर गया था। यह जेलर अपने आपको संजय गांधी से भी अधिक इंदिरा गांधी का समर्थक समझता था। हालात इतने बिगड़ चुके थे कि जेल अधिकारियों के साथ हर सप्ताह होने वाली मीटिंग बंद थी, जेल ऑफिस यहाँ तक कि अन्दर के अस्पताल जाने पर भी अघोषित रोक-सी लगा दी गयी थी।

इन हालात में सुबह शाम की नारेबाजी या सामूहिक भूख हड़ताल भी काम नहीं आ रही थी। कुछ बड़ा करना जरूरी था। रास्ता ढूँढ़ने का जिम्मा आन्दोलनसिद्ध सीपीएम वालों के साथ कुछ लोहियावादी समाजवादियों पर आया और तय हुआ कि हुकुमचंद कछवाय साब को मनाया जाए और उन्हें अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर बिठाया जाये। कछवाय जी ग्वालियर जेल में बंद दो सांसदों में से एक थे, वे तब उज्जैन से जनसंघ के लोकसभा सदस्य थे। थे तो शेजवलकर भी ग्वालियर से सांसद, मगर उन्हें शीशे में उतारना असंभव था। कछवाय जी की दो खासियतें थी : एक तो वे शुरू में कभी उज्जैन के एक कपड़ा कारखाने के मजदूर रहे थे - मजदूर नेता भी रहे थे। लिहाजा उनके तेवरों में मजदूरवर्गी झंकार

थी। दूसरे यह कि वे द्विज नहीं थे, दलित थे। इसलिए उनके अपने राजनीतिक कबीले में उनका कोई ज्यादा महत्व नहीं था।

धीरे-धीरे हम लोगो ने कछवाय जी के साथ बैठना और उन्हें समस्याओं, जेल प्रशासन की हेंकड़ी और उनकी सांसदी की हैसियत का अहसास दिलाना शुरू किया। उनकी भूख हड़ताल किस तरह से अंतर्राष्ट्रीय असर डालेगी (डाला भी, बीबीसी ने उसे आठों दिन कवर किया) यह बताना शुरू किया। लुब्बोलुबाब यह कि दो दिन की काउंसिलिंग काम आई और सांसद हुकुमचन्द जी कछवाय आमरण अनशन पर बैठ गये। कछवाय जी के इस एलान से खुद उनकी पार्टी के वरिष्ठ नेता सदमे में थे -- जेल प्रशासन हतप्रभ था। पांचवे दिन कछवाय जी की स्थिति बिगड़ी, तो उनको जेल अस्पताल ले जाने को लेकर भी झंझट हुआ। 'बड़े नेताओं' की सहमति से जेल अस्पताल ले जाने के लिए रजामंदी तो दे दी गयी, मगर इस शर्त के साथ कि हमारे दो वालंटियर्स भी साथ जाएंगे। उन वालंटियर्स से कहा गया कि जैसे ही जेल प्रशासन या सरकार कोई हरकत करे, वे नारे लगाकर बाकी सब को सूचित करें।

आठवे दिन देर रात करीब 11 बजे अचानक अस्पताल से नारों की आवाज आयी। हम चार-पांच कामरेड्स अपनी बैरक में चाय पीते हुए शायद शतरंज या ब्रिज खेल रहे थे। जैसे ही नारों की आवाज सुनी, वैसे ही बकाया जेल हम युवाओं के नारों से गूंजने लगी। जुगलबंदी-सी शुरू हो गयी। हमारी बैरक ऊपर की बैरक थी, इसलिए आवाजें भी पूरी जेल में गूंजी। उसके बाद जो हुआ, वह सचमुच में दिल दहलाने वाला था। हमारी बैरक सहित बाकी बैरकों के मीसाबंदी कीक (घबराहट और भय में निकलने वाली चीख) मारकर उठे और उनमे से ज्यादातर बदहवासी में एक-दूसरे से लिपट कर रोने भी लगे।

हम बच्चों के लिए यह सचमुच बहुत ही खौफनाक नजारा था। हम लोग तुरंत उनके बीच फैल गए और जोर-जोर से चिल्लाकर समझाने लगे कि कुछ नहीं हुआ है -- कछवाय जी को जेल अस्पताल से शहर के अस्पताल ले जाया जा रहा है। एक घंटा लग गया -- हालात को मामूल पर लाने में !! यह अनुभव बहुत दारूण था। दो दिन बाद जाकर हालात इतनी सामान्य हुयी कि ऐसा होने की वजह पूछी जा सके -- मालूम पड़ा कि यह, कुछ ही दिन पहले, 3 नवम्बर 1975 को ढाका की जेल में बांग्लादेश के उपराष्ट्रपति और अन्य अवामी लीग के नेताओं को मिलिट्री द्वारा भून दिए जाने और बाक़ी राजनीतिक बंदियों को संगीनों से भोंक-भोंक कर मार दिए जाने की खबर का असर था। हम लोगों के नारे सुनकर सोये हुए ज्यादातर संघी मीसाबंदियों को यही लगा कि इंदिरा गांधी भारत की जेलों में ढाका दोहरा रही है।

इस रात को पता चला कि डर तो सबको लगता है, असल वह वैचारिक तैयारी होती है, जो यह शऊर और सलीका देती है कि उसे कैसे अभिव्यक्त किया जाए, उससे कैसे उबरा जाए - डर को किस तरह आक्रोश में रूपांतरित किया जाए।

तीनों डिब्बे घी में और सिर... शर्मिंदगी में!!

ज्यादातर मीसाबंदी, करीब दो-तिहाई, बी क्लास के कैदी थे। जो नहीं थे, उन्हें बाकी में एडजस्ट कर लिया करते थे। बी क्लास का मतलब हर छह महीने में दो जोड़ी , खादी भण्डार के नए कुरते पाजामे। सर्दी में पूरी बांह के स्वेटर, हर दो-तीन माह में एक तौलिया आदि-इत्यादि की प्राप्ति। नहाने के लिए सप्ताह में एक लाइफबॉय और कपड़े धोने के लिए सनलाइट के साबुन की बट्टी। लगाने के लिए हर रोज 20 ग्राम सरसों का तेल। खाने की खुराक समुचित से अधिक पर्याप्त थी। इस प्रसंग में जो खुराक का हिस्सा जरूरी है, वह रोज प्रति व्यक्ति 35 ग्राम शुद्ध देसी घी का है। अलग-अलग मैस के हिसाब से इकट्ठा लाया जाता था।

बाहर से आने वाले सामान की -- कम-से-कम -- तीन जगह चेकिंग होती थी। मगर अंदर से बाहर जाने वाले सामान, जो अमूमन खाली डब्बे, झोले-वोले होते थे, की जांच सामान्यतः नहीं होती थी। मगर मर्फी के नियमों में से एक नियम के मुताबिक़, जिसके होने की रत्ती भर भी संभावना है, मानकर चलना चाहिए कि वह होगा ही। सो, हो गया मरफी के नियम का जादू और उस दिन बाहर से आने वाली मुलाक़ात के साथ आने वाले सामान की जांच के साथ बाहर जाने वाले सामान - डब्बों, थैलों की भी जांच हो गयी!! इस जांच में तीन डब्बे उस देसी घी से भरे निकले, जो दरअसल खाने के लिए दिया जाता था। दो बड़े-बड़े थैले लाइफबॉय साबुन की बट्टियों से भरे थे। अपने परिजनों के हाथ घर भेज रहे।

जिन नेताजी के पास से यह जब्ती-बरामदगी हुयी थी, वे उस समय जनसंघ के बड़े और सम्मानित नेता थे। लोकप्रिय भी थे। वह दिन उनके लिए पुण्यत्व हासिल करने का दिन था। वे संघ-जनसंघ की मुख्य मैस के कर्ता-धर्ता थे, सो चम्मच-चम्मच करके जो घी जुटाया भी होगा, वह अपने बंधू-बांधवों की कटोरी में से ही बचाया होगा। अपना क्या!! हम लोगों की एकमात्र और तीव्र जिज्ञासा लाइफबॉय साबुन को लेकर थी। लोगों को सप्ताह भर के लिए एक साबुन कम पड़ जाता था -- आखिर ऐसे कौन थे, जिनके साबुन बच जाते थे -- फिर भैया जी उन्हें जोड़-जोड़ कर छुपाते कहाँ रहे होंगे? जो हो, यह उनकी उस दिन की यह क्रिया रिहा होने तक उनकी संज्ञा बनी रही। अस्पताल जाएँ, तो स्टाफ बोले ; गेट पर जाएँ, तो गार्ड बताये : घी चोर।

ये सज्जन शहर के रईसों में से एक थे। शहर के सबसे महंगे बाजार में उनकी दूकान थी, जो खूब चलती थी। कई संस्थान और भी थे। उनका यह कृत्य उनकी आर्थिक आवश्यकता की नहीं, लोभ, लालच, जैसे भी हो, वैसे -- भले अपनों की ही रोटी या उसकी चुपड़न चुरा कर -- खुद हड़प लेने की गलीज इच्छा की रिसन का प्रतीक था। इसका सीधा ताल्लुक उस सोच से था, जो आपके दिमाग में भरा हुआ है -- उस दिशा से जिस पर आप चल रहे हैं, उस लक्ष्य से, जिसे आप हासिल करना चाहते हैं। यह संयोग नहीं है कि इसी वंश की विषबेल जब से केंद्र और जिन-जिन राज्यों में सत्तासीन हुयी है -- चोरी, भड़यिाई और भ्रष्टाचार के नए और अब तक अकल्पित मौलिक उदाहरण सामने आये हैं। तो ये हैं असली संस्कार -- जिसके जरिये घी चोर, साबुन चोर बनायेंगे नया राष्ट्र!

भय के मारे छाप तिलक सब छोड़ी

सीपीएम और समाजवादी धारा के मीसाबंदी जेल परिसर में मई दिवस पर जलूस निकालते थे, अक्टूबर क्रांति का जश्न मनाते थे, भगत सिंह के दिन से लेकर लक्ष्मीबाई के दिन तक हर दसेक दिन में, कभी इस तो कभी उस बहाने सभाएं करते थे। मगर संघी कुनबे में इंदिरा गांधी से भय और डर इतना जबर था कि तीन सौ से अधिक की तादाद में होने के बाद भी इमरजेंसी की जेल की पूरी अवधि में न कभी शाखा लगाई, न विजयादशमी का चल-अचल समारोह किया, न किसी गुरु को याद किया।

सरकारी प्रश्रय में उत्पात करना, नफरती मुहिम चलाकर लोगों को उन्मादी बनाना और उनके जरिये फसाद कराना अलग बात है -- दमन के मुश्किल दौर में अडिग खड़े रहना दूसरी ही बात है और यह खूबी तभी आती है, जब विचारधारा सच्ची हो और उसके साथ हुई परवरिश अच्छी हो। जब यह दोनों ही गैरहाजिर हो, तो नाखून कटाकर शहीद बनने के स्वांग के सिवा कोई चारा नहीं बचता। इमरजेंसी की आधी सदी पर संघी कुनबे का पाखंड इसी की - एक और - मिसाल है।

(लेखक 'लोकजतन' के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं।

अस्पतालों से परे: बायोमेडिकल वेस्ट के अन्य स्रोत

विजय गर्ग

आइए अब हम इस बात पर करीब से नज़र डालें कि यह कचरा कहाँ उत्पन्न होता है और इसमें क्या होता है। बायोमेडिकल कचरा केवल अस्पतालों से नहीं आता है - यह स्वास्थ्य सेवा सेटिंग्स की एक विस्तृत श्रृंखला में उत्पन्न होता है, बड़े चिकित्सा संस्थानों से लेकर छोटे क्लीनिक और यहां तक कि घर-आधारित देखभाल तक। सुविधा के प्रकार और किए गए चिकित्सा प्रक्रियाओं की प्रकृति के आधार पर, मात्रा और कचरे की तरह बहुत भिन्न हो सकते हैं। इस लेख में, हम बायोमेडिकल कचरे के प्राथमिक और माध्यमिक स्रोतों का पता लगाएंगे और इसके प्रमुख घटकों की जांच करेंगे, जिनमें से कुछ गंभीर स्वास्थ्य और पर्यावरणीय जोखिम पैदा करते हैं।

जैसा कि उल्लेख किया गया है, बायोमेडिकल अपशिष्ट विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सेवा सेटिंग्स से उत्पन्न होता है, जिसे मोटे तौर पर दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है: प्राथमिक और माध्यमिक स्रोत। प्राथमिक स्रोतों में निजी और सरकारी सामान्य अस्पताल, मातृत्व अस्पताल, सामान्य चिकित्सकों के क्लीनिक, मेडिकल कॉलेज, पशु चिकित्सा कॉलेज और अस्पताल, ब्लड बैंक, पैथोलॉजी लैब, रिसर्च लैब से जुड़े पशु घर (ज्यादातर दवा उद्योगों में स्थित) आदि शामिल हैं। रक्तदान शिविर, दंत चिकित्सा क्लीनिक, घरेलू स्वास्थ्य सेवा पद्धति, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, शैक्षणिक संस्थान, औद्योगिक स्वास्थ्य केंद्र, आयुष अस्पताल आदि को माध्यमिक स्रोत माना जाता है। कचरे का प्रकार और मात्रा पीढ़ी के स्रोतों पर निर्भर करती है।

बायोमेडिकल कचरे की संरचना

स्वास्थ्य केंद्रों में उत्पन्न अपशिष्ट को मोटे तौर पर खतरनाक और संक्रामक अपशिष्ट और गैर-संक्रामक या सामान्य कचरे में विभाजित किया जाता है। संक्रामक अपशिष्ट को निम्नलिखित चार प्रमुख श्रेणियों में और वर्गीकृत किया गया है:

क) मानव शारीरिक और रोग अपशिष्ट: यह केवल एक छोटे से अंश के लिए खाता है, जिसमें अस्पताल में उत्पन्न कुल कचरे का लगभग 10-15 प्रतिशत शामिल है। हालांकि, यह छोटा सा अंश सबसे बड़ी चिंता का विषय है, क्योंकि यह वायरल, बैक्टीरियल, फंगल या परजीवी रोगों को प्रसारित करके मानव के स्वास्थ्य और स्वच्छता के लिए सीधा खतरा है। इस प्रकार के कचरे में परिशिष्ट, ट्यूमर, ग्रंथियां और ऊतक जैसे आंतरिक अंग शामिल हैं। इसमें सर्जरी, बायोप्सी या अन्य चिकित्सा प्रक्रियाओं के दौरान हटाए गए किसी अन्य अंग भी शामिल हैं। शरीर के अंग जैसे पैर या हाथ जो आंशिक रूप से या पूरी तरह से कटे हुए हैं, शामिल हैं। प्रसव के दौरान निकाली गई नाल इस कचरे का हिस्सा है। निरस्त भ्रूण भी शामिल हैं।

रक्त और शरीर के अन्य तरल पदार्थ इस श्रेणी में आते हैं। प्रयोगशालाओं से पशु शव और ऊतक भी इस कचरे का हिस्सा हैं। रक्त या शरीर के तरल पदार्थों में भिगोए गए ड्रेसिंग और कपास झाड़ू शामिल हैं।

अस्पताल के गाउन, एप्रन और इसी तरह की अन्य सामग्री भी इस कचरे का हिस्सा हैं। संक्षेप में, रोगी के रक्त या शरीर के अन्य तरल पदार्थों से दूषित कोई भी सामग्री कचरे की इस श्रेणी से संबंधित है।

ख) पशु शारीरिक और रोग अपशिष्ट: प्रायोगिक पशु शव, शरीर के अंग, अंग, और ऊतक, पशु चिकित्सा अस्पतालों या कॉलेजों में प्रयोग या परीक्षण में उपयोग किए जाने वाले जानवरों से उत्पन्न अपशिष्ट सहित, या फार्मा उद्योगों में पशु घर भी इस श्रेणी के हैं।

2.। प्लास्टिक कचरा: इलाज के उद्देश्यों के लिए प्लास्टिक लेखों का उपयोग न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में अस्पतालों में बहुत आम हो गया है। अस्पतालों में उपयोग किए जाने वाले डिस्पोजेबल प्लास्टिक आइटम आम तौर पर उच्च गुणवत्ता वाले, निष्फल प्लास्टिक जैसे पॉलीप्रोपाइलीन, उच्च घनत्व वाले पॉलीथीन (एचडीपीई) और पीवीसी से बनाए जाते हैं, जो उनकी ताकत, लचीलापन, स्थायित्व, आदि के लिए आदर्श हैं। ये लेख बाँझपन को बनाए रखने के लिए भी आदर्श हैं। इस प्रकार संक्रमण नियंत्रण और उपयोग में आसानी जैसे महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करना। हालांकि, वे चिकित्सा कचरे में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, कुल मात्रा का लगभग 25 प्रतिशत से 30 प्रतिशत तक। इन लेखों में दवाओं के अंतःशिरा प्रशासन के लिए उपयोग किए जाने वाले सिरिंज, IV सेट और ट्यूबिंग शामिल हैं; दस्ताने; कैथेटर; एंडोट्रैचियल ट्यूब; कैनुलास डायलिसिस; सेट; रक्त और मूत्र बैग, आदि। अधिकांश सिरिंज या तो इंट्रामस्क्युलर या हाइपोडर्मिक इंजेक्शन के लिए शरीर में दवा इंजेक्ट करने के लिए होते हैं।

3। मेटल शार्प: धातुओं, सुइयों सहित अपशिष्ट शार्प, निश्चित सुइयों के साथ सिरिंज, सुई टिप कटर या बर्नर से सुई, स्केलपेल, ब्लेड, या कोई अन्य दूषित तेज वस्तु जो पंचर और कटौती का कारण बन सकती है। इसमें उपयोग, त्याग और दूषित धातु शार्प शामिल हैं।

4। ग्लास: साइटोटॉक्सिक कचरे से दूषित लोगों को छोड़कर, दवा के शीशियों सहित टूटे या छोड़े गए और दूषित ग्लास।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

पानी के संकट को कम करना: अभी कार्य करें या बाद में कीमत का भुगतान करें

विजय गर्ग

2030 तक आपूर्ति को आउटसोर्स करने की मांग के साथ। जल आपातकाल दूर का खतरा नहीं है, यह पहले से ही खुलासा है

भारत में हमने प्राकृतिक संसाधन लिए हैं। हम उनके बारे में बहुत कम परवाह करते हैं, लेकिन उनका शोषण करते हैं ताकि यह महसूस किया जा सके कि ये संसाधन सीमित हैं और अगर एक जिम्मेदार तरीके से उपभोग नहीं किया जाता है तो हम कल्पना कर सकते हैं कि हम तेजी से नष्ट हो जाएंगे। भारत आज एक स्मारकीय जल संकट की कगार पर खड़ा है जो इसकी आर्थिक प्रगति को पटरी से उतारने, खाद्य सुरक्षा को अस्थिर करने और सार्वजनिक स्वास्थ्य को कमजोर करने की धमकी देता है। दुनिया की 18 प्रतिशत आबादी के आवास के बावजूद, भारत के पास अपने मीठे पानी के संसाधनों का केवल 4 प्रतिशत है।

NITI Aayog के 2018 के समग्र जल प्रबंधन सूचकांक ने पहले ही अलार्म बजा दिया था - 600 मिलियन भारतीय उच्च से अत्यधिक जल तनाव में रह रहे हैं। 2030 तक, मांग उपलब्ध आपूर्ति को दोगुना कर सकती है। फिर भी, बढ़ते सबूतों के बावजूद, देश खंडित नीतियों और टुकड़ों के समाधान के साथ जवाब देना जारी रखता है। इस संकट की जड़ें गहरी और बहुस्तरीय हैं।

प्राथमिक कारणों में से एक देश भर में पानी का घोर असमान वितरण है। जबकि कुछ राज्य विनाशकारी बाढ़ के साथ संघर्ष करते हैं, अन्य साल भर के सूखे का सामना करते हैं। जलवायु परिवर्तन ने इस असमानता को तेज कर दिया है। इस चुनौती को जोड़ना भूजल पर भारत की भारी निर्भरता है। अत्यधिक निष्कर्षण ने भारत को भूजल का दुनिया का सबसे बड़ा उपयोगकर्ता बनने के लिए प्रेरित किया है। पुनःपूर्ति दर बस नहीं रख सकती। जलवायु परिवर्तन ने जल समीकरण को भविष्य के खतरे से वर्तमान संकट में बदल दिया है। अनियमित वर्षा पैटर्न ने कृषि को अनिश्चित बना दिया है। सिकुड़ते ग्लेशियरों के कारण भंडारण प्रणालियों में पानी की कमी हो गई है। हिमालय में ग्लेशियर - गंगा और सिंधु जैसी नदियों की जीवन रेखा खतरनाक दरों पर पिघल रही है।

जल स्रोतों का संदूषण समान रूप से गंभीर चुनौती प्रस्तुत करता है। 2024 की वार्षिक भूजल गुणवत्ता रिपोर्ट से पता चला है कि भारत का 70 प्रतिशत पानी दूषित है, जिसमें आर्सेनिक और फ्लोराइड 19 राज्यों में 230 मिलियन से अधिक लोगों के लिए पीने के पानी को दूषित करते हैं। अनुपचारित सीवेज और औद्योगिक अपशिष्ट नदियों का गला घोंटना जारी रखते हैं, जिससे उन्हें उपयोग के लिए अयोग्य ठहराया जा सकता है। सार्वजनिक स्वास्थ्य पर टोल डगमगा रहा है। नीति आयोग के अनुसार, जलजनित रोगों के लिए हर साल लगभग 200,000 जीवन खो जाते हैं - एक त्रासदी जो रोके जा सकती है। बेंगलुरु, चेन्नई और दिल्ली जैसे शहरों ने पहले ही एक बार अकल्पनीय सोचा था कि एक पैमाने के जल संकट का अनुभव किया गया है। नीति आयोग के अनुसार, 21 भारतीय शहर 2030 तक अपने भूजल को समाप्त कर सकते हैं, जिससे 100 मिलियन से अधिक लोग प्रभावित हो सकते हैं। हालांकि, आगे का एक रास्ता है। लेकिन इसके लिए प्रणालीगत परिवर्तन की आवश्यकता है। एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन (IWRM) अपवाद के बजाय आदर्श बनना चाहिए। पानी को अलगाव में नहीं देखा जा सकता है - यह ऊर्जा, कृषि, जलवायु और स्वास्थ्य से जटिल रूप से जुड़ा हुआ है। राष्ट्रीय नीतियों को इस वास्तविकता को प्रतिबिंबित करना चाहिए। आर्द्रभूमि बहाली जैसे प्रकृति-आधारित समाधानों को अत्याधुनिक तकनीकों जैसे वास्तविक समय की निगरानी और जल लेखा प्रणालियों के साथ बढ़ाया जाना चाहिए जो उपयोग को ट्रैक कर सकते हैं और संसाधनों को अधिक समान रूप से पुनर्वितरित कर सकते हैं। एक जल-सुरक्षित भारत आर्थिक रूप से जीवंत और सामाजिक रूप से सिर्फ भविष्य का आधार है। निष्क्रियता के परिणाम बहुत बड़े होंगे। देखना यह है कि क्या भारत चुनौती के लिए उठेगा।

बेटियां संवेदनशील

विजय गर्ग

देशकाल-परिस्थितियों और बदलती जरूरतों के अनुरूप वैश्विक स्तर पर एक सूक्ष्म, लेकिन महत्वपूर्ण बदलाव दृष्टिगोचर हो रहा है। यह बदलाव लिंग प्राथमिकताओं को लेकर वैश्विक दृष्टिकोण में आ रहे परिवर्तन का है। जैसा कि हाल ही में 'द इकनॉमिस्ट' द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया है कि लड़कों के प्रति सदियों पुराना झुकाव अब कम हो रहा है। दुनियाभर में, अतिरिक्त पुरुष जन्म की संख्या- जो वर्ष 2000 में 1.7 मिलियन तक अधिक थी, साल 2025 तक लगभग दो लाख तक गिर गई है। निस्संदेह, यह प्रजनन विकल्पों में एक अप्रत्याशित बदलावों का संकेत है। यहां तक कि दक्षिण कोरिया और चीन में, लिंग अनुपात सामान्य या यहां तक कि बेटी की पसंद के संकेत दिखाने लगा है। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि इस बदलाव की असल वजह क्या है... दरअसल, माता-पिता में यह धारणा बलवती होती जा रही है कि बेटियां उनकी ढलती उम्र में धीरे-धीरे अधिक विश्वसनीय देखभाल करने वाली साबित हो सकती हैं। उन्हें परिवार से गहरे तक जुड़े रहने की अधिक संभावना के रूप में देखा जाने लगा है। आज बेटियों को बेटों के मुकाबले बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शनकर्ता के रूप में देखा जा सकता है। तेजी से कामकाजी दुनिया का हिस्सा बनने के कारण वह आर्थिक रूप से स्वावलंबी होती जा रही है। बल्कि कई देशों में तो महिलाओं की बैचलर डिग्री की संख्या तक पुरुषों की तुलना में अधिक है। पश्चिमी देशों में गोद लेने और आईवीएफ के डेटा दिखाते हैं कि बेटियों को चुनने की दिशा में स्पष्ट झुकाव है। दरअसल, पश्चिमी देशों के एकल परिवारों में बेटे अपनी गृहस्थी बसाकर मां-बाप को उनके भाग्य पर छोड़ जाते हैं। ऐसा माना जाने लगा है कि बेटियां बेटों के मुकाबले में ज्यादा संवेदनशील होती हैं और जीवन के अंतिम पड़ाव में मां-बाप को सुरक्षा कवच प्रदान कर सकती हैं। जिसके चलते लोग बेटों के मुकाबले बेटियों को अपनी प्राथमिकता बनाने को तरजीह देने लगे हैं।

वहीं भारत में परिस्थितियां एक जटिल तसवीर प्रस्तुत करती हैं। यूं तो सदियों से भारत का समाज पुत्र मोह की ग्रंथि से ग्रस्त रहा है। हालांकि, अब आधिकारिक आंकड़े बता रहे हैं कि देश में शिशु लिंग अनुपात दर में सुधार हुआ है। लेकिन लिंग चयन के लिये किए जाने वाले गर्भपात पर शासन व प्रशासन की कानूनी सख्ती और जागरूकता अभियानों के बावजूद परंपरागत रूप से समाज में गहरी जड़ें जमाने वाला बेटा मोह अब भी प्राथमिकता बना हुआ है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (2019-21) का सर्वे चिंता बढ़ाने वाला है। सर्वे के अनुसार, लगभग 15 फीसदी भारतीय माता-पिता अभी भी बेटियों की तुलना में बेटों की आकांक्षा रखते हैं। यही वजह है कि हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में विषम शिशु लिंगानुपात चिंता का विषय बना हुआ है। इसके अलावा, भारत में बेटी वरीयता, जहां यह मौजूद है, अक्सर सशर्त होती है। लड़कियों को भावनात्मक लगाव या घरेलू स्थिरता के लिये तो महत्व दिया जा सकता है, लेकिन जरूरी नहीं कि पोषण, शिक्षा या विरासत तक उन्हें समान पहुंच दी जाए। भारतीय समाज में दहेज जैसी सांस्कृतिक प्रथाएं आज भी बेटी के माता-पिता की बड़ी चिंता बनी रहती हैं। परंपरावादी समाज में यह धारणा बलवती रही है कि बेटियां दूसरे परिवार की हैं। यही वजह है कि ग्रामीण और शहरी गरीब समुदायों में लड़कियां हाशिये पर रख जाती हैं। लेकिन इसके बावजूद भारत को लिंग समानता के वैश्विक आंदोलन की किसी भी तरह अनदेखी नहीं करनी चाहिए। साथ ही केंद्र व राज्य सरकारों के नीतिगत हस्तक्षेप को जन्म सांख्यिकी से परे जाना चाहिए। नीति-नियंताओं को बालिका शिक्षा को प्राथमिकता के आधार पर बढ़ावा देना चाहिए। इसके साथ ही समान संपत्ति अधिकार लागू करने, दहेज प्रथा की कुरीति को समाप्त करने की दिशा में सख्त कदम उठाने चाहिए। तभी भारतीय समाज में लिंगभेद की मानसिकता खत्म होगी और लैंगिक समानता की दिशा में मार्ग प्रशस्त होगा। साथ ही देश में तेजी से बढ़ती बुजुर्गों की आबादी के लिये सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में कदम उठाना चाहिए।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

मिश्रित शिक्षा: शैक्षिक परिवर्तन ड्राइविंग : विजय गर्ग

हम शिक्षा के एक युग में रह रहे हैं जो छात्रों और कामकाजी पेशेवरों के लिए सक्षम परिस्थितियों का निर्माण कर रहा है, और जिसमें मिश्रित शिक्षण एक प्रमुख गेम-चेंजर होगा। भारत के भीतर, भारत की राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 का कार्यान्वयन भारत में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को नया रूप देने जा रहा है। एनईपी 2020 की दृष्टि एसडीजी 4 के साथ गठबंधन की गई भारतीय शिक्षा प्रणाली को फिर से कल्पना करना है, जो समान अवसर, समावेश और इक्विटी पर केंद्रित है। मिश्रित शिक्षण-शिक्षण वातावरण, क्रिएटिव कॉमन्स और बड़े पैमाने पर ओपन ऑनलाइन पाठ्यक्रम के तहत ओपन एजुकेशनल रिसोर्स क्षेत्रों और सामाजिक-आर्थिक स्तर पर एक मजबूत भारतीय शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए आवश्यक आवश्यकताएं हैं। मेरे डॉक्टरेट थीसिस की रक्षा के दौरान धारणा को जानने के लिए छात्रों, संकाय सदस्यों और पुस्तकालय पेशेवरों सहित शैक्षणिक समुदायों के बीच एक ऑनलाइन सर्वेक्षण किया गया है। सर्वेक्षण में अपरंपरागत सीखने के अवसरों और संसाधनों के बारे में छात्रों और संकाय सदस्यों के बीच जागरूकता का एक निम्न स्तर सामने आया जो ऑनलाइन पाठ्यक्रमों जैसे आईटी बुनियादी ढांचे का लाभ उठाते हैं जो नवीनतम तकनीकी कौशल वृद्धि पाठ्यक्रमों में बड़ी संख्या में छात्रों तक पहुंच प्रदान करते हैं। उत्साहजनक और कुछ हद तक, संकाय सदस्यों ने सर्वेक्षण किया, छात्रों या यहां तक कि पुस्तकालय पेशेवरों के सापेक्ष इन मामलों के बारे में उच्च जागरूकता प्रदर्शित की। इसने इस बात पर जोर दिया कि जब संकाय सदस्य ओईआर शैक्षिक संसाधनों को पारंपरिक कक्षा सेटिंग्स में शामिल करते हैं, तो ओईआर संसाधनों की गुणवत्ता में सुधार होता है, इसलिए ऑनलाइन शिक्षा की समग्र गुणवत्ता को बढ़ाता है। विभिन्न हितधारकों को पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली (एलएमएस) के साथ ओईआर को एकीकृत करने और भारत में एचईआई में एक मजबूत ओईआर नीति ढांचा होने का दृष्टिकोण पाया गया। एलएमएस के साथ ओईआरएस को एकीकृत करने की दिशा में हितधारकों के अनुकूल विचारों को शैक्षणिक समुदाय को ओपन-एक्सेस लाइसेंस और मिश्रित शिक्षण वातावरण की संस्कृति की बेहतर समझ हासिल करने में सक्षम बनाना चाहिए। इसलिए यह विशेष रूप से पेरी-शहरी आबादी और दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले वंचित समुदायों के बीच मिश्रित शिक्षण शिक्षा को गति देने का अवसर है। 'ऑल इंडियन सर्वे ऑन हायर एजुकेशन 2021-22' के अनुसार, बिहार और असम में दूरस्थ नामांकन मोड उच्च जनसंख्या वृद्धि के बावजूद सबसे कम में से एक है और लोग उच्च शिक्षा के लिए उत्सुक हैं और राज्य के भीतर प्रत्यक्ष विश्वविद्यालय नामांकन तक बहुत कम पहुंच है। यह जलवायु साक्षरता और जलवायु शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

उच्च शैक्षिक संस्थानों द्वारा उईएआर का वास्तविक गोद लेना विभिन्न कारकों जैसे - समय और लागत, भाषा, उपयोगकर्ता-मित्रता, बुनियादी ढांचा, गुणवत्ता और पुस्तकालय समर्थन पर निर्भर करता है। शैक्षणिक प्रथाओं का विकास ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (ओईआरएस) के बारे में जागरूकता से जुड़ा हुआ है, जो इन-पर्सन कक्षाओं के दौरान पारंपरिक शिक्षण विधियों में ओईआर सामग्री के एकीकरण की सुविधा प्रदान करता है। इसके अलावा, सरकारी सहायता उच्च शिक्षा संस्थानों में ओईआरएस के उपयोग और उन्नति को बढ़ाएगी और उच्च गुणवत्ता वाले खुले शैक्षिक संसाधनों के माध्यम से सूचना-समृद्ध और सूचना-गरीब संस्थाओं के बीच असमानताओं को कम करने की सुविधा प्रदान करेगी, जो सतत विकास लक्ष्य के उद्देश्य में से एक के साथ संरेखित होगी

एनईपी 2020 का उद्देश्य छात्रों / शिक्षार्थियों को एक साथ दो डिग्री हासिल करने की अनुमति देकर विविध कौशल विकसित करने के लिए सशक्त बनाना है। सिद्धांत रूप में, ऐसी लचीलेपन को न केवल छात्रों को बल्कि संभावित रूप से भविष्य की जरूरतों के लिए संपूर्ण कार्यबल को सशक्त बनाना चाहिए, जबकि शिक्षा के लिए समग्र दृष्टिकोण सक्षम करना चाहिए। हालांकि, इस लक्ष्य को कुशलतापूर्वक प्राप्त नहीं किया जा सकता है और अपनी उपस्थिति जनादेश के साथ पारंपरिक कक्षा शिक्षाशास्त्र के माध्यम से वर्तमान जरूरतों को पूरा करने के लिए बढ़ाया जा सकता है। बल्कि, इसके लिए एक नरम और डिजिटल दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जिसमें ऑनलाइन सीखने को नियमित कक्षा सीखने के साथ बराबर लाया जा सकता है।

नतीजतन, डिजिटल शैक्षिक संसाधन, ऑनलाइन शिक्षा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) प्रौद्योगिकी, और आभासी वास्तविकता वर्तमान और भविष्य के युग में शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता को संबोधित करने के लिए बातचीत कर सकते हैं। यह पहल ऑनलाइन सीखने के विभिन्न उपकरणों और रणनीतियों के लिए व्यापक प्रदर्शन प्रदान करते हुए शिक्षा की अंतःविषय प्रकृति को समझने में विविध पृष्ठभूमि के छात्रों की सहायता करती है। यह एक्सपोजर स्थानीय, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तरों पर चुनौतियों से निपटने के लिए ज्ञान के विकास में सहायता करता है, और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों को सार्थक तरीके से प्राप्त करने के उद्देश्य से समाधान तैयार करने के लिए। निर्णय लेने वाले कौशल में सुधार करने के लिए अपने विशेष क्षेत्रों और अंतःविषय क्षेत्रों में नेतृत्व कौशल को बढ़ाएं और उन्हें देश के सभी एसडीजी और राष्ट्रीय मिशनों के साथ नक्शा बनाने में भी मदद करें। मौजूदा ओईआरएस-आधारित क्षमताओं जैसे ,स्वयंवर-प्रभा, स्वयंवर, ईपीजी- पाठशाला वर्चुअल लैब और नैशनल डिजिटल लाइब्रेरी आदि के एकीकरण के साथ एक डिजिटल विश्वविद्यालय स्थापित करने की दिशा में भारत सरकार के प्रयास। पूरे भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए एक ऐतिहासिक परिवर्तन होगा। अंत में, हम छात्र समुदाय के साथ-साथ बड़े पैमाने पर समाज में आजीवन सीखने को बढ़ावा देने के लिए ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफार्मों के साथ मौजूदा पुस्तकालय प्रबंधन प्रणालियों, कैटलॉग और संसाधनों को एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। पर्याप्त साइबर सुरक्षा उपायों और समय पर तकनीकी उन्नयन के साथ एक मिश्रित शिक्षण शिक्षा प्रणाली का प्रभावी कार्यान्वयन एसडीजी 4 की उपलब्धि में एक लंबा रास्ता तय कर सकता है, जो समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करता है और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), डॉक्टर की नई स्टेथोस्कोप

विजय गर्ग

एआई डॉक्टर वर्कलोड को आसान बनाने, निदान बढ़ाने और देखभाल को सुव्यवस्थित करके भारत की स्वास्थ्य सेवा में क्रांति ला रहा है। प्रमुख अस्पताल श्रृंखला और स्टार्टअप शुरुआती पहचान, आईवीएफ, कैंसर जीनोमिक्स और आईसीयू निगरानी के लिए एआई का उपयोग कर रहे हैं। धन वृद्धि और बढ़ती गोद लेने के बावजूद, बड़े पैमाने पर तैनाती के लिए डेटा गवर्नेंस, लागत और सिस्टम तत्परता में चुनौतियां बनी रहती हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) बढ़ते अस्पताल के रोगी भार और सीमित चिकित्सा कर्मचारियों से जूझ रहे भारत के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के लिए एक अप्रत्याशित सहयोगी के रूप में उभर रहा है।

एआई द्वारा बीमा दावों और नैदानिक डेटा को संरचित करने जैसे नियमित कार्यों से निपटने के साथ, डॉक्टरों का कहना है कि उनके पास अब इस बात पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अधिक समय है कि सबसे अधिक क्या मायने रखता है - 'रोगी

अपोलो, मणिपाल और नारायण हेल्थ जैसी अस्पताल श्रृंखलाएं निदान, जल्दी पता लगाने और यहां तक कि दवा की खोज के लिए एआई उपकरण अपना रही हैं, या तो इन-हाउस तकनीक का निर्माण करके या नए युग के स्टार्टअप के साथ साझेदारी करके। विशेषज्ञों के अनुसार, इनमें से अधिकांश समाधान सर्जरी के बाद की देखभाल को कारगर बनाने और रोगी की सगाई में सुधार करने में मदद कर रहे हैं।

भारत का एआई हेल्थकेयर बाजार सालाना 40.6% बढ़ रहा है, जिसमें वर्तमान बाजार का आकार $ 1.6 बिलियन है, नैसकॉम और कंटार ने हाल ही में एक रिपोर्ट में कहा, स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के बीच बढ़ते एआई अपनाने को उजागर किया।

विशेषज्ञों का कहना है कि एआई गोद लेने का उद्देश्य मुख्य रूप से अस्पतालों में परिचालन दक्षता चलाना है, जिससे राजस्व में वृद्धि होती है। उदाहरण के लिए, रेडियोलॉजी विभाग में, एआई उपकरण लगभग 2-3 घंटे के प्रलेखन की बचत करते हुए, वर्कलोड को आधे से अधिक काट सकते हैं।

उद्योग पर नजर रखने वालों ने बताया कि केवल बड़ी अस्पताल श्रृंखलाएं या शैक्षणिक संस्थान वर्तमान में लक्षित भागीदारी के साथ नैदानिक परीक्षणों के लिए एआई तैनात कर रहे हैं। सरकारी अस्पताल एआई के साथ प्रयोग करने के लिए निजी अस्पतालों और प्रौद्योगिकी कंपनियों पर निर्भर हैं।

भारत में एआई के लिए एक बड़ा अवसर स्थानीय भाषाओं में स्वास्थ्य सेवा को अधिक सुलभ बना रहा है, यह देखते हुए कि पूरे क्षेत्रों में लक्षण कैसे वर्णित हैं

अपोलो अपने क्लिनिकल इंटेलिजेंस इंजन का उपयोग कर रहा है, जो परिवेश सुनने के उपकरणों के साथ संयुक्त है, अपने चिकित्सा कर्मचारियों के लिए हर दिन 2-3 घंटे से अधिक प्रलेखन कार्य की बचत करता है।

गूगल, माइक्रोसॉफ्ट और एलबीएम जैसी बड़ी तकनीकी फर्मों ने एआई- संचालित चिकित्सा उपकरणों को सह-विकसित करने के लिए भारतीय अस्पताल श्रृंखलाओं के साथ भी भागीदारी की है। गूगल एआई- आधारित मधुमेह रेटिनोपैथी का पता लगाने के लिए अरविंद आई हॉस्पिटल के साथ सहयोग कर रहा है, जबकि आईबीएम वॉटसन कैंसर उपचार योजना में मणिपाल अस्पतालों का समर्थन कर रहे हैं।

नारायण हेल्थ में, जो कार्डियक केयर में माहिर हैं, परिचालन दक्षता में सुधार और नैदानिक परिणामों की भविष्यवाणी करने के लिए बड़ी भाषा मॉडल (एलएलएम) तैनात किए जा रहे हैं। इसकी प्रमुख परियोजनाओं में से एक आईसीयू में अचानक हृदय संबंधी गिरफ्तारी की भविष्यवाणी करने के लिए एक मशीन लर्निंग मॉडल है।

चूंकि आईसीयू एक साथ 60-70 मापदंडों की निगरानी करते हैं, इसलिए उनके बीच बातचीत जटिल हो सकती है। नारायण हेल्थ के ग्रुप चीफ एनालिटिक्स और एआई अधिकारी विवेक राजगोपाल ने कहा, हमारा मॉडल लगातार कार्डियक अरेस्ट रिस्क स्कोर प्रदान करता है और बताता है कि मरीज की हालत क्यों बिगड़ सकती है, जिससे डॉक्टरों को कई घंटे की अग्रिम चेतावनी मिल सकती है । यह उपकरण वर्तमान में चुनिंदा आईसीयू में प्रारंभिक चरण की तैनाती में है।

सिर्फ अस्पताल ही नहीं, स्टार्टअप भी तेजी से अस्पतालों और क्लीनिकों के साथ साझेदारी की आशंका वाले एआई-संचालित समाधानों का विकास कर रहे हैं। 2024 में, हेल्थकेयर क्षेत्र ने महत्वपूर्ण कर्षण को देखते हुए निदान, टेलीमेडिसिन और डिजिटल स्वास्थ्य के साथ बाजार खुफिया मंच क्रेडिबल के अनुसार, फंडिंग में 1.13 बिलियन डॉलर जुटाए।

अस्पताल और स्टार्टअप साझेदारी

४वेसिकेर, एक बेंगलुरु स्थित सटीक ऑन्कोलॉजी स्टार्टअप, डीएनए और अगली पीढ़ी के अनुक्रमण परीक्षणों की एक श्रृंखला का उपयोग करके दक्षिण एशिया से संबंधित लोगों के लिए सटीक नैदानिक कैंसर उपचार करने के लिए 250 से अधिक अस्पतालों के साथ काम कर रहा है, जो अब तक कोकेशियान या व्हाइट पर आधारित थे लोग।

एम्स जम्मू ने कैंसर निदान और उपचार के लिए उन्नत जीनोमिक्स और प्रिसिजन मेडिसिन के लिए एक केंद्र स्थापित करने के लिए स्टार्टअप के साथ भागीदारी की है।

स्पोवम टेक्नोलॉजीज, बेंगलुरु, विशेष रूप से आईवीएफ प्रक्रियाओं में सहायता प्राप्त प्रजनन प्रौद्योगिकियों (एआरटी) में परिणामों को बेहतर बनाने के लिए एआई का उपयोग कर रहा है।

₹विश्व स्तर पर, मैनुअल हैंडलिंग के दौरान लगभग 5% अण्डाणुकोशिका क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। रोबोआईसीएसआई के साथ, हमने प्रक्रिया के दौरान भ्रूणविज्ञानियों को 200 से अधिक चर में पैटर्न को पहचानने में मदद करके शून्य प्रतिशत अधः पतन का प्रदर्शन किया है

स्टार्टअप ने पहले ही 2,000 से अधिक प्रक्रियाओं का समर्थन किया है और यह वर्तमान में पूरे भारत में 41 आईवीएफ क्लीनिकों के साथ काम करता है।

इसी तरह, आईआईटी मद्रास और ट्रांसलेशनल हेल्थ साइंस एंड टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट द्वारा विकसित एआई मॉडल गारभिनी-जीए 2 का उद्देश्य भारतीय आबादी के लिए गर्भावस्था के दूसरे और तीसरे तिमाही में गर्भावधि उम्र (जीए) का सटीक अनुमान लगाना है, जिसे पहले कोकेशियान मॉडल का उपयोग करके मापा गया था।

चुनौतियां

जबकि एआई अपनाने में वृद्धि हो रही है, विशेषज्ञों ने आगाह किया कि स्वास्थ्य संगठनों को शासन विकसित करने की आवश्यकता होगी।

'चोरी' हो गई ! चोरी जनाब

शहर में कभी कोई ऐसी घटनाएं हो जाती है । जिसकी कल्पना करना , कल्पनाओं की कल्पना से बाहर की बात हो जाती है वह इसलिए कि , मामला चोरी का है और चोरी भी ऐसी जिसका कोई जवाब नहीं।

मेरे शहर के थाने में चोरी हो ! गई क्या कह रहे हो ! कह नहीं रहा हूं । चिल्ला नहीं रहा हूं । बता रहा हूं कि , थाने में चोरी हो गई । किसी स्वार्थी नेता की तरह मैं किसी मुद्दे को स्वार्थ सिद्धि के लिए आमजन के बीच छल नहीं रहा हूं इसलिए कहता हूं । जागरूक बनो । जाग कर रूकने वालें ₹जागरूकर₹ मत बनो । थाने में हुई चोरी की घटना को लेकर सोशल मीडिया के सभी प्लेटफॉर्म पर और प्रिंट मीडिया में इस खबर को प्रमुखता के साथ प्रकाशित हुई है और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तो ₹सबसे आगे₹ निकलते हुए इस विषय को बहस का मुद्दा बनाती हुई एक्सपर्ट बिठाकर इस पर चर्चा कर रही है कि , आखिरी थाने में चोरी के पिछे किसका हाथ है ? और तुम कुंभकर्ण की तरह सोए हुए हो। जागो मोहन प्यारे जागो । आओ खबरीलाल चाय की चुस्कियां लो । नहीं नहीं , ₹चाय₹ की बात मेरे सामने करना भी मत । समझाना मेरा इशारा को ! मैं क्या कहना चाहता हूं ? कभी-कभी चोरी ऐसी ऐसी हो जाती है ।

हे भगवान ! यह कैसा समय आ गया घरों , दुकानों और अन्य स्थानों पर चोरी होने की घटनाएं देखने , सुनने , पढ़ने को मिल रही लेकिन , सबसे आश्चर्यजनक बात तो यह है कि , चोरों की इतनी हिम्मत कैसे हो गई ? उसने थाने में भी चोरी कर ली और तो और कानून के नाक के नीचे चोरी हो गई ? मेरे बाप ख़बरी लाल ₹चुनावी₹ पोल की तरह घर वालों के सामने मेरी ₹पोल₹ मत खोल थाने में किसकी चोरी हो गई ? यह मुंह खोलकर बोल । मेरा बाप तेरे हाथ जोड़ता हूं । ₹ख़बरी लाल₹ बातों की दुकान बंद कर और थाने में हुई चोरी की घटना को तत्काल समझाओ आखिर मामला क्या है ?

बात कुछ नहीं है बस ! चुनाव के समय हुई गड़बड़ी के मामले मे धाकड़ मोहल्ले के धाकड़ पहलवान ₹ धरती पकड़ ₹ कई दिनों से जेल में बंद है और उनकी जमानत के लिए उनके वकील ₹ ओ पी डी ₹ ने फाइल को थाने में जमा करवाई थी और वहीं फाइल थाने से चोरी हो गई और इधर , पहलवान की फाइल फाइल में उलझ गई । हाए रे किस्मत पहलवान के , छुटने के अरमान पानी में बह गए । थाने में लगे सी सी टीवी कैमरे एक्सपर्ट ने हर पहलू ओं को खंगाल लिए मगर दुख की बात यह है कि , चोरी करने वालों का कोई भी सुराग हाथ में नहीं लगा । आखिर फाइल गईं तो कहां गई ? कौन चोरी कर गया ? इस मामले को दबाने के लिए थानाधिकारीयों ने चारों तरफ़ हाथ पैर मार लिये थे , मगर थाने के खुफिया विभाग जो सीधा मीडिया के मुंह लगा है और उसने चाय की टेबल पर उसने सारे राज़ खोल कर रख दिया और मिडिया ने नमक मिर्च लगाकर इस खबर को खबर बनाते हुए खबर को अफवाह की तरह पूरे शहर में फैलाई अधिकारियों देखते रह गए ।

थाने में हुई चोरी की जांच जब सीबीआई से करवाई गई तो थाने में चोरी करने वाला और कोई नहीं निकाला बल्कि चोर ₹ चूहा पहलवान ₹ निकला जिसने धाकड़ पहलवान के जमानत के फाइल को कुतर कुतर (इधर उधर) करके जमानत पर पानी फेर दिया क्योंकि धाकड़ पहलवान और चूहा पहलवान के बीच काफी दिनों से विवाद चल रहे थे इसलिए ₹ चूहा पहलवान ₹ ने बदला लेने के लिए धाकड़ पहलवान की जमानत के कागजात को थाने से सीधे ठिकाने लगा दिए ।

फिर क्या हुआ ! धाकड़ पहलवान की जमानत के कागजात के गुम होने पर ओ पी डी ने कई धाराओं की धाराएं बहाकर थाने में बाढ़ ला दी ।

फिर क्या हुआ ! फिर भगवान से ज्यादा पावरफुल नेता ₹ लक्ष्मी नारायण ₹ की कृपा दृष्टि से मामला शांत हुआ। चूहा पहलवान की धड़पकड़ के लिए टीम गठित हो गई और जगह जगह छापे की कार्रवाई की गई और अन्ततः पुलिस ने सफलतापूर्वक कार्यवाही को अंज़ाम देकर चूहा पहलवान को गिरफ्तार किया चोरी के मामले में चूहा पहलवान को गिरफ्तार किया और धाकड़ पहलवान को रिहा किया ।

- प्रकाश हेमावत

चिकित्सक: हर हारी हुई उम्मीद का अंतिम प्रहरी

जब जीवन की डोर किसी अनजानी पीड़ा से उलझने लगती है, जब साँसें संदेह और भय से जकड़ने लगती हैं, तब एक चेहरा विश्वास का उजाला बिखेरता है— जो रक्षक भी है, और संजीवनी भी, वह है नब्ज की भाषा समझने वाले देवदूत चिकित्सक। मानवता की सेवा में अटल, विज्ञान और करुणा का अनुपम मेल, एक ऐसा व्यक्तित्व जो न केवल रोग से जूझता है, बल्कि रोगी को जीने का हौसला भी देता है। 1 जुलाई का दिन भारत में इन्हीं जीवनदाताओं को समर्पित है—'राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस', जो उन निःस्वार्थ सेवकों के प्रति कृतज्ञता और सम्मान का प्रतीक है, जिनकी धड़कनें देश के स्वास्थ्य से जुड़ी हैं। यह दिन हमें न केवल उनके योगदान को याद करने का अवसर देता है, बल्कि उनके सामने आने वाली चुनौतियों पर विचार करने और एक संवेदनशील समाज के निर्माण का संकल्प लेने का भी आह्वान करता है।

यह दिवस भारत के महान चिकित्सक, स्वतंत्रता सेनानी और प्रखर राजनेता डॉ. बिधान चंद्र रॉय की स्मृति में मनाया जाता है। उनका जन्म और निधन, दोनों ही 1 जुलाई को हुए—यह महज संयोग नहीं, बल्कि उनके जीवन की पूर्णता का प्रतीक है। भारत रत्न से सम्मानित डॉ. रॉय न केवल एक कुशल चिकित्सक थे, बल्कि पश्चिम बंगाल के लोकप्रिय मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने चिकित्सा और प्रशासन के क्षेत्र में अमिट छाप छोड़ी। उनके प्रयासों से अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) जैसे संस्थानों की नींव पड़ी और भारतीय चिकित्सा परिषद (एमसीआई) को मजबूती मिली। उनके लिए चिकित्सा केवल पेशा नहीं, बल्कि एक धर्म था—एक ऐसा दायित्व, जो आज भी हर चिकित्सक के हृदय में जीवित है। उनकी यह विरासत हमें सिखाती है कि चिकित्सक का कर्तव्य सिर्फ इलाज करना नहीं, बल्कि समाज को स्वस्थ और सशक्त बनाना है।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना किसी युद्ध से कम नहीं। भारतीय चिकित्सा परिषद के अनुसार, देश में लगभग 13 लाख पंजीकृत चिकित्सक हैं, जिनमें से करीब 8 लाख सक्रिय रूप से सेवा दे रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के मानक के अनुसार, प्रत्येक 1000 लोगों पर एक डॉक्टर होना चाहिए। भारत में यह अनुपात 1:834 है, जो भले ही वैश्विक औसत से बेहतर हो, लेकिन ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच गहरी खाई इसे कमजोर बनाती है। शहरी क्षेत्रों में जहाँ यह अनुपात 1:400 तक पहुँच जाता है, वहीं ग्रामीण भारत में यह 1:3000 से भी बदतर है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी) में चिकित्सकों की कमी, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा, और सीमित संसाधन आज भी गंभीर चुनौतियाँ हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में केवल 30% स्वास्थ्य केंद्रों में ही पूर्णकालिक चिकित्सक उपलब्ध हैं, जो इस असमानता को और उजागर करता है।

इन विषम परिस्थितियों के बावजूद, भारतीय चिकित्सक एक सच्चे योद्धा की तरह हर चुनौती का सामना करते हैं। कोविड-19 महामारी इसका सबसे जीवंत उदाहरण है। वर्ष 2020 से 2022 के बीच, भारतीय चिकित्सा संघ (आईएमए) के अनुसार, लगभग 1600 से अधिक चिकित्सकों ने अपनी जान गँवाई। फिर भी, लाखों डॉक्टरों ने दिन-रात, बिना थके, बिना डरे, मरीजों की सेवा की। उस दौर में, जब दुनिया ठहर-सी गई थी, अस्पतालों में चिकित्सकों की धड़कनें ही जीवन की लय बनकर उभरीं। उन्होंने न केवल लाखों लोगों की जान बचाई, बल्कि भय और अनिश्चितता के बीच मानसिक बल भी प्रदान किया। इस दौरान भारत में लगभग 5 करोड़ से अधिक लोगों को कोविड से संबंधित चिकित्सा सेवाएँ दी गईं, जिनमें से अधिकांश का श्रेय चिकित्सकों की अथक मेहनत को जाता है।

भारत में हर दिन औसतन 75 लाख से अधिक लोग चिकित्सा सेवाएँ प्राप्त करते हैं। इनमें सरकारी अस्पताल, निजी क्लिनिक, स्वास्थ्य शिविर और अब तेजी से बढ़ रही टेलीमेडिसिन सेवाएँ शामिल हैं। वर्ष 2024 तक, टेलीमेडिसिन के माध्यम से लगभग 10 करोड़ से अधिक परामर्श सत्र पूरे हो चुके हैं, जो चिकित्सा की पहुँच को ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों तक ले जाने में एक क्रांतिकारी कदम है। लेकिन इन सभी सेवाओं की रीढ़ वही चिकित्सक हैं, जो न केवल दवा देते हैं, बल्कि करुणा और विश्वास का वह अमूल्य स्पर्श भी प्रदान करते हैं, जो किसी मशीन से संभव नहीं। कई चिकित्सक निःशुल्क शिविरों, सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों और गैर-लाभकारी संगठनों के माध्यम से समाज के सबसे वंचित वर्गों तक पहुँच रहे हैं। उदाहरण के लिए, 'डॉक्टर्स फॉर यू' जैसे संगठन हर साल लाखों लोगों को मुफ्त चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करते हैं, जिनमें से अधिकांश दूरस्थ और आपदा प्रभावित क्षेत्रों में होते हैं।

हालाँकि, इस सेवा भाव के पीछे कई गंभीर चुनौतियाँ भी हैं। भारतीय चिकित्सा संघ के एक सर्वेक्षण के अनुसार, 75% से अधिक चिकित्सक अपने कार्यस्थल पर किसी न किसी रूप में दुर्व्यवहार या हिंसा का सामना करते हैं। यह हिंसा मौखिक अपशब्दों से लेकर शारीरिक हमलों तक हो सकती है। यह तथ्य न केवल चिंताजनक है, बल्कि शर्मनाक भी। जो व्यक्ति जीवन बचाने के लिए दिन-रात मेहनत करता है, उसकी सुरक्षा और सम्मान सुनिश्चित करना समाज का प्राथमिक दायित्व है। इसके अलावा, चिकित्सकों को लंबे कार्य घंटों, मानसिक तनाव और सतत अध्ययन की चुनौती का भी सामना करना पड़ता है। एक औसत चिकित्सक सप्ताह में 60-70 घंटे काम करता है, और कई बार रातों की नींद भी त्याग देता है। फिर भी, उनका समर्पण अडिग रहता है। चिकित्सक का जीवन केवल तकनीकी ज्ञान और कौशल तक सीमित नहीं है। यह संवेदना, धैर्य और मानवीयता का संगम है। हर सफल उपचार के पीछे अनगिनत बलिदान छिपे होते हैं—पारिवारिक समय की कमी, व्यक्तिगत जीवन का त्याग, और निरंतर सीखने की प्रक्रिया। आज चिकित्सा जगत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक सर्जरी, और जीन थेरेपी जैसे नवाचार तेजी से बढ़ रहे हैं। भारत में ही 2024 तक 500 से अधिक अस्पतालों ने रोबोटिक सर्जरी को अपनाया है, और टेलीमेडिसिन का उपयोग 50% से अधिक बढ़ा है। लेकिन इन तकनीकी प्रगतियों के बीच भी, एक चिकित्सक की करुणामयी नजर और सांत्वनादायक शब्द ही मरीज को सबसे पहले राहत देते हैं। मशीनें शरीर का इलाज कर सकती हैं, लेकिन मन और आत्मा को ठीक करने का काम केवल एक संवेदनशील चिकित्सक ही कर सकता है।

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस केवल एक औपचारिक उत्सव नहीं, बल्कि एक गहन आत्मचिंतन का अवसर है। यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम अपने चिकित्सकों को वह सम्मान, सुरक्षा और संसाधन दे पा रहे हैं, जिनके वे हकदार हैं? क्या हम एक ऐसा समाज बना पा रहे हैं, जो उनके बलिदानों को समझे और उनकी गरिमा की रक्षा करे? तकनीक भले ही कितनी भी उन्नत हो जाए, लेकिन चिकित्सक का मानवीय स्पर्श ही सच्चा उपचार है। इस राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस पर हम केवल धन्यवाद तक सीमित न रहें। यह समय है एक संकल्प का—एक ऐसे समाज के निर्माण का, जो अपने चिकित्सकों को हर कदम पर सम्मान, सुरक्षा और समर्थन दे। क्योंकि जब चिकित्सक मुस्कराता है, तब राष्ट्र स्वस्थ और सशक्त होता है। उनके बिना हमारा जीवन अधूरा है, और उनकी सेवा ही हमारी सबसे बड़ी ताकत है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

संविधान की प्रस्तावना में शामिल 'समाजवादी' व 'धर्मनिरपेक्षता' शब्द पर जारी सियासत के मायने

कमलेश पांडेय

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ यानी आरएसएस सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने संविधान की प्रस्तावना में बाद में शामिल किए गए दो शब्दों 'संविधान की प्रस्तावना में शामिल "समाजवादी" व "धर्मनिरपेक्ष" शब्द पर जारी सियासत के मायने' और 'धर्मनिरपेक्ष' को 'संविधान हत्या दिवस' के दिन ही हटवाने की जो बात कही है, उसके राष्ट्रीय, सामाजिक और धार्मिक मायने तो स्पष्ट हैं, लेकिन उनकी इस साफगोई ने इन तमाम विवादास्पद शब्दों से जुड़े सियासी अंतर्विरोधों को उजागर कर दिया है। ऐसा इसलिए कि एक तरफ इस बयान को लेकर जहां कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों के नेताओं के अलावा एनडीए की सहयोगी लोजपा ने भी होसबोले की टिप्पणी की आलोचना की है, वहीं भाजपा ने होसबोले का बचाव किया है। एक सवाल है, क्या आपातकाल के दौरान संविधान की प्रस्तावना में शामिल किए गए 'समाजवादी' और 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द वहीं बने रहने चाहिए, का जवाब देते हुए केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान और डॉ. जितेंद्र सिंह ने दोनों शब्दों को हटवाए जाने के विचार का समर्थन किया है।

वहीं, होसबोले की टिप्पणी का उल्लेख करते हुए विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा कि "आरएसएस का मुखौटा" "फिर से उतर गया है" और संविधान उन्हें परेशान करता है "क्योंकि यह समानता, धर्मनिरपेक्षता और न्याय की बात करता है।" गांधी ने कहा कि, "आरएसएस-बीजेपी" गठबंधन "मनुस्मृति चाहता है" और हाशिए पर पड़े लोगों और गरीबों को उनके अधिकारों से वंचित करना चाहता है। उन्होंने कहा, "उनका असली एजेंडा संविधान जैसे शक्तिशाली हथियार को उनसे छीनना है।"

वहीं, कांग्रेस के राज्यसभा सांसद जयराम रमेश ने कहा है कि 1949 से ही आरएसएस ने संविधान पर हमला किया है, संविधान का विरोध किया है। उन्होंने कहा कि संघ के लोगों ने पंडित नेहरू और आंबेडकर के पुतले जलाए थे।

वहीं, केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने कहा कि, "इन सिद्धांतों को बदनाम करने के लिए आपातकाल लागू करना एक धोखेबाज़ी भरा कदम है, खासकर तब जब आरएसएस ने अपने अस्तित्व के लिए उस समय इंदिरा गांधी सरकार के साथ मिलीभगत की थी... अब उस अवधि का उपयोग संविधान को कमजोर करने के लिए करना सरासर पाखंड और राजनीतिक अवसरवाद को दर्शाता है।"

इस प्रकार जहां कांग्रेस ने कहा कि, "ये बाबा साहेब के संविधान को ख़त्म करने की वो साजिश है, जो आरएसएस-बीजेपी हमेशा से रचती आई है। लोकसभा चुनाव में तो बीजेपी के नेता खुलकर कह रहे थे कि हमें संविधान बदलने के लिए संसद में 400 से ज्यादा सीटें चाहिए। अब एक बार फिर वे अपनी साजिशों में लग गए हैं लेकिन कांग्रेस किसी कीमत पर इनके मंसूबों को कामयाब नहीं होने देगी।" उसने साफ कहा है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और बीजेपी की सोच ही संविधान विरोधी है।

वहीं, सत्तारूढ़ एनडीए गठबंधन में शामिल लोजपा, राजग की एकमात्र सहयोगी पार्टी है जिसने होसबोले की टिप्पणी पर गठबंधन विचार के विपरीत प्रतिक्रिया दी है। लोजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एके बाजपेयी ने कहा कि, "अगर यह मुद्दा गठबंधन के सामने लाया जाता है तो हम इसका विरोध करेंगे। हम समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता के रक्षक हैं।" इसके ठीक उलट भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने पिछले सात दशकों में संविधान और उसकी भावना से छेड़छाड़ करने के हर कृत्य के पीछे कांग्रेस का हाथ होने का आरोप लगाया और कहा कि उसे इस आपातकाल के लिए माफी मांगनी चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि, "भाजपा आपातकाल के दौरान कांग्रेस सरकार द्वारा लोगों के मौलिक अधिकारों के घोर उल्लंघन और अत्याचारों का मुद्दा उठाती रही है और कांग्रेस से माफी की मांग करती रही है लेकिन पार्टी माफी मांगने को तैयार नहीं है और इसके बजाय मुद्दे को भटका रही है।"

वहीं, केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने स्पष्ट कहा है कि, "सर्व धर्म समभाव भारतीय संस्कृति का मूल है। धर्म निरपेक्षता हमारी संस्कृति का मूल नहीं है। इसलिए इस पर जरूर विचार होना चाहिए कि आपातकाल में जिस धर्म निरपेक्षता शब्द को जोड़ा गया, उसको हटा दिया जाए।"

वहीं, समाजवाद पर चौहान ने कहा कि सभी को अपने जैसा मानना भारतीय मूल विचार है। उन्होंने कहा कि यह विश्व एक परिवार है (वसुधैव कुटुम्बकम), यही भारत का मूल विचार है। उन्होंने कहा कि, "यहां समाजवाद की कोई जरूरत नहीं है। हम लंबे समय से कहते आ रहे हैं कि सभी के साथ एक जैसा व्यवहार होना चाहिए। इसलिए, समाजवाद शब्द की भी जरूरत नहीं है और देश को निश्चित रूप से इस बारे में सोचना चाहिए।"

वहीं, केंद्रीय राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा कि उन्हें नहीं लगता कि होसबोले की टिप्पणी पर "कोई दूसरा विचार" किया गया है। उन्होंने कहा, "होसबोले जी ने कहा है कि 'धर्मनिरपेक्ष' और 'समाजवादी' शब्द 42वें संशोधन के बाद हमारी प्रस्तावना में जोड़े गए क्योंकि ये बाबासाहेब अंबेडकर द्वारा नहीं दिए गए थे।" जबकि डॉ. बीआर अंबेडकर द्वारा दुनिया के सर्वश्रेष्ठ संविधानों में से एक का निर्माण किए जाने की ओर इशारा करते हुए सिंह ने कहा, "यदि यह उनकी सोच नहीं थी तो फिर किसी ने किस सोच के साथ इन शब्दों को जोड़ा।"

यह पूछे जाने पर कि क्या भाजपा 'धर्मनिरपेक्ष' और 'समाजवादी' शब्दों को हटाने की मांग का समर्थन करती है, सिंह ने कहा, "कौन नहीं करना चाहता? हर सही सोच वाला नागरिक इसका समर्थन करेगा क्योंकि हर कोई जानता है कि वे मूल संविधान दस्तावेज़ का हिस्सा नहीं हैं, जिसे डॉ अंबेडकर और समिति के बाकी सदस्यों ने लिखा था।"

उन्होंने कहा, "यह भाजपा बनाम गैर-भाजपा का सवाल नहीं है, यह लोकतांत्रिक मूल्यों और संवैधानिक मूल्यों के संरक्षण का सवाल है।"

उन्होंने आगे कहा कि आपातकाल कोई अचानक किया गया परिवर्तन नहीं था बल्कि यह कांग्रेस की वैचारिक बुनियाद का परिणाम था। उन्होंने कांग्रेस पर भाई-भतीजावाद, अधिनायकवाद और अवसरवाद में डूबे रहने तथा हमेशा अपने हितों को देश के हितों से ऊपर रखने का आरोप लगाया। वहीं, प्रख्यात लेखिका तवलीन सिंह लिखती हैं कि, "भारतीय संस्कृति का मूल सर्वधर्म समभाव है, न कि धर्म निरपेक्षता। इसलिए आपातकाल के दौरान जोड़े गए धर्म निरपेक्ष शब्द को हटाने पर चर्चा होनी चाहिए।"

बता दें कि दत्तात्रेय होसबाले ने गत संविधान हत्या दिवस के दिन गुरुवार को कहा था कि 'समाजवादी' और 'धर्मनिरपेक्ष' शब्दों को आपातकाल के दौरान संविधान की प्रस्तावना में शामिल किया गया था। उन्होंने कहा, "आपातकाल के दौरान ही संविधान की प्रस्तावना में दो शब्द जोड़े गए। ये दो शब्द 'समाजवादी' और 'धर्मनिरपेक्ष' हैं। ये प्रस्तावना में पहले नहीं थे।"

दत्तात्रेय होसबाले ने आगे कहा कि, "बाबा साहेब ने जो संविधान बनाया, उसकी प्रस्तावना में ये शब्द कभी नहीं थे। आपातकाल के दौरान जब मौलिक अधिकार निलंबित कर दिए गए, संसद काम नहीं कर रही थी, न्यायपालिका पंगु हो गई थी, विपक्ष जेल यातना सह रहा था, तब ये शब्द जोड़े गए।" यही वजह है कि होसबाले ने दो टूक शब्दों में कहा, "इन्हें प्रस्तावना में रहना चाहिए या नहीं, इस पर विचार किया जाना चाहिए।" स्पष्ट है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने संविधान की प्रस्तावना से सोशलिस्ट और सेक्यूलर शब्द हटाने की वकालत की है। सवाल है कि आखिर संघ इन दो शब्दों को क्यों हटवाना चाहता है और इन्हें लेकर डॉक्टर आंबेडकर का क्या रुख था? तो जवाब होता कि इमरजेंसी के 50 साल पूरे होने के मौके पर नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में दत्तात्रेय होसबाले ने संविधान की प्रस्तावना से 'सोशलिस्ट' और 'सेक्यूलर', ये दो शब्द हटाने की मांग की और कांग्रेस से इंदिरा गांधी की सरकार के इमरजेंसी लगाने के फैसले को लेकर माफी मांगने की भी मांग की। उन्होंने कांग्रेस पर तंज करते हुए कहा कि उस समय जो लोग यह सब कर रहे थे, वह आज संविधान की कॉपी लेकर घूम रहे हैं।

इस प्रकार देखा जाए तो संविधान की प्रस्तावना में सोशलिस्ट और सेक्यूलर, इन दोनों शब्दों को लेकर एक नई बहस भी छिड़ गई है, जबकि सुप्रीम कोर्ट की भी इस पर राय आ चुकी है कि संविधान की प्रस्तावना में छेड़छाड़ नहीं किया जा सकता है। इसलिए पूरक सवाल अब यह उठाया जा रहा है कि तब आपातकाल के दौरान संविधान के प्रस्तावना में हुए छेड़छाड़ को विलोपित किया जाए। प्रथमदृष्टया यह मांग गलत भी नहीं प्रतीत होता है।

संघ नेता होसबोले ने कहा कि इस पर विचार किया जाना चाहिए कि क्या कांग्रेस सरकार की ओर से इमरजेंसी के समय संविधान की प्रस्तावना में जोड़े गए सोशलिस्ट और सेक्यूलर शब्द बरकरार रखे जाने चाहिए या नहीं? उन्होंने इन दोनों शब्दों को हटाने की वकालत की। क्योंकि 1976 में 42वें संविधान संशोधन के माध्यम से संविधान की प्रस्तावना में 'सॉवरेन सोशलिस्ट सेक्यूलर डेमोक्रेटिक रिपब्लिक' शब्द जोड़ा गया था। तब देश में इमरजेंसी लागू थी।

दरअसल, संविधान की प्रस्तावना से ये शब्द हटाने की मांग के पीछे यह तर्क दिया जाता है कि इन्हें तब जोड़ा गया था, जब तानाशाही थी और सरकार की बातें ही कानून थीं। इन शब्दों को संसद में चर्चा कर जोड़े जाने की जगह थोपा गया था। दावे यह भी किए जाते हैं कि सोशलिस्ट देश के रूप में पहचान से पॉलिसी चॉइस सीमित हो जाती है। मसलन, संघ की अगुवाई वाले दक्षिणपंथी सेक्यूलर को भारत की हिंदुत्व की विरासत को नकारने जैसा मानते हैं।

वहीं, देश का एक तबका संविधान की प्रस्तावना में जोड़े गए इन शब्दों का समर्थन भी करता है, जो यह तर्क देते हैं कि इससे भारत की समन्वयकारी संस्कृति स्पष्ट होती और ये शब्द समाज के प्रति सरकार की जिम्मेदारी, आस्था से जुड़े विषयों पर सरकार के न्यूट्रल स्टैंड को भी दर्शाते हैं।

बता दें कि संविधान सभा में सोशलिस्ट और सेक्यूलर पर चर्चा हुई थी? बावजूद इसके सोशलिस्ट और सेक्यूलर संविधान के मूल ड्राफ्ट का अंग नहीं थे। इन शब्दों पर संविधान सभा में भी चर्चा हुई थी, क्योंकि संविधान सभा के कुछ सदस्यों ने संविधान की प्रस्तावना में सोशलिस्ट और सेक्यूलर शब्द जोड़ने का प्रस्ताव रखा था। ऐसा करने वाले सदस्यों का मत था कि सोशलिस्ट और सेक्यूलर शब्द देश की विचारधारा को प्रदर्शित करेंगे।

उल्लेखनीय है कि संविधान सभा के सदस्य रहे प्रोफेसर के टी शाह ने ये शब्द संविधान में शामिल कराने के लिए कई प्रयास किए क्योंकि उनका तर्क था कि सेक्यूलर शब्द से धर्म को लेकर न्यूट्रल रहने की प्रतिबद्धता जाहिर होगी और सोशलिस्ट शब्द आर्थिक असमानता दूर करने का उद्देश्य दर्शाएगा। इसकी प्रकार एचवी कामथ और हसरत मोहानी ने भी प्रोफेसर केटी शाह के तर्क का समर्थन किया था। हालांकि, संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव आंबेडकर ने संविधान में इन शब्दों को शामिल किए जाने का विरोध किया था क्योंकि वह सोशलिस्ट को एक अस्थायी नीति के रूप में देखते थे, संवैधानिक आदेश के रूप में नहीं। डॉक्टर आंबेडकर का यह स्पष्ट मत था कि ऐसी नीतियों को भविष्य की सरकारों पर छोड़ देना चाहिए। तब उन्होंने कहा था कि संविधान की प्रस्तावना में सोशलिस्ट का स्थायी सिद्धांत के रूप में वर्णन लोकतंत्र के लचीलेपन को कमजोर करेगा।

याद दिला दें कि तब डॉक्टर आंबेडकर ने कहा था, "राज्य की नीति क्या होनी चाहिए...यह ऐसा मामला, जिसे समय और परिस्थितियों के मुताबिक लोगों को खुद तय करना चाहिए। इसे संविधान में नहीं रखा जा सकता। ऐसा करना लोकतंत्र को नष्ट कर देगा।" तब उन्होंने यह तर्क भी दिया था कि सोशलिस्ट शब्द संविधान के नीति निर्देशक तत्वों में पहले से ही शामिल है। इसलिए भी यह संविधान की प्रस्तावना में गैरजरूरी हो जाता है।

उन्होंने प्रोफेसर केटी शाह के जवाब में दो टूक शब्दों में कहा था कि अगर नीति निर्देशक तत्व अपने डायरेक्शन और कंटेंट में समाजवादी नहीं हैं तो यह समझने में विफल हूं कि इससे अधिक सोशलिज्म क्या हो सकता है। उन्होंने कहा था कि ये सोशलिस्ट सिद्धांत पहले से ही हमारे संविधान में शामिल हैं और यह संशोधन स्वीकार करना गैर जरूरी है।

वहीं, बौद्ध धर्म मानने वाले डॉक्टर आंबेडकर का भारत के बहुसांस्कृतिकवाद में भरोसा था और सेक्यूलर को लेकर उनका मत था कि यह शब्द गैर जरूरी है। उनका तर्क था कि संविधान में मौलिक अधिकारों के माध्यम से पहले ही इसकी गारंटी दी जा चुकी है। यह प्रस्तावना के मसौदे में भी पहले से ही निहित है। डॉक्टर आंबेडकर ने सेक्यूलरिज्म की अवधारणा का नहीं, इसके उल्लेख का विरोध किया। उनका मत था कि संविधान की संरचना इस सिद्धांत को बरकरार रखती है और राज्य सभी धर्मों के समान व्यवहार सुनिश्चित करेगा। यह सुनिश्चित किया जाएगा कि बिना किसी लेबल के किसी के भी साथ भेदभाव न हो।

वहीं, देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की इमेज एक कट्टर समाजवादी और सेक्यूलरिज्म के समर्थक नेता की है। उन्होंने सभी के लिए धार्मिक स्वतंत्रता की वकालत करते हुए कहा था कि इसमें उन लोगों की स्वतंत्रता भी शामिल है, जिनका कोई धर्म नहीं है। नेहरू ने भी सोशलिस्ट और सेक्यूलर शब्द को प्रस्तावना में शामिल किए जाने की पैरवी नहीं की क्योंकि नेहरू का यह मानना था कि संविधान की संरचना हर धर्म के लिए सम्मान के साथ ही कल्याणकारी राज्य सुनिश्चित करती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि संविधान निर्माता आंबेडकर और आधुनिक भारत के निर्माता व प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू, दोनों के ही मत इस विषय पर एक समान थे। उन दोनों का ही यह स्पष्ट मत था कि संविधान को रूपरेखा तय करनी चाहिए, निश्चित नीति नहीं। यही वजह है कि जब 26 नवंबर, 1949 को संविधान सभा ने सोशलिस्ट और सेक्यूलर शब्द के बिना प्रस्तावना को अंगीकार किया तो फिर सोशलिस्ट और सेक्यूलर शब्द प्रस्तावना में क्यों जोड़े गए?

उल्लेखनीय है कि इंदिरा गांधी की अगुवाई वाली सरकार ने 1976 में संविधान की प्रस्तावना में सोशलिस्ट और सेक्यूलर शब्द जोड़े। उनके इस फैसले के पीछे कल्याणकारी राज्य के प्रति राज्य की प्रतिबद्धता को उद्देश्य बताया गया। साथ ही यह तर्क भी दिए गए कि गरीबी हटाओ के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को यह दर्शाता है। तब सरकार की ओर से यह भी कहा गया था कि संविधान के मूल उद्देश्य को दर्शाने, धर्म को लेकर तटस्थ रुख मजबूत करने के लिए सेक्यूलर शब्द जोड़ा गया।

हालांकि, यह संशोधन रेट्रोएक्टिव तरीके से 26 नवंबर 1949 की तारीख से लागू किया गया जिसे बाद में आलोचकों ने चुनौती भी दी। इमरजेंसी के बाद 1977 में चुनाव हुए और जनता पार्टी की सरकार बनी। तब भी परवर्ती सरकार ने 42वें संविधान संशोधन के कुछ भाग हटा दिए लेकिन सोशलिस्ट और सेक्यूलर शब्द बरकरार रखे गए।

कुछ यही वजह है कि सुप्रीम कोर्ट ने डॉक्टर बलराम सिंह बनाम यूनियन ऑफ इंडिया केस में पिछले ही साल (2024 में) ही सोशलिस्ट और सेक्यूलर शब्द संविधान की प्रस्तावना में शामिल किए जाने को दी गई चुनौती खारिज कर दी थी। तब सर्वोच्च न्यायलय ने अपने फैसले में कहा कि संविधान एक जीवंत दस्तावेज है और इसमें संसद संशोधन कर सकती है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि समय के साथ भारत ने सेक्यूलरिज्म की अपनी व्याख्या का विकास किया है। इसमें राज्य न तो किसी धर्म का समर्थन करता है और ना ही किसी धर्म को दंडित करता है। यह सिद्धांत संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 16 में निहित हैं।

27 जुलाई को चलेगी स्वतंत्र भारत गौरव ट्रेन

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: सुंदरगढ़ और झारसुगुड़ा जिले के लोगों के लिए खुशखबरी है। दक्षिण पूर्व रेलवे 27 जुलाई को विशेष भारत गौरव ट्रेन शुरू करने जा रहा है। यह ट्रेन 12 दिनों में दक्षिण भारत के प्रमुख तीर्थ स्थलों का भ्रमण कराएगी। यह ट्रेन 11 रातों और 12 दिनों में दक्षिण भारत के प्रमुख तीर्थ स्थलों तिरुपति, रामेश्वरम, मदुरै, कन्याकुमारी और मल्लिकार्जुन का भ्रमण कराएगी।ट्रेन 27 जुलाई को भागलपुर स्टेशन से रवाना होगी। यह 7 अगस्त को फिर भागलपुर स्टेशन पहुंचेगी। ट्रेन जसडीही, मधुपुर, बराकर, धनबाद, बोकारो स्टील सिटी, मुरी, रांची, राउरकेला, झारसुगुड़ा, चंपा, बिलासपुर, रायपुर और दुर्ग स्टेशनों पर रुकेगी। दक्षिण पूर्व रेलवे ने बताया कि ओडिशा, छत्तीसगढ़, झारखंड और बिहार के तीर्थयात्री केंद्र सरकार के रियायती किराए पर इन प्रमुख तीर्थ स्थलों की यात्रा कर सकेंगे। ट्रेन में तीर्थयात्रियों के लिए दो श्रेणियों की व्यवस्था की गई है। स्लीपर क्लास में 720 यात्रियों के लिए व्यवस्था की गई है। तीसरी श्रेणी एससी श्रेणी में 70 सीटें हैं। किफायती पैकेज में यात्रियों को गारंटीड ट्रेन टिकट, सभी भोजन (चाय, नाश्ता, दोपहर का भोजन, रात का खाना) और डबल/ट्रिपल शेयरिंग के आधार पर आरामदायक आवास प्रदान किया जाता है।

बांगोपसागर में कम दबाव; भारी बारिश से कई जिलों में बाढ़ की स्थिति

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: आए चक्रवात के प्रभाव के कारण आज सुबह पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के तटों के साथ बंगाल की खाड़ी के उत्तर-पश्चिम में कम दबाव का क्षेत्र बना है। अगले 2 दिनों के दौरान इसके उत्तरी ओडिशा, पश्चिम बंगाल और झारखंड से होते हुए धीरे-धीरे पश्चिम-उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ने की संभावना है।तटीय और उत्तरी ओडिशा प्रभावित क्षेत्रों में भारी बारिश की संभावना है। कम दबाव के कारण उत्तर ओडिशा में फिर से बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। बुराबलांग, सन्नार रेखा में फिर से बाढ़ आने की संभावना है। संभावित कम दबाव को लेकर मत्स्य विभाग ने आज डाक मशीनों के माध्यम से चेतावनी जारी की है। मछुआरों को सलाह दी गई है कि वे पश्चिम बंगाल के दीघा के पास उदयपुर, तलासरी, बिचिरपुर और कीर्तिनिया के मुहाने पर समुद्र में न जाएं। इसके साथ ही तटीय और अंतर्देशीय क्षेत्रों को सतर्क रहने को कहा गया है। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार मत्स्य विभाग, ओडिशा के निर्देशानुसार समुद्र में बने कम दबाव के प्रभाव से आज से 1 तारीख तक समुद्र में भारी बारिश और हवा चलती रहेगी। नतीजतन समुद्र अशांत है, मछुआरों को समुद्र में न जाने की सलाह दी गई है। कहा गया है कि अपनी नावों और जालों को सुरक्षित स्थानों पर रखें और खुद भी सुरक्षित रहें। संपत्ति और जान की सुरक्षा के लिए इसका पालन करना बहुत जरूरी है।

कटक रेलवे स्टेशन के पास मालगाड़ी पटरी से उतरी, 3 डिब्बे पटरी से उतरे

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: कटक रेलवे स्टेशन पर मालगाड़ी के तीन खाली डिब्बे पटरी से उतर गए। हादसा स्टेशन की लूप लाइन नंबर 8 पर हुआ। हादसा सोमवार सुबह करीब 8:30 बजे हुआ। इस हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ।इस दुर्घटना के कारण भद्रक-कटक-विशाखापत्तनम रेल लाइन पर यातायात सामान्य है।इसी तरह कटक-पाराद्वीप मार्ग पर भी ट्रेनों की आवाजाही सामान्य है। मरम्मत के लिए एक मैकेनिकल ट्रेन मौके पर पहुंच गई है और उसने काम शुरू कर दिया है। हालांकि, खोरधा रोड रेलवे ने बताया है कि दोपहर तक काम पूरा हो जाएगा।

जिंदगी अजब पहेली हैं...!

यारों ये जिन्दगी भी अजब पहेली है,
दूध मुँहे बच्चों के साथ नई नवेली है।
बचपन के खेल-खेल में अठखेली है,
शिक्षा के द्वार पे दस्तक देती शैली है।
आओ के पाठशाला तुम्हारी सहेली है,
लो कॉपी-किताबें बस्ता रूपी थैली है।

यारों ये जिन्दगी भी अजब पहेली है,
दूध मुँहे बच्चों के साथ नई नवेली है।
बच्चे हुए हैं जवान नौकरी की देरी है,
यह न लगे तो संघर्षों की नई फेरी है।
दे दो साक्षात्कार जैसे कच्ची केरी है,
ये मांगते अनुभव ऐसे पोटली घेरी है।

यारों ये जिन्दगी भी अजब पहेली है,
दूध मुँहे बच्चों के साथ नई नवेली है।
बुजुर्गों के पैसा बीमारियों की ढेरी है,
पास है पैसा इलाज में भी ना देरी है।
ये जिन्दगी बड़ी अनमोल जादूगरी है,
ख्वाब दिखाती सारे यह कोई परी है।

संजय एम तराणेकर

मानसून में भूस्खलन और बाढ़ से ऐसे बचें !

जुलाई बारिश का महीना है और इन दिनों देश में जगह-जगह खूब मानसून बरस रहा है। बारिश से इन दिनों विशेषकर पहाड़ी राज्यों में (उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश) में तबाही का आलम है। मीडिया रिपोर्ट्स बतातीं हैं कि उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में 1 और 2 जुलाई के लिए ऑरेंज अलर्ट घोषित किया गया है, जिसमें मौसम विभाग ने आगाह किया है कि संवेदनशील या निचले इलाकों में रहने वाले लोगों को जलभराव और भूस्खलन का खतरा है। पहाड़ों पर बादलों ने तबाही मचा रखी है तो मैदानों में भी हाल बुरा है।केरल और झारखंड में भी बारिश ने कहर बरपाया है और इससे आम जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। हिमाचल प्रदेश के मंडी में अनेक घर खतरे की जद में आ गए हैं तो वहीं भूस्खलन भी हुआ है। हिमाचल प्रदेश में पशुशालाएं भी ध्वस्त हुईं बता रहे हैं। उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में भारी बारिश के कारण बाढ़ की समस्या पैदा हो गई है तथा भूस्खलन के कारण अनेक रास्ते बंद हो चुके हैं। उत्तराखंड में बारिश के कारण 24 घंटे के लिए चारधाम यात्रा रोकी गई है। ऐसे में जो यात्री ऋषिकेश पहुंच चुके उन्हें वहीं रोका जा रहा है।आगे की यात्रा को निकले यात्रियों को भी सुरक्षित स्थानों पर रोका जा रहा है। वहीं उत्तरकाशी में बड़कोट-यमुनोत्री मार्ग पर बादल फट गया तथा बलिगढ़ में निर्माणाधीन होटल साइट पर काम कर रहे 9 मजदूर लापता हो गए हैं। पुलिस के साथ एसडीआरएफ तथा एनडीआरएफ की टीमें मौके पर सर्च ऑपरेशन कर रही हैं।बादल फटने के चलते यमुनोत्री मार्ग भी प्रभावित हुआ है, तथा मौसम विभाग की ओर से ऋषिकेश, रुड़की, रानीखेत, देहरादून, उत्तरकाशी सहित कई जिलों में अगले 5 दिन के लिए भारी बारिश का अलर्ट है। मीडिया रिपोर्ट्स बतातीं हैं कि यमुनोत्री रूट पर बादल फटने से 2 मजदूरों की मौत हो गई।मौसम विभाग के मुताबिक दिल्ली के पूर्वी, पश्चिमी, दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी इलाकों में बारिश दर्ज की गई।अगले 7 दिनों के दौरान गोवा, मध्य महाराष्ट्र, गुजरात में अलग-अलग स्थानों पर भारी से बहुत भारी बारिश होने की संभावना जताई गई है।वहीं उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश में अलग-अलग स्थानों पर भारी बारिश होने की संभावना जताई गई है। जुलाई के दौरान पंजाब, हरियाणा में बारिश का अलर्ट है। वहीं 3 और 4 जुलाई को पश्चिमी राजस्थान, पूर्वी राजस्थान, हिमाचल प्रदेश में भी बहुत भारी बारिश होने की संभावना है। इतना ही नहीं, विदर्भ, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, पश्चिम बंगाल और सिक्किम, बिहार, मध्य प्रदेश में बहुत भारी बारिश का अलर्ट है। इधर हाल ही में जमशेदपुर जिले के कोवली थाना क्षेत्र स्थित लव कुश आवासीय विद्यालय में उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब लगातार हो रही भारी बारिश के कारण विद्यालय परिसर जलमग्न हो गया और स्कूल के अंदर मौजूद 162 बच्चे पानी में फंस गए। जैसे ही प्रशासन को इस स्थिति की जानकारी मिली, जमशेदपुर पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया और सभी बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाला।इधर, मनाली में हाईवे का एक हिस्सा पानी में बह गया, तथा राजस्थान के एक सरकारी अस्पताल में भी पानी घुस गया। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि इन दिनों मानसून लगभग-लगभग पूरे देश को कवर कर चुका है। पिछले एक हफ्ते से लगातार बारिश की वजह से कई राज्यों में बाढ़ जैसे हालात बन गए है। पाठकों को बताता चलूं कि मौसम विभाग (आइएमडी) ने आधिकारिक तौर पर पूरे देश में दक्षिण-पश्चिम मानसून के सक्रिय होने की घोषणा कर दी- जो कि इसकी सामान्य तिथि 8 जुलाई से 9 दिन पहले है।सच तो यह है कि उत्तर से लेकर दक्षिण और पहाड़ से लेकर मैदान तक भारी बारिश के बीच हर ओर उफनते सैलाब की तस्वीरें आ रही हैं। देश के कई प्रमुख शहरों में सड़कें पानी से लबालब भरी हैं, रास्ते जाम हो गये हैं तथा पहाड़ों में बादल फटने और भूस्खलन की घटनाएं सामने आई हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि भूस्खलन और बाढ़ से जानमाल का भारी नुकसान हुआ है। मौसम विभाग ने जुलाई और अगस्त में और अधिक बारिश का अनुमान जताया है, जिससे स्थिति और गंभीर हो सकती है। अंत में यही कहूंगा कि पिछले कुछ सालों से देश ही नहीं पूरे विश्व में जलवायु परिवर्तन एक कटु यथार्थ है। यह सब कहीं न कहीं मानवीय गतिविधियों का ही परिणाम है कि आज हम सभी जलवायु परिवर्तनों का लगातार सामना कर रहे हैं।यह ठीक है कि मानव बारिश को तो नहीं रोक सकता है लेकिन तबाही को समय रहते एहतियात बरतकर रोका जा सकता है अथवा काफी हद तक कम किया जा सकता है। आधुनिक तकनीक और उपकरणों का इस्तेमाल करके इसे कम किया जा सकता है। लेकिन प्रशासन व आम आदमी तब चेतता है,जब तक बहुत देर हो चुकी होती है। बाढ़ व भूस्खलन से निपटने के लिए समय रहते राहत और बचाव कार्य का प्रशिक्षण दिया जाना भी बहुत जरूरी है। वास्तव में कहना ग़लत नहीं होगा कि बाढ़ और भूस्खलन से बचाव के लिए, सबसे महत्वपूर्ण है कि हमें इन प्राकृतिक आपदाओं के प्रति जागरूक रहने की जरूरत है और उनसे बचने के लिए आवश्यक कदम उठाने की आवश्यकता है। बाढ़ से बचाव के लिए हमें बाढ़ प्रणव क्षेत्रों में ऊंचे स्थानों पर रहना चाहिए। आपातकालीन किट जैसे कि सूखा भोजन, पानी, दवाएं, टॉर्च, रेडियो और अन्य आवश्यक चीजें हमारे पास मौजूद होनी चाहिए। इतना ही नहीं हमें अपने परिवार के सभी सदस्यों को निकटतम आश्रय/पक्के मकान तक जाने वाले सुरक्षित मार्गों की जानकारी होनी चाहिए तथा बारिश के दौरान समय-समय पर स्थानीय अधिकारियों से संपर्क बनाए रखना बहुत ही महत्वपूर्ण और आवश्यक है।बाढ़ की चेतावनी और सलाह के लिए स्थानीय रेडियो/टीवी सुनना चाहिए अथवा अखबार आदि पढ़ना चाहिए। बाढ़ के समय बहते पानी, बिजली के तारों से, सांपों आदि से सावधान रहना चाहिए। वहीं पर भूस्खलन (लैंडस्लाइड) से बचाव के लिए हमें यह चाहिए कि हम नालों में कूड़ा-कचरा, पत्ते, प्लास्टिक की थैलियां, मलबा आदि न जमा होने दें और नालों को अच्छी तरह से साफ और स्वच्छ रखें। घरों, दुकानों,रहवास आदि को भूकंप-रोधी बनाया जाना चाहिए ताकि भूस्खलन के समय कम नुकसान हो अथवा नुकसान हो ही नहीं।अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए, ताकि उनकी जड़ें मिट्टी को पकड़ सकें। इतना ही नहीं,खतरे वाले क्षेत्रों से बचना चाहिए।अचानक बाढ़ और/या भूस्खलन के जोखिम वाले क्षेत्रों से दूर रहना चाहिए। भूस्खलन से सुरक्षा के लिए हमें यह चाहिए कि हम भूस्खलन के विभिन्न संकेतों जैसे कि दरारों, चट्टानों के गिरने, पेड़ों के टूटने या जमीन में पड़ने वाली दरारों पर विशेष ध्यान दें और भूस्खलन के रास्तों से हमेशा स्वयं को और पशुओं को दूर रखें।भूस्खलन के बाद, हमें यह चाहिए कि हम तुरंत किसी सुरक्षित स्थान पर चले जाएं। इसके साथ ही भूस्खलन के बारे में तुरंत स्थानीय अधिकारियों को सूचित करना चाहिए ताकि बचाव कार्य किए जा सकें। याद रखें कि हमारी सतर्कता और जागरूकता से बहुत कुछ संभव हो सकता है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

बरिंदा से रीता तक का सफर : आपातकाल के झंझावात में दीये की टिमटिमाती लौ के सहारे भूमिगत प्रतिरोध की कहानी

(संस्मरण : बृंदा करात, अनुवाद : संजय पराते)

पचास साल पहले, स्वतंत्र भारत को तानाशाही का पहला अनुभव हुआ था। इंदिरा गांधी द्वारा आपातकाल की घोषणा, मौलिक अधिकारों के निलंबन, सभी प्रकार की असहमतियों का निर्मम दमन और एक लाख से अधिक लोगों की गिरफ़्तारी जैसे कार्यों ने हमारे संविधान और न्यायपालिका सहित सभी संस्थानों की कमज़ोरी को और शक्तियों के संकेन्द्रण के ख़तरनाक परिणामों को उजागर कर दिया था। "राष्ट्रीय हित" के नाम पर लोकतंत्र पर चौतरफा हमला किया गया था, ताकि राष्ट्र को "आंतरिक और बाहरी खतरों" से बचाया जा सके। नकली राष्ट्रवाद की दुहाई देना सभी तानाशाहों के लिए एक सुविधाजनक हथियार होता है।

आपातकाल मजदूर वर्ग पर भी एक संगठित हमला था और इसने उन नियमनों और अधिकारों को खत्म कर दिया, जिन्हें पूंजीवाद के लिए बेड़ियाँ माना जाता था। 1970 के दशक की शुरुआत में भारत के पूंजीपति मजदूर वर्ग के संघर्षों और जुझारूपन से हिल गए थे। 1974 में रेलवे कर्मचारियों की ऐतिहासिक हड़ताल के बाद एकजुटता की श्रृंखलाबद्ध कार्रवाइयाँ हुईं। आपातकाल ने यूनियन बनाने, विरोध करने, हड़ताल करने के मूल अधिकार को खत्म करके मजदूर वर्ग को निहत्था कर दिया। 'न्यूयॉर्क टाइम्स' को दिए गए एक साक्षात्कार में, जे आर डी टाटा ने इसे स्पष्ट रूप से कहा : ₹आप कल्पना नहीं कर सकते कि हम यहाँ क्या-क्या झेल चुके हैं -- हड़तालें, बहिष्कार, प्रदर्शन। क्यों? ऐसे दिन भी आए, जब मैं अपने कार्यालय से बाहर सड़कों पर नहीं निकल पाया। संसदीय प्रणाली हमारी जरूरतों के अनुकूल नहीं है।₹ बिल्कुल सही -- तानाशाही शासक वर्गों के अनुकूल होती है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आपातकाल को भारत के उद्योगपतियों का व्यापक समर्थन प्राप्त था।

जिस दिन आपातकाल की घोषणा की गई, मैं कोलकाता में थी और ट्रेड यूनियनों में पूर्णकालिक काम करने के लिए दिल्ली जाने की तैयारी कर रही थी। कोलकाता में हमारे पार्टी कार्यालयों पर छापे मारे गए थे और सैकड़ों साथियों को

आपातकाल के दौरान दूरदर्शन स्टूडियो से राष्ट्र को संबोधित करती प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी। (एक्सप्रेस आर्काइव फोटो अगस्त, 1975)

गिरफ्तार किया गया था। मुख्यमंत्री सिद्धार्थ शंकर रे ने, 1971 के चुनावी जनादेश को पलटकर, जो सीपीआई (एम) के पक्ष में था, पहले ही बंगाल में कम्युनिस्टों के खिलाफ आतंक का राज शुरू कर दिया था। यह कोई संयोग नहीं था कि आपातकाल की घोषणा करने में वे श्रीमती गांधी के मुख्य सलाहकार थे। कोलकाता को एक वास्तविक पुलिस छावनी में बदल दिया गया था।

कुछ सप्ताह बाद मैं दिल्ली पहुंची और बिरला मिल के कपड़ा मजदूरों से मेरी पहली मुलाकात हुई। शाम की शिफ्ट के बाद हमें एक छोटे से दफ्तर में मिलना था। दरवाजा कसकर बंद था। ध्यान आकर्षित न हो, इसलिए एक ही लैंप जल रहा था। उस छोटे से कमरे में एक दर्जन से अधिक मजदूर ठसाठस भरे हुए थे। मुझे यूनियन के नेता ने बताया कि कोलकाता में मेरे घर पर छापा पड़ा है और मुझे अपना नाम बदलने की सलाह दी गई है। मुझे आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि पार्टी के कई नेता जो भूमिगत थे, अपनी बैठकों के लिए मेरे किराए के कमरों का इस्तेमाल करते थे। मेरे छद्म-नाम के लिए कई सुझाव आए, लेकिन तब कताई विभाग के एक मजदूर चंद्रभान, जो पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कभी पहलवान हुआ करते थे, ने दृढ़ता से कहा, ₹हम आपको रीता कहेंगे, यह नाम बरिंदा उच्चारण करने से बहुत आसान है!₹ मेरे द्वारा सुधार की कोशिश के बावजूद, वे कभी भी मेरा नाम बृंदा नहीं बोल पाए। इसलिए, आपातकाल के वर्षों में और उसके बाद कुछ और वर्षों तक, मैं कॉमरेड रीता के नाम से जानी जाती रही।

मजदूरों ने आपातकाल को शोषण का युग माना, क्योंकि उनके काम का बोझ बहुत बढ़ गया था। सालाना बोनस भी कम कर दिया गया था। मैं उस यूनियन में काम करती थी, जिसके सदस्य दिल्ली की सभी पांच बड़ी कपड़ा मिलों में थे। चूंकि हर मिल के बाहर पुलिस तैनात थी, इसलिए हम केवल मजदूरों के घरों में ही गुप्त रूप से मिल सकते थे। इन्हीं बैठकों में दिल्ली में पहली हड़ताल की योजना बनाई गई थी। मिल प्रबंधन चार करघे की व्यवस्था लागू कर रहा था और बिना किसी मुआवजे के बहुत सारे मजदूरों की छंटनी का खतरा था। हमने इसकी योजना बहुत सावधानी से बनाई। हमने पर्चे लिखे और रात भर काम करके उन्हें "साइक्लोस्टाइलिंग" मशीन से प्रिंट किया। हमने ये पर्चे बस स्टॉप या ऐसी जगहों पर रखे, जहां हमें पता था कि यहां से मजदूर गुजरेंगे। हमारे सदस्य ये पर्चे चोरी-छिपे मिल में ले जाते और मशीनों पर छोड़ देते। हमें सूचना मिली कि मजदूर उन्हें काम के दौरान पहने जाने वाले सूती बनियान की जेबों में गुप्त रूप से रख लेते थे। मैं अक्सर मजदूरों के घरों में रात बिताती थी और देर रात तक उनकी कहानियां सुनते हुए उनके परिवारों के बारे में जानकारियां हासिल करती थी और महिलाओं को संगठित करने के महत्व के बारे में सीखती थी। हड़ताल की तैयारियाँ ज़ोरों पर थीं। प्रबंधन ने 18 अप्रैल, 1976 की रात की शिफ्ट में काम का बोझ बढ़ा कर नई व्यवस्था लागू की — और मजदूर हड़ताल पर चले गए। हरीश चंद पंत पहले मज़दूर थे, जिन्होंने "हड़ताल-हड़ताल" का नारा लगाया। इसका काफ़ी बड़ा असर हुआ — ये वे गुमनाम नायक थे, जिन्होंने आपातकाल के मज़दूर विरोधी चेहरे को चुनौती दी थी।

इसी दौर में तथाकथित सौंदर्यीकरण अभियान की शुरुआत हुई थी। झुग्गी-झोपड़ियाँ तोड़ दी गईं, जिससे मिलों और कारखानों के आसपास रहने वाले हज़ारों ग़रीब परिवार विस्थापित हो गए। मैं पहले दिन वहीं थीं, जब मज़दूरों को नंदनगरी में जाने के लिए मजबूर किया गया, जो उनके कार्यस्थल से कम-से-कम 25 किलोमीटर दूर एक पुनर्वास कॉलोनी थी। गर्मियों में, यह रेगिस्तान जैसा था, न पानी, न सफ़ाई, बस हज़ारों ग़रीब धूल में लिपटे हुए थे। लोगों को स्थानांतरित करने के और भी तरीक़े थे, लेकिन सत्ता के अहंकार ने इसे अमानवीय बना दिया।

फिर नसबंदी अभियान चलाए गए। महिलाएँ मुझे अपने छोटे से घर में खींच लेतीं और डरते हुए बतातीं कि सरकारी व्यक्ति आया था और उसने उनके पतियों को नसबंदी शिविर में जाने का समय दिया है। इनमें से कई जगहों पर आतंक का माहौल था और मैंने श्रीमती गांधी और उनके बेटे संजय के खिलाफ़ सबसे कठोर शब्दों का इस्तेमाल होते सुना, जिन्हें उन ज़बरदस्ती के भयानक अभियानों के निर्माता के रूप में देखा जाता है।

हम दिल्ली की झुग्गियों और कारखानों में सरकार के खिलाफ बढ़ते गुस्से को महसूस कर सकते थे। और इस तरह, मैंने एक और सबक सीखा, जो एकजुट और दृढ़ निश्चयी लोगों की ताकत के बारे में था।

आपातकाल लगभग दो साल तक चला। भारत इससे उबर गया। लेकिन आज ऐसा लगता है कि उस समय यह चाहे कितना भी भयानक क्यों न रहा हो, आज जो हो रहा है -- हमारे संवैधानिक ढांचे को कमजोर करने और उसे निष्प्रभावी बनाने के लिए निरंतर कदम उठाना, शक्तियों का केंद्रीकरण करना, भारत के संसाधनों को शीर्ष व्यापारिक घरानों को सौंपना, भारी असमानताएँ, अल्पसंख्यक समुदायों को निशाना बनाना आदि -- उसका एक ड्रेस रिहर्सल मात्र था। आईए, आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ को भारत के लोकतंत्र और संविधान को बचाने के लिए हमारी प्रतिज्ञा को नवीकृत करने का अवसर बनाएं।

(साभार : इंडियन एक्सप्रेस। लेखिका सीपीआई(एम) पोलिट ब्यूरो की पूर्व सदस्य हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।

डॉक्टर्स डे आज

एक इंसान के जीवन की शुरुआत से लेकर उसकी सुरक्षा के लिए हर पड़ाव पर एक डॉक्टर उसके साथ होता है। बच्चा जब जन्म लेता है तो डॉक्टर ही हैं जो मां के गर्भ से शिशु को दुनिया में लाते हैं। इसके बाद शिशु को रोगों से बचाने और सेहतमंद रखने के लिए जरूरी सभी जानकारी और वैक्सीनेशन आदि भी डॉक्टर की जिम्मेदारी होती है। जैसे जैसे बच्चा बड़ा होता है, उसके शरीर में बदलाव शुरू होते हैं। इन सब बदलावों, समाज व लाइफस्टाइल का असर इंसान के स्वास्थ्य पर पड़ता है। एक डॉक्टर ही शारीरिक, मानसिक तकलीफ से ग्रसित इंसान के सभी दर्द और रोगों का निवारण करता है। इसलिए भारत में डॉक्टर को भगवान का दर्जा दिया जाता है। डॉक्टरों के इसी सेवा भाव, जीवन रक्षा के लिए किए जा रहे प्रयत्नों और उनके काम को सम्मान देने के लिए हर साल जुलाई को राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस मनाया जाता है।

कब है डॉक्टर्स डे ?

==========

हर साल 1 जुलाई डॉक्टर्स डे यानी राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के तौर पर मनाया जाता है। इस दिन सभी लोग, जिनका जीवन किसी न किसी डॉक्टर से जुड़ा हो, वह चिकित्सक को धन्यवाद करते हैं। एक शिशु के तौर पर उन्हें इस दुनिया में लाने के लिए और उन्हें सेहतमंद रखने के लिए डॉक्टर के प्रयासों के लिए उनका आभार जताया जाता है।

कब हुई डॉक्टर्स डे की शुरुआत?

==========

भारत में पहली बार राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस मनाने की शुरुआत साल 1991 से हुई थी। इस साल केंद्र सरकार ने पहली बार डॉक्टर डे मनाया था। इस दिन को मनाने की शुरुआत एक डॉक्टर की याद में हुई थी। उनका नाम डॉ बिधान चंद्र रॉय था।

कौन थे डॉ बिधान चंद्र राय

==========

दरअसल डॉ बिधान चंद्र राय बंगाल के पूर्व मुख्यमंत्री हैं। वह एक चिकित्सक भी थे, जिनका चिकित्सा के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान था। डॉक्टर बिधान चंद्र रॉय ने जादवपुर टीबी मेडिकल संस्थान की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वह भारत के उपमहाद्वीप में पहले चिकित्सा सलाहकार के तौर पर प्रसिद्ध हुए। 4 फरवरी, 1961 को डॉ बिधान चंद्र रॉय को भारत रत्न के सम्मान से भी नवाजा गया। उन्होंने मानवता की सेवा में अभूतपूर्व योगदान को मान्यता देने के लिए केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस को मनाने की शुरुआत की।

1 जुलाई को ही क्यों मनाते हैं डॉक्टर्स डे?

==========

एक जुलाई को ही डॉक्टर दिवस मनाने की एक खास वजह भी है। महान चिकित्सक डॉ बिधान चंद्र रॉय का जन्मदिन 1 जुलाई 1882 को हुआ था। इतना ही नहीं एक जुलाई 1962 को ही डॉ बिधान का निधन हुआ था। इसी वजह से उनके जन्मदिन और पुण्यतिथि के दिन पर ही उनकी याद में हर चिकित्सक को सम्मान देने के लिए एक जुलाई को राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस मनाने की घोषणा की गई।

पुरूषोतम देव के सेनापति गोविंद भंज द्वारा पुरी से क्योंझर मां तारिणी का आगमन

आज रथयात्रा में विपत्ति तारिणी ब्रत पर विशेष

कार्तिक कुमार परिच्छा -स्टेट हेड ,झारखंड

दुनियां भर के आधे से अधिक देशों में जिस भारतीय देवता का पूजन-यात्रा होता हो भला उसे कौन नहीं पहचानता होगा । रथयात्रा हो एवं छेरा पंहरा न हो भला ऐसा कभी हो सकता है क्या ? तो उस गजपति जिसने छेरा- पंहरा से अपमानित होकर कांचीं अभियान को हमारी परंपराओं के साथ जोड़ा एवं मां तारिणी को कांचीपुरम से पुरी धाम लाये इस संबंध में बहुत कुछ तथ्य ओडिया इतिहास में अटा पड़ा है। छेरा पंहरा के महान गजपतिय परम्परा धारक उस राजपरिवार का पद और कद कुछ ऐसा था - वीर 108श्री गजपति गौडेश्वर नवकोटी कर्णाटत्कलवर्गश्वराधिराय साधुशासनत्कोर्ण राउतराज अतुल बल पराक्रम संग्राम सहस्रवाहु खत्रीयकुल धुमकेतु महाराजाधिराज कपिलेश्वर राउतराय यानी- गजपति कपिलेन्द्र देव जी के वंश का राजकीय पदधारी नाम रहा है । जिनसे पुत्र से यह परंपरा इजात हुआ ।जिनकी राज्याभिशेक 1435 ई० जुन 29 को हुआ था । यह था ओडिशा मे -सूर्यवंश शासन जिनकी शासन काल 1435से 1468तक चली ,फिर उनके पुत्र गजपति पुरूषत्तम देव 1468-1540 तक शासक रहे ।हम बतादें आपको सूर्यवंशी सम्राट गजपति की प्रतिष्ठता कपिलेन्द्र देव थे एक असाधारण व्यक्तित्व के मालिक जगन्नाथ कृपा से असाधारण बन गये थे । वे सामंत राजाओं जैसे खेमुंडी गंगवंश, नंदपुर के शिला वंश, ओडाडी का मत्स राजवंश एवं पंचधार का विष्णुवर्धन चक्रवर्ती राजवंश को अपने राज्य मे विलय किया ।इसके साथ ओडिशा का सीमा विशाखापतनम तक फैल गया । गंगं राज के समय विजयनगर को रेड्डियों का प्रकोप ओडिशा के तरफ रहता था आपने इन्हे आक्रमण कर तडीपार कर डाला ।मालप्पा नामक एक ओडिया राजा को विजयनगर के राजा आगे बढाते है तब कपिलेन्द्र देव दक्षिण विजय की और अपना ध्यान मोडदेते है ।इस कार्य मे अपने बडे बेटे वीर हम्बीर देव हाथ बटाते है । जोनपुर सामरिक सेना सुलतान मोहम्मद शाह को हराकर दक्षिण आ जाती है । अब हम्बीर बडे प्रतापी राजकुमार से सम्राट हो जाते , अब ओडिशा की सीमा गोदावरी तक पहुंच जाती है । को ड्रा प ल्ली , के त व र्म न , ना गा र्जु न कोण्डा, बलमाकोण्डा, बैनुकौण्डा, अगंडी आदी हम्बीर के अधीन हो जाता है ।

1445 ई मे गोदावरी और कृष्णा नदी का सभी क्षेत्र हम्बीर के अधीन आ जाता है । हम्बीर के पुत्र कुमार कपिलेश्वर एवं तमा भूपाल 1464 मे क्षचन्द्रगिरी आक्रमण करते ,विजयी होते अब ओडिशा का सीमा कावेरी नदी तक पहुंच जाती है । दादा कपिलेन्द्र हम्बीर पुत्र यानी नाती कुमार कपिल को चन्द्रगिरी और उदयगिरी को अब राज्य परिच्छा के पद पर नियुक्त करते है(आप दक्षिण परिच्छा कहलाते) । कालान्तर मे सम्राट के ये योग्य पौत्र दक्षिण के कपिलेश्वर महापात्र के रुप मे परिचित होते है । अब हम्वीर वहमनी सुलतान को 1448मे हराते है और वाहां के सुलतान के राज्य को अपने नियंत्रणाधीन करलेते है । अब कपिलेन्द्र देव ₹कलवर्गेश्वर ₹पद भूषण धारण करते । बतादें कपिलेन्द्र देव सबसे पावर फुल हिन्दु सम्राट रहे है ओडिशा और दक्षिण के ।

यह वही समय था जब शुद्र मुनि सारला दास (असली नाम सिद्धेश्वर परिडा ,दास एवं सुद्र केवल नीचे तवके तक धार्मिक चेतना को पहुंचाने हेतु उन्होंने धारण कर लेखनी को आगे बढाया था) आपने ओडिया मे तब महाभारत की रचना की थी ।यह ओड़िया साहित्य का उत्कर्ष समय रहा । प्रात स्मरणीय सारला दास जी का महाभारत न केवल ओड़िया वल्कि भारतीय साहित्य जगत में क्या स्थान रखता है सब भली भाती जानते हैं । आप के जरिए बिलंका रामायण और चंडी पुराण भी ओडिया साहित्य मे श्रृजन हुआ, यह शाक्तेय वैष्णव परम्परा फूलने फलने का उन्नत समय रहा । महानदी समीप धवलेश्वर मंदिर एवं प्रसिद्ध कपिलेश्वर मंदिर इनका ही देन है । जिसे आज भी उत्कल को नाज है ।

अब आइये महत्वपूर्ण स्थति को जाने कपिलेन्द्र देव की मृत्यु 1466 मे कृष्णा नदी के तट पर होती है । मरने से पहले बडे बेटे हम्बी के जगह पर छोटे और पांचवे पुत्र कांची कावेरी के नायक तथा मां तारिणी को ओडिशा मे लाने वाले पुत्र पुरूषत्तम देव को ओडिशा की गद्दी सौप जाते है । विद्रोही हो उठते बड़े भाई हम्बीर और उनके पुत्र ₹परिच्छार रह चुके अब कपिलेश्वर महामात्र पर ओडिया प्रेम ,देश प्रेम, राज्य की मर्यादा को सर्वोच्च सम्मान देते हुए और पद की अहमितता देते सब कुछ छोड अपने छोटे भाई पुरूषत्तम देव को सहयोग करते है ।

ओडिशा माटी के क्षत्रिय (क्षत्रिय खंडायतों) के कुछ कुछ अन्दरूनी कहानी होती है यहां जिक्र करना उचित होगा ओड़िया ,ओड्र, कलिंग आदि नाम के शासकों के संदर्भ में ।जिसमे वे विवाहिता धर्म पत्नी के अलावे फूल आदि देकर शादीकरने की बहुपत्नी प्रथा समाज मे रखते थे ।उन्हे समाज मे जगन्नाथ के रक्षाकारी सैन्य, योद्दा सह शासक हेतु वहुपुत्र उत्पन्न करने की एक सामाजिक मनसा राजा से लेकर सेनापति, सैन्य अधिकारी परिवारों को था जो युद्ध के समय सेना मे अच्छे विश्वस्त सैनिक न होने के कारण सदैव खलता था , अशोक की कलिंग लडाई के पश्चात उत्तरवर्ती अधिकांश ओडिशा के राज पाट में यह झलकता था ।

पुरूषत्तम देव भी पिता कपिलेद्र देव की फूल विवाहिता पत्नी पार्वती देवी के गर्भजात संतान थे । दोनों भाइयों के विवाद से विजयनगर के शासक रहे शाल्य नरसिंह ओडिशा पाने की आशा मे वहमनी सुलतान के साथ हाथ मिल कर आक्रमण कर देते थे पर शाल्य नरसिंह युद्ध मे हार जाते और बंदी बनाये जाते। इसी बीच भाई पुरूषत्तम देव लुटेगये चंन्दरगिरी को पुन ले ले लेते हैं । इसके पूर्व की घटना उनकी राजकुमारी कन्या पद्मावती (रूपाम्विका) को उन्हे प्रदान करने के वजाए एक मेहतर होने एवं उनके माता फूल विवाह पर सवाल उठा कर पुरूषोत्तम देव को अपमानित करते हैं । कारण गजपतिय परम्पराओं में झाड़ू लगाकर रथयात्रा रथ को साफ करना उक्त सूर्यवंशी डायत गजपति राजा का कर्त्तव्य होता था उनके समय में । शाल्य नरसिंह इस निर्णय पर राजपरिवार में खलबली मच गयी थी । इसके पूर्व शाल्य नरसिंह के साथ दो वार पुरूषोत्तम देव के साथ युद्ध हो चुका था ,फैसला हो नही पाया था । किम्वदंती अनुसार कांची के गणेश (जगन्नाथ मंदिर के हाते मे अब भी स्थित) जिनके जानु भाग मे स्वयं काली बैठी है तथा घटगांव स्थित मां तारिणी कांचीं के इष्ट देव देवी थीं । उस तंत्र गणपति के सुढं से सेना निकलते थे ।

पुरूषोत्तम देव की जगन्नाथ आराधना बाद कारण तीसरी विजय लडाई आर पार की हुई , जिसमे स्वयं जगन्नाथ और बलभद्र पाईक सेनानी बन युद्ध भूमि में गये थे । आप बलभद्र सफेद जबकि काले घोड़े पर स्वयं जगन्नाथ महाप्रभु लड़ाकू सैनिक के रूप में गए थे । इसकी प्रमाण माणिक नामक दही वाली रही । दोनों भगवान उनसे दही खाए । जो स्वर्ण अंगुठी राजा ने जगन्नाथ को दिए थे वही स्वर्ण अंगूठी उन्होंने उन पाईक सेनानी ने ग्वालीन को देते हुए कहा कि आप राजा से इसको दिखा कर पैसे ले ले अब हमारे पास पैसे नहीं है हम सैनिक हैं ।

जब पुरुषोत्तम देव ने देखा है कि वह अंगूठी वही है जो जगन्नाथ जी की है और वह अंगूठी माणिक नामक दही वेचने वाली के पास है एवं दो सैन्य एक काला दुनिया गोरा काले सफेद घोड़े से चले हैं तो उसने उक्त मौजा को माणिक पटना को दही वाली को प्रदान की थी । और प्रभू के चरण में शरण गये जीत की श्रय जगन्नाथ को दे दी थी जैसा कि उनके पिता करते थे ।

जब लडाई में पुरूषोत्तम देव को विजयश्री मिली तब वे कांचीं तंन्त्र गणेश विग्रह और मां तारिणी को उठा लाये जो कांचीपुरम राज शाल्य नरसिंह की इष्ट देव देवी रही । हम बताते चलें कि ये वही पद्मावती है जिनको पुरूषोत्तम देव ने एक योग्य चंडाल यानी सफाईकर्मी खोजकर शादी देने हेतु फरमान सुना दी । परन्तु इस कार्य मे नियोजित चतुर मंत्री ने स्वयं पुरूषोत्तम देव को ही सर्वाधिक योग्य सफाई कर्मी बताया कारण वे भगवान जगन्नाथ के सफाईकर्मी वे स्वयं रहे ।फिर राजकुमारी पद्मा का पानी ग्रहण गजपति पुरुषोत्तम के साथ हुआ । सेनापति गोविन्द भंज को पुरूषोत्तम देव बेटा जैसा मानते थे । गोविन्द भंज को जब इस अभियान का लाभ लेने हेतु पुछा गया तब उन्होंने केवल तारिणी को ही मांग वैठे ।उनके साथ साथ तारिणी घटगांव क्योंझर आयी ।

तब से क्योंझर की देवी तारणी ही है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार सरायकेला के मां पाउडी । सरायकेला से महज 150 कि मी दुरी पर घटगांव मे है पर लोग विछिन्नांचल होने के कारण इनतक साल मे यदा कदा ही जाते । जिस प्रकार सरायकेला की राज राजेश्वरी देवी पाउडी के पूजक आज भी भूईयां है ठीक उसी प्रकार क्योझर मे भूईयां इस गढदेवी दुर्गा की पर्यायवाची तारणी को ही पूजते है ।

जगन्नाथ के साथ ये कांची से आयी बैठी, 7 वीं शदी मे रचित स्कन्द पुराण के विष्णु खंड मे पुरूषत्तम क्षेत्र को ऋषिकुल्या से स्वर्णरेखा को बीच को दर्शाया गया है ,जहां सरायकेला ,क्योझर आदि भी आ जाता है । इसमे वर्णित जब इतनी पुरानी हमारी रथयात्रा है तो यह भी सच है उन्हे उत्कल के उत्तरी भाग मे आ बैठना था सो आ बैठी , इनका स्थान परिवर्तन जरुरी था वह सो हो गया ।

हुल दिवस पर भोगनाडीह में हल्का लाठीचार्ज से झारखंड का राजनीतिक पारा ऊपर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची। झारखंड के साहिबगंज जिले में स्थित अंग्रेजों के विरूद्ध आंदोलन के महान क्रान्तिकारियों की जमीन भोगनाडीह में 'हूल दिवस' के अवसर पर आयोजित एक आधिकारिक सरकारी समारोह से पहले प्रदर्शन कर रहे कुछ ग्रामीणों को तितर-बितर करने के लिए पुलिस ने सोमवार को हल्का लाठीचार्ज कर दिया और आंसू गैस के गोले छोड़े गये । जिससे आदिवासी राजनीति में तापमान का पारा स्वत गर्म हो गया ।

साहेबगंज जिले में सिदो-कान्हू मुर्मू हूल फाउंडेशन और आतो मांझी वाशी भोगनाडीह के नेतृत्व में ग्रामीण जिला प्रशासन द्वारा 'हूल दिवस' मनाने के लिए बनाए गए एक अलग मंच को कथित तौर पर नष्ट किए जाने का विरोध कर रहे थे।

हम बातें चले कि ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण गांव भोगनाडीह आदिवासी नायकों सिदो और कान्हू मुर्मू का जन्मस्थान है, जिन्होंने 1855-56 में ब्रिटिश शासन के खिलाफ संथाल विद्रोह का नेतृत्व किया था।

एक अधिकारी ने मिडिया को बताया, ''पुलिस को हल्का लाठीचार्ज करना पड़ा और आंसू गैस के गोले छोड़ने पड़े, क्योंकि कुछ

ग्रामीणों ने धनुष और तीर से पुलिस पर हमला कर दिया था।''

साहिबगंज के पुलिस अधीक्षक अमित कुमार सिंह के अनुसार स्थति नियंत्रण बताया जाता है । एस पी के अनुसार एक समूह ने इस अवसर को अलग-अलग मनाने का प्रयास किया।

इससे पहले, सिदो-कान्हू के वंशजों ने आरोप लगाया था कि प्रशासन ने उन्हें 30 जून को साहेबगंज जिले के भोगनाडीह में हुल दिवस मनाने की अनुमति नहीं दी।

सिदो-कान्हू परिवार पृष्ठभूमि से नेतृत्व कर रहे मंडल मुर्मू ने आरोप लगाया कि प्रशासन ने कार्यक्रम की अनुमति देने से इनकार कर दिया था। सिदो-कान्हू हूल फाउंडेशन और आतो मांझी वाशी भोगनाडीह ने इस कार्यक्रम का आयोजन किया था।

एसकेएचएफ के एक सदस्य ने आरोप लगाया कि इस अवसर पर कार्यक्रम आयोजित करने के लिए उन्होंने जो मंच बनाया था, प्रशासन ने उसे क्षतिग्रस्त कर दिया था।

'हूल दिवस' ब्रिटिश शासन के खिलाफ 1855-56 में हुए संथाल विद्रोह की वर्षगांठ की स्मृति में मनाया जाता है। सिदो और कान्हू मुर्मू नामक दो भाइयों ने इस विद्रोह का नेतृत्व किया था, जिसे संथाल हूल के नाम से भी जाना जाता है।

कबीर जनकल्याण मंच सेक्टर तीन रोहिणी के पदाधिकाधिकारियों ने दिया पूरा मान सम्मान- रजत कल्सन

नई दिल्ली, 29 जून

कबीर जनकल्याण मंच, सेक्टर तीन रोहिणी, नई दिल्ली के पदाधिकारियों ने अपने कार्यालय में दलित अधिकार कार्यकर्ता एवं अधिवक्ता रजत कल्सन को आमंत्रित कर फूलों की मालाएं पहनाकर उनको पूरा मान-सम्मान दिया तथा अपनी संस्था की स्मारिका भेंट की।

इस दौरान संस्था के अध्यक्ष करतार सिंह ,जनरल सेक्रेटरी अधिवक्ता रामकुमार रंगा, जनरल सेक्रेटरी डॉक्टर अंबेडकर सभा डॉक्टर धारा सिंह , ओपी सरोहा, आर एस कटारिया, बलवान सिंह, एम एस मेहरा , नंदकिशोर , एमएस सिंगल, जेसी सिंगल, सुंदर कटारिया, आरके रोजा मौजूद रहे।

इस दौरान उनके साथ सामाजिक कार्यकर्ता अजय भाटला, विकास भाटला, राजेश दहिया, सचिन कुमार चोपड़ा व मान्यवर सरवर भांनखुड मौजूद रहे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023